RNI:RJHIN/2013/53539
Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2018-20
Licensed to Post without pre-payment
No. RJ/WR/WPP/18/2018

शिव आमंत्रण

आध्यात्म की नई उड़ान...

सशक्तिकरण एवं सामाजिक सेवाओं का दर्पण

वर्ष 07 अंक 02 हिन्दी (मासिक) मार्च 2019 सिरोही पृष्ठ 16 मूल्य ₹ 9.50

04

एक-दूसरे का सम्मान कर स्वीकार करना... 08

ट्रस्टी होकर कर्म करेंगे तो टेंशन नहीं होगा...

स्वर्ग का सृजन करती नारी शक्ति

Vandey Mataram · Spiritually Empowered Women · WOMEN'S WING

शिव आमंत्रण » आबू रोड। नारी ईश्वर की एक ऐसी कृति है जिसने वृहद रूपों में अपने बहुआयामी व्यक्तित्व और कृतित्व से प्राणी मात्र का कल्याण किया है। शक्ति बनकर जहां समाज से बुराइयों को मिटाने का बीड़ा उठाया है तो ममतामयी पालना देकर साक्षात् ईश्वर की अनुभूति कराई है। हमारे धर्मग्रंथ और वेद-शास्त्र नारी की गौरवगाथा और महिमा से भरे पड़े हैं। मनुस्मृति में तो यहां तक कहा गया है कि 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः' अर्थात् जहां नारी की पूजा होती है वहां देवता निवास करते हैं। नारी ही दुर्गा, काली, सरस्वती और लक्ष्मी का स्वरूप है।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय एक ऐसा संगठन है जो पूरे विश्व में नारी शक्ति का मिसाल है। जहां न मजहब की दीवारें हैं, न धर्म की जंजीर। यहां सिर्फ एक ही भाषा है इंसानियत, शांति-प्रेम और मानवीय मूल्यों की। सभी का एक ही मकसद है विश्व एकता और शांति। भारत की प्राचीन संस्कृति आध्यात्म और राजयोग मेडिटेशन का संदेश विश्व के कोने-कोने में पहुंचाकर भारत की विश्वगुरु की पदवी दिलाना है। साथ ही एक ऐसी पवित्र-पावन दुनिया का निर्माण करना है जहां का प्रत्येक इंसान के जीवन में दिव्य गुणों हों, मानवीय मूल्यों से ओतप्रोत और 16 कला संपूर्ण हो। इस भागीरथी कार्य में ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान पिछले 83 वर्षों से कार्य कर रहा है। इसमें 46 हजार से अधिक बहनें समर्पित रूप से अपनी सेवाएं दे रही हैं।

दुनिया के सकारात्मक बदलाव में महिलाएं आगे: नारी का विकास ही समाज का विकास है। केवल भौतिक ही नहीं बल्कि सर्वांगीण विकास की जरूरत है। महिलाओं को आन्तरिक रूप से सशक्त बनाना ही उनके शक्ति स्वरूपा स्थिति को वापस स्थापित करना है। बशर्ते नारी अपनी स्थिति को पहचाने। देश को आजाद कराने से लेकर आध्यात्मिक और पौराणिक कथाओं में भी नारी की भूमिका अग्रणी रही है। यही वजह है कि देवताओं के नाम से पूर्व नारियों का नाम पहले आता है।

ज्ञान कलश महिलाओं के सिर: परमात्मा ने वंदे मातरम् और भारत माता की परिकल्पना को साकार करते हुए विश्व बदलाव के कार्य में माताओं-बहनों को आगे किया। इसलिए संस्थान का नाम प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय पड़ा।

8 मार्च महिला सशक्तिकरण दिवस पर विशेष

ये कार्यक्रम चलाए जा रहे...

- बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ, सशक्त बनाओ अभियान
- हर वर्ष राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के सम्मेलन
- देशव्यापी कार्यशालाएं
- राष्ट्रीय अभियान
- सेमीनार- परिचर्चा
- समूह चर्चा
- ध्यान-योग और राजयोग
- पारिवारिक काउंसलिंग
- नारी सुरक्षा और सम्मान
- पर्सनॉलिटी डवलपमेंट
- नारी जागृति और उत्थान

राजयोग ने बनाया शक्ति स्वरूप: राजयोग ध्यान और आध्यात्मिक ज्ञान से जीवन में आंतरिक सशक्तिकरण का ऐसा बीज प्रस्फुटित हुआ है कि वे आज शक्ति स्वरूपा बन खुद को सशक्त बनाकर लाखों लोगों के जीवन में मानवीय मूल्यों से श्रेष्ठ बनाने में अपनी भूमिका निभा रही हैं।

शहर से गांव तक सशक्तिकरण की मुहिम: ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा शहर से लेकर गांव, स्कूल से लेकर दफ्तरों तक कार्यक्रम आयोजित कर महिलाओं को आंतरिक रूप से सशक्त बनाया जा रहा है। इसके लिए राजयोग ध्यान, आध्यात्मिक ज्ञान, स्वस्थ जीवन प्रणाली, नशामुक्ति, तनावमुक्ति, जीवन प्रबंधन, मन प्रबंधन पर कार्यक्रम चलाकर लगातार सशक्तिकरण के प्रयास किए जा रहे हैं।

महिला प्रभाग की स्थापना: महिलाओं के उत्थान तथा सशक्तिकरण के लिए सन् 1986 में महिला प्रभाग की स्थापना की गई। इसके तहत राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय कार्यक्रम चलाकर करीब सात लाख से ज्यादा महिलाओं की स्थिति बदल दी है। आज वे महिलाएं अपने मानसिक-बौद्धिक विकास के साथ आर्थिक और सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

महिलाएं बदल सकती है समाज...

महिला में ही वो ताकत है कि पूरे समाज को बदल सकती है। इसलिए नारी को शक्ति का अवतार कहा गया है। मॉ के रूप में बच्चें को जन्म से लेकर संस्कार तक सबकुछ देती है। पूरे परिवार के साथ महिलाये समाज को भी चलाने की ताकत रखती है।

» बीके डॉ सविता, कोआर्डिनेटर, महिला प्रभाग, ब्रह्माकुमारीज़, दिल्ली

विश्व बदलाव के कार्य में अग्रणी भूमिका निभा रही नारी शक्ति

परमपिता परमात्मा ने वंदे मातरम् की गाथा को चरितार्थ करते हुए सृष्टि परिवर्तन के भागीरथी कार्य में माताओं-बहनों के सिर पर ज्ञान का कलश रखा है। नारी स्वयं को राजयोग मेडिटेशन से शक्तिशाली बनाकर विश्व बदलाव के कार्य में अपनी अग्रणी भूमिका निभा रही है। संस्था इसका उदाहरण है।

» दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़, माउंट आबू

महिलाएं समाज ही नहीं पूरे विश्व को बदल सकती हैं...

महिलाओं को खुद को कभी भी कमजोर नहीं समझना चाहिए। उन्हें यह एहसास होना चाहिए कि वे एक शक्ति का स्वरूप हैं। नारी को अपनी शक्ति पहचानने की जरूरत है। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान ने पूरे विश्व में यह साबित कर दिया है कि महिलाएं केवल परिवार ही नहीं बल्कि पूरे समाज को बदल सकती हैं। आज हजारों की संख्या में बहनों ने विश्व नव निर्माण का संकल्प ले लिया है।

» किरण बेदी, उपराज्यपाल, पुंडुचेरी

नारी शक्ति को सशक्त बनाने के लिए सबको आगे आना होगा

जहां आज भारतीय नारी समाज में अपनी जगह बनाने में लगी है और फिर से खुद को स्थापित करने में लगी है, वहीं प्राचीन काल में भारतीय नारी सभी विषयों में रूचि लेती थी। सिर्फ रूचि ही नहीं वो उन विषयों की सभाओं में तर्क-वितर्क करने के लिए भाग लेती थी।

» डॉ. सिंधुताई सपकाल, अनाथों की मां, समाजसेवी

नारी सशक्तिकरण ब्रह्माकुमारीज़ से बड़ा कोई उदाहरण नहीं

आज हमारा पूरा सिस्टम ही पुरुषवादी है और उसमें महिलाओं के प्रति संवेदना का घोर अभाव है। लेकिन महिलाएं अपनी क्षमता को महसूस करें और खुद को शक्तिशाली बनाएं तो वह देवी का रूप बन सकती हैं। समाज को एक सूत्र में बांध सकती हैं। ऐसा ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान में जाने से सहज ही महसूस होता है।

» रीता बहुगुणा जोशी
महिला, परिवार व बाल कल्याण एवं टूरिज्म मंत्री, उत्तरप्रदेश सरकार

राजयोग से विश्व एक परिवार बना रहीं महिलाएं

पूरे विश्वभर में राजयोग से वसुधैव कुटुम्बकम् बनाने में महिलाओं का सबसे बड़ा योगदान है। इसमें ब्रह्माकुमारी संस्थान का कोटी-कोटी धन्यवाद। बहनें समाज को नई दिशा दे रही हैं।

» डॉ. वंदना शिवा
पर्यावरण संरक्षण कार्यकर्ता,संस्थापक,नवधान्या फाउंडेशन

मानसिक विकृतियों को दूर करने का जिम्मा महिलाओं के पास

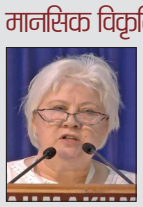

आज संसार में मानसिक विकृतियों को दूर करने में खास करके ब्रह्माकुमारी बहनें दुनिया में सबसे आगे बढ़कर हिस्सा ले रही हैं जो सबके लिए प्रेरणास्रोत बनकर नाम कमा रही हैं।

» कुल्शोवा लियूडमिला
न्यायाधीश सचिव, सेंट पीटर्सबर्ग

नए समाज की रचना की धुरी हैं महिलाएं...

महिलाओं में असीम शक्ति है। वे ही देवियों की रूप हैं। बशर्ते वे अपने आप को जानें और पहचानें। महिला प्रभाग लगातार महिलाओं के उत्थान के लिए कार्य कर रहा है। इसके तहत अब तक लाखों महिलाओं ने अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाया है। प्रभाग का लक्ष्य है कि पूरे विश्व की महिलाएं आत्मिक रूप से सशक्त, संपन्न और शक्तिशाली बनें।

» बीके चक्रधारी, अध्यक्ष, महिला प्रभाग, ब्रह्माकुमारीज़, दिल्ली

प्रेरणापुंज

दादी जानकी

मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

खुद और दूसरों के प्रति हमारी दृष्टि में दया और दुआ हो

शिव आमंत्रण आबू रोड। देह यही है लेकिन आत्मा जैसे इस देह में होते हुए भी विकारों से मुक्त है। सहज पांच विकारों को छोड़ दिया, फेंक दिया। किसी को छोड़ने में थोड़ा टाइम लगा होगा। अगर मोहवश थोड़ा भी छोड़ने में टाइम लगाया तो बाबा को भी छोड़ के चले गए या क्रोध के वश होकर बाबा को छोड़ के चले गए। क्रोध का कारण भी है देह अभिमान, मेरी बात मानी जाए, मैं जो कहूं वही हो। उसको श्रीमत को पालन करना मुश्किल लगेगा। बीच में मनमत होगी तो बड़बड़ करते रहेंगे। शान्त नहीं हो सकेंगे। ईश्वर की बात को ध्यान से सुन करके धारण नहीं कर सकेंगे। कारण है-देह अभिमान, क्योंकि देह-अभिमान गुस्सा दिलाता है। जिन्होंने 'काम' महाशत्रु को भी जीत लिया फिर भी बाबा का हाथ छोड़ देने का मतलब है क्रोध। वह भी कम नहीं है तो हमारे में जरा भी गुस्से का अंश मात्र भी न हो तब कहेंगे- हम अपना मित्र हैं। नाराज होने की अंश मात्र भी नेचर न हो। कभी भी नाराज हुए माना मूड चेंज हो गई। अपमान महसूस किया तो वह योगी कैसे बन सकता है। जो सच्चा योगी है वह दु:ख-सुख, मान-अपमान, निंदा-स्तुति, हार-जीत में समान है, यही लाइफ है।

मम्मा-बाबा को ऐसे देखा है। सब समझें यह हार में जा रहे हैं लेकिन बाबा कहते कि धीरज धरो। बाबा किसी भी बात में किसी को दोषी नहीं समझते थे। कहते थे कि इसमें इसका दोष नहीं। बस जवाब यही होता था। कितना हमको बाबा समझदार बनाता है तो हम भी ऐसे शान्त, चुप रहें अगर योगी हैं तो इससे आपे ही सब ठीक हो जाएगा लेकिन पहले तुम योगी तो बनो। योग से काम तो लो। कम से कम सुख-दु:ख, हार-जीत में समान तो बनो। जो भी सीन सामने आ रही है, तुम तो समानता में रहो। फिर जिससे योग लगाते हैं वह आपे ही करेगा।

हमारा योग किसके साथ है? जब सर्वशक्तिमान के साथ योग है तो वह शक्ति मेरे पास हो जिससे समान रहने की शक्ति मेरे अंदर आए। सामना करने का या बदला लेने का ख्याल न आए लेकिन उसमें भी समान रहूं, चिन्तन न चले। मैं शान्त रहूं तो बुद्धिवानों का बुद्धिवान बाबा आपे ही उनको ठीक करेगा, वह उसका काम है। मेरा काम क्या है? बाबा कहते हैं 'स्वधर्म' में टिको, धरत परिये धर्म न छोड़िए। यह स्वधर्म शक्ति देने वाला है। हर एक को अनुभव होगा जितना समय डीप साइलेन्स में रहो उतना समय शक्तिशाली स्थिति का अनुभव होगा। कमजोरी महसूस तब होती है जब साइलेन्स में नहीं रहते। जैसे ठीक टाइम पर हमने खाना नहीं खाया, रेस्ट नहीं की तो कमजोरी आएगी। वैसे साइलेन्स में हम न रहे, शान्ति से शक्ति अंदर जमा नहीं की तो खर्चा बहुत कमाई कम, तो क्या होगा? इसलिए मम्मा की एक बात हमको बार-बार याद आती है। शक्ति जमा करने में कितनी मेहनत करते हो, फालतू खर्चा कितने में कर लेते हो। फालतू बातों में खर्चा करके फिर उदास, कमजोर हो जाते हैं। योग में रह करके हम शान्ति की शक्ति जमा करें। कितनी मेहनत होती है कई तो कमाई करने में भी इतना टाइम नहीं देते लेकिन सारा दिन खर्चा ही खर्चा, फिर है देवाला। फिर जब कोई सामने बात आएगी तो कहेंगे बहुत मुश्किल है क्योंकि ताकत नहीं है। तो हमको बाबा ने बहुत अच्छी तरह से ज्ञान समझा दिया है लेकिन जितना हम अमल में लाते हैं उतना मन-बुद्धि को एकाग्र रखने वाले, पूज्य आत्मा बन सकते हैं। बाबा के बच्चे एक तो सिमरण योग्य हैं, दूसरे गायन योग्य हैं, तीसरे पूजनीय योग्य हैं। जिसके कदम में पदम होंगे उनकी ही पूजा होगी। जिसने अनेकों को कमाई कराई होगी। न खुद अच्छी कमाई अपने लिए की लेकिन अनेकों को कमाई कराने के निमित्त होंगे। उनकी दिल से पूजा होती है क्योंकि कमाई कराई है। अनेकों का भाग्य बनाने के निमित्त बने। न सिर्फ भाग्यवान खुद हैं लेकिन अनेकों का भाग्य बनवाया है। तो ज्ञान कहता है कि तू अपनी बुद्धि पर भी ध्यान रख, चलन पर, दृष्टि पर भी ध्यान रख। दुश्मन को भी मित्र बनाना दृष्टि से होगा। एक तरफ है असुरों का संहार लेकिन दूसरे तरफ हम देखते हैं- अजामिल जैसे पापी का भी उद्धार कर दिया। गणिकाओं-अहिल्याओं का उद्धार भी भगवान ने कर दिया, यह भी हमारे आंखों देखी बातें हैं। तो अपने आप से पूछना है कि मेरे अन्दर में मेरे लिए अपने प्रति क्या भावना है? हमारा दृष्टि में दया और दुआ हो।

क्रमश:...

खुशनुमा जीवन के लिए तन के साथ मन का नृत्य भी जरूरी...

शिव आमंत्रण आबू रोड। नृत्य एक मानवीय अभिव्यक्तियों का रसमयी प्रदर्शन कला है। यह संसार की सार्वभौमिक कला भी है। जिसका जन्म मानव जीवन के साथ हुआ है। भारतीय संस्कृति एवं धर्म की आरंभ से ही जीवन नृत्य से जुड़ा है। पत्थर के समान कठोर व दृढ़ प्रतिज्ञ मानव हृदय को भी मोम सदृश पिघलाने की शक्ति नृत्य कला में है। इसी मनमोहक कला को विश्व रंगमंच पर प्रस्तुत कर एक कलाकार ने दुनियाभर में करोड़ों का दिल जीता है। जिनका नाम है आस्था दीक्षित। भारतीय मूल की आस्था का जन्म अमेरिका के लॉस एंजिल्स में हुआ। वह महान सूफी फकीरों के कलाम (काव्य) की जीवंत प्रदर्शन कर अपनी नृत्य कलाओं से भाव-विभोर करने वाली बेहतरीन नृत्यांगना हैं।

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के आबू रोड शांतिवन परिसर में एक कार्यक्रम के दौरान शिव आमंत्रण से खास बातचीत में उन्होंने अपने जीवन से जुड़े कई पहलुओं पर बात की। साथ ही अपनी सफलता के राज बताए। उन्हीं के शब्दों में जाने अब तक का सफर...

आस्था दीक्षित एक बेहतरीन अदाकारा के साथ नृत्यांगना भी हैं जो दुनिया के कई देशो में सूफी कलाम पर आधारित नृत्य कार्यक्रम पेश कर चुकी हैं। वह अपनी अथक मेहनत और लगन का सफलतम परिणाम का श्रेय राजयोग मेडिटेशन को देती हैं।

भारत की मिट्टी से है विशेष प्यार

आस्था ने कहा मेरे मात-पिता भारतीय हैं। मैं अमेरिकन नागरिक हूं। फिर भी मुझे भारत की मिट्टी से बहुत प्यार है। मैं हमेशा भारतीय संस्कृति से जुड़ी रहती हूं। मेरी पढ़ाई यूएस में ही हुई। कंप्यूटर इंजीनियर की डिग्री ली है। लेकिन अभिनय में बचपन से ही रुचि रही है। मेरी सफलता में माता-पिता का बड़ा योगदान है। मेरे एक्टिंग और डांसिंग का बेजोड़ सम्मिश्रण मुझे दक्षिण भारतीय फिल्मों के अन्य अभिनेत्रियों से अलग करता है। चंद्रहास फिल्म की मुख्य भूमिका और पेलैना कोथालो में सहायक भूमिका निभाई थी। बता दें कि आस्था ने दो साल तक संगीत नाटक अकादमी के तहत कत्थक नृत्य के लिए कत्थक केंद्र के प्रतिनिधि के रूप में काम किया।

इन महान सूफी संतों के कलाम पर आधारित करती हैं नृत्य

आस्था बताती हैं कि मैं अब तक अमीर खुसरो, बुल्ले शाह, ख्वाजा गुलाम फरीद, ज़हीन, नज़ीर अकबराबादी, सुल्तान बहू, तुरब अली शाह जैसे हस्तियों के कलामों से दुनिया के कई देशों में तथा भारत के कई शहरों में जहान-ए-खुसरो सूफी संगीत समारोह के लिए नृत्य किया है। विश्व प्रसिद्ध सिनेमा जगत के नृत्य गुरु मुजफ्फर अली, बिरजु महाराज जैसे महान कलाकारों के साथ भी शास्त्रीय रचनाओं, गजल, कव्वाली पर आधारित कई बड़े प्रोग्राम को कोरियोग्राफ किया है। जहां कथक नृत्य के साथ दक्षिण भारतीय फिल्मों में भी पौराणिक कथा आधारित अभिनय किया है।

जहां-ए-खुसरू विश्व सूफी संगीत समारोह, हुमायूं मकबरा दिल्ली, दिलकुशा पैलेस लखनऊ, लीड एक्ट्रेस / डांसर इन म्यूजिकल प्ले बादशाह रंगीला, दिल्ली एनसीआर। शंघाई वर्ल्ड एक्सपो फेस्टिवल ऑफ इंडिया चीन, विश्व संस्कृति महोत्सव, बर्लिन जर्मनी। बौद्ध समारोह नेपाल। संगीत नाटक अकादमी द्वारा रवीन्द्र प्रणति, मेघदूत, नई दिल्ली संस्काराना, इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली आदि विश्वस्तरीय कार्यक्रमों में प्रस्तुति देना मेरे लिए सौभाग्य की बात रही है।

राष्ट्रीय व अंतराष्ट्रीय स्तर पर लहराया अपना परचम

मालती श्याम प्रमुख राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर के नृत्य समारोहों जैसे- खजुराहो नृत्य महोत्सव, कोणार्क महोत्सव, कत्थक महोत्सव, भारत महोत्सव, चीन, इंडिया शो, चेकोस्लोवाकिया के लिए अपने कोरियोग्राफिक कार्यों में शामिल रही हूं। ओमान, बहरीन, लेबनॉन, दुबई, चेकोस्लाबिया में जाकर नृत्य प्रस्तुत किया। मैंने अपनी नृत्य कंपनी बनाई है जिसको लेकर पूरे अमेरिका में दौरा किया। वर्ष 2005 में एस्टा और उनकी नृत्य कंपनी ने विश्व प्रसिद्ध पॉप गायिका क्रिस्टीना एगुइलेरा के साथ प्रदर्शन किया है।

खुद को डुबोकर ही शानदार प्रस्तुति दी जा सकती है...

आस्था की नृत्य प्रस्तुति मुगल सम्राट के दरबार की तरह होती है। इस कला में भाव-भंगिमा बहुत मायने रखता है। मेरा मानना है कि खुद को किसी भी प्रस्तुति में डुबोकर ही शानदार प्रस्तुति दी जा सकती है। दिन रात-रात साधना करना होती है।

जितना तप उतनी निखरती कला

पहले नृत्य और गायन शुद्ध भावनाओं के साथ राजाओं-महाराजाओं के दरबार में शुभ मुहूर्त पर होते थे। उनमें फूहड़ता नहीं थी। लेकिन आज जिस तरह से व्यावसायिक स्तर पर जो चीजें होने लगी हैं उसका स्वरूप बदल गया है जो चिंताजनक है। एक कलाकार की जितनी तपस्या होती है, उसकी कला उतनी ही निखरती चली जाती है। इसके लिए कोई शार्टकट तरीका नहीं है। जितनी आपकी मेहनत होगी उतना ही आप अपने मुकाम को हासिल कर सकते हैं। जब मन में शुद्धता की भावना होगी तब स्वयं तथा औरों को भी संतुष्ट कर सकेंगे।

महिलाएं अपनी मर्यादाओं के सिद्धांतों पर अडिग रहें

महिलाओं को अपनी मर्यादाओं के सिद्धांत पर अडिग रहकर व्यक्तित्व को निखारना चाहिए। महिलाओं का आध्यात्मिक सशक्तिकरण जरूरी है। परंतु आप पर निर्भर करता है कि आप अपने को किस स्तर पर रखते हैं? ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान में महिलाओं का सशक्तिकरण बेमिसाल है। इससे ही नारी एक शक्ति का रूप बन रही है।

भारत की महिमा आज पूरे विश्व में है जिसके सूफियाना अंदाज और नृत्य आज भी पुरातन सभ्यता को संजोए हुए हैं। अपनी मेहनत के दम पर आगे बढ़ें और खुद को साबित करें। अंत में आपका काम ही बोलता है। लोगों की दुआ, मां-बाप के आशीर्वाद और ईश्वर की कृपा से आज दर्शकों ने मुझे इतना प्यार, स्नेह और सम्मान दिया। आपके श्रेष्ठ कर्म ही आपको बड़ा बना देगा। मैं अपने साथ हुई हरेक परिस्थिति रूपी विघ्न को आगे बढ़ने की सीढ़ी समझ पॉजीटिव लेती हूं। राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास लंबे समय से कर रही हूं। आनंदमयी जीवन के लिए तन के नृत्य के साथ मन का भी नृत्य करती हूं, इससे आत्मबल बढ़ता है। अपनी जीवन की सफलता में राजयोग मेडिटेशन की अहम भूमिका मानती हूं।

खुद को हमेशा सकारात्मक रखती हूं

मैं हमेशा पॉजीटिव महसूस करती हूं। आपके मन की नकारात्मक चीजें आपके शरीर और मन पर बुरा प्रभाव डालती हैं। मैं अपना मन साफ रखती हूं। वर्क आउट और योगा कर अंदर से मजबूत स्वस्थिति बनाए हुए संतुलित रहती हूं। डाइट पर ध्यान देती हूं। डांस मेरा बहुत फेवरेट है तो वह भी करती रहती हूं। मैं महिला प्रधान फिल्में करना चाहती हूं। फिल्मों को लेकर बहुत चूजी हूं इसलिए बहुत सोच-समझकर अच्छी पटकथा वाली फिल्में ही करती हूं। मैं ऐसा कोई काम नहीं करना चाहती जिसे देखकर मेरे प्रशंसकों को बुरा लगे।

नासिक कारागृह बन गया ईश्वरीय सुधारगृह... छः वर्षों से ब्रह्मबेला में कैदी करते हैं मेडिटेशन का अभ्यास

नासिक जेल में छः साल से चल रही संस्कार परिवर्तन की ईश्वरीय पाठशाला

महाराष्ट्र के नाशिक जेल में ध्यान लगाते हुए कैदी।

शिव आमंत्रण » नासिक/महाराष्ट्र। यदि अपराध को जड़ से खत्म करना है तो अपराधी की मनोवृत्ति को सुधारकर उसे नेक राह पर चलने के लिए प्रेरित किया जाए। क्योंकि अपराध का मूल कारण नकारात्मक मनोवृत्ति और गलत विचारधारा है। इस नकारात्मक मनोवृति को बदलने के लिए एक सशक्त प्रयास की आवश्कता है। इसी आवश्कता को देखते हुए प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय ने भारतीय जेलों के अंदर राजयोग-मेडिटेशन सेवा केंद्र की शुरुआत की है। देश के अधिकरतर जेलों में ब्रह्माकुमारीज़ के भाई-बहनें अपने तन-मन और धन से बंदियों को सभ्य सकारात्मक बनाने की दिशा में निरंतर प्रयासरत हैं। इसी प्रयास के तहत महाराष्ट्र के नासिक केंद्रीय कारागृह में पिछले छह साल से आध्यात्मिक शिविर लगाकर बंदियों को तनाव, बदले की भावना, नकारात्मक सोच जैसी कई अपराध वृति से निजात दिलाने में सेवारत है।

वर्ष 2013 में ब्रह्माकुमारीज़ की सहयोगी संस्था राजयोग शिक्षा व शोध प्रतिष्ठान के शिक्षा प्रभाग व यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विद्यापीठ के संयुक्त तत्वावधन में नासिक मध्यवर्ती कारागृह में आध्यात्म एवं मूल्य शिक्षा की नींव रखी गई। इसमें पदविका-प्रगत पदविका व बीए मूल्य और आध्यात्मिक के पाठ्यक्रम में पहले वर्ष 37 बंदियों ने प्रवेश लिया। इसके बाद से लगातार जेल में मूल्य शिक्षा के पाठ्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं। इससे कई बंदियों का जीवन पूरी तरह से बदल गया है।

ब्रह्ममुहूर्त से हो जाती है दिनचर्या की शुरुआत

नियमित रूप से ब्रह्माकुमारीज़ के राजयोगी साधक पुरुष बंदियों के बैरक में आध्यात्मिक पाठशाला लगाते हैं तथा कई तपस्वी बहनें जेल के महिला कैदियों के बैरक में जाकर ज्ञान-योग की ईश्वरीय मुरली महावाक्य सुनाते हैं। ईश्वरीय महावाक्य सुनकर बंदी जेल के अंदर अपने को बहुत ही सौभाग्यशाली, आनंदमयी, प्रेममयी सुख पा रहे हैं। जेल में उन्हें ब्रह्माकुमारी बहनों द्वारा बदला नहीं बदल कर दिखाना है का स्लोगन रोज पढ़ाया जाता है। प्रतिदिन ब्रह्ममुहूर्त में उठ कर राजयोग का ध्यान करना इनकी दिनचर्या में शामिल हो गया है। वे लोग रोज सुबह एक नियमित स्थान पर ईश्वरीय महावाक्य यानी ज्ञान रूपी गंगा जल से रोज स्नान करते हैं। इस तरह से कैदी अपना आचरण दिन-प्रतिदिन सकारात्मक रूप से सुधारते जा रहे हैं।

ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र जैसा बन चुका है जेल का आध्यात्मिक वातावरण

जिस प्रकार ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र पर आध्यात्मिक वातावरण बना हुआ रहता है, उसी प्रकार जेल के अंदर भी खुशनुमा आध्यात्मिक वातावरण बन गया है। सेवाकेंद्र की तरह ही जेल में प्रदर्शनी पोस्टर, मेडिटेशन चित्र, अनमोल पुस्तक लाइब्रेरी, प्रेरणादायी स्लोगन आदि बैरक में सभी कैदियों के लिए मौजूद हैं। वहां कई कैदियों का जीवन परिवर्तन होता देख, उनके साथी भी प्रेरित होकर, इस पावन पुनीत कार्य में बढ़-चढ़कर हिस्सा ले रहे हैं। जेल में नए-नए कैदी भाईयों को पुराने कैदी भाई मेडिटेशन कोर्स को प्रशिक्षण उमंग-उत्साह के साथ देते हैं।

इन राजयोगी भाई-बहनों की अथक मेहनत, लगन और परिश्रम से बदली जेल की सूरत...

सेवाकेंद्र संचालिका बीके गोदावरी के मार्गदर्शन में जेल में पिछले छह साल से नियमित राजयोग मेडिटेशन का प्रशिक्षण बंदियों को दिया जा रहा है। इस कार्य में बीके सुधा, बीके विजया, बीके सुरेश सालुंके, बीके तुलसीराम, बीके विकास, बीके सुरेन्द्र, बीके मनोज, बीके महेंद्र और बीके दिलीप का विशेष सराहनीय योगदान है। ये सभी भाई-बहनें जेल में जाकर महिला-पुरुष बंदियों को कर्म सिद्धांत, सकारात्मक चिंतन आदि की कला सिखा रहे हैं।

राजयोग से जेल में इन बंदियों का बदला जीवन...

मेडिटेशन के कोर्स से चिंताएं हुईं दूर, सोचने का नजरिया बदला...

“ बंदी चिंतामन भोये ने बताया राजयोग मेडिटेशन के प्रशिक्षण के बाद मेरा सोचने का नजरिया पूरी तरह से बदल गया है। पहले दिन-रात चिंता, दुःख, तकलीफ में रहता था लेकिन अब कर्मफल का ज्ञान होने से सभी चिंताएं दूर हो गई हैं। मेरा अनुभव है यदि आप दिल से परमात्म को याद करते हैं तो कितना भी कठिन कार्य हो आसान हो जाता है।

परमात्म कृपा से मेरा भाग्योदय होने लगा...

“ बंदी रामेश्वर कनाडे ने कहा मैं कारागृह में एक गुनाहगार कैदी रूप में आया था, लेकिन मुझे यहां सत्य का ज्ञान हो गया। परमपिता परमात्मा से मिलन मनाने की राह मिल गई। अब परमात्म कृपा से मेरा भाग्योदय होने लगा है। राजयोग हमारे विचारों की सर्जरी कर उन्हें शुद्ध, पवित्र, सकारात्मक और शक्तिशाली बना देता है।

अब मेरे मन पर किसी तरह का दबाब नहीं...

“ बंदी विनायक ढवले कहा मैं विकारों में डूबकर खुद को ही भूल चुका था। मैं आज खुद को बहुत खुशकिस्मत समझता हूं कि जेल में होकर भी मुझे परमात्मा का सत्य परिचय मिला। उनसे मिलन मनाने की विधि सीखी। मैं खुद को भाग्यशाली समझता हूं। अब मेरे मन पर किसी भी विपरीत परिस्थिति का दबाव नहीं है।

जेल में जीवन को मिल रही नई दिशा...

“ नरेश बागड़ी ने कहा कि इस विचित्र ज्ञान से मेरे जीवन को एक नई दिशा मिली है। मेरा भविष्य उज्ज्वल बन रहा है। मेरे विचार सकारात्मक हो गए हैं। परमपिता शिव का कोटी-कोटी धन्यवाद करता हूं।

“ कोई भी धर्म हमें हिंसा करना, चोरी करना, व्याभिचार करना नहीं सिखाता है। धर्म कोई भी हो, वह केवल दया, शांति, क्षमा और सेवा जैसी बातें ही सिखाता है। वैसी ही बातें जेल में ब्रह्माकुमारीज़ संगठन के सदस्यों ने कर्मठता से बताई हैं। यदि आप अपने जीवन में आध्यात्मिकता के साथ योग को अपनाते हैं तो एक अच्छे इंसान के रूप में समाज में वापस आते हैं। ब्रह्माकुमारीज़ संगठन का साधुवाद।

» सतीश गायकवाड़,
वरिष्ठ जेल अधिकारी, केंद्रीय कारागार, नासिक

“ समाज में नैतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना करने के उद्देश्य को लेकर ब्रह्माकुमारीज़ अपना कार्य निरंतर कर रही है। जो कैदी मूल्यों की अवहेलना करके जेल में पहुंचे हैं उन्हीं मूल्यों की समाज में पुनर्रचना करने का कार्य वे करते हुए दिखाई दे रहे हैं। संस्था के भाई-बहन पिछले 6 साल से जेल में नियमित कैदी भाइयों को ज्ञान व राजयोग की शिक्षा दे रहे हैं। ऐसे समाज हित के कार्य को प्रोत्साहित करने के लिए मैं जेल प्रशासन का अभिनंदन करती हूं।

» बीके बसंती दीदी,
मुख्य सेवाकेंद्र प्रभारी, नासिक, महाराष्ट्र

“ जेल का नाम सुनकर ही सामान्यतः मन घबराने लगता है। परंतु जेल प्रशासन ने हम ब्रह्माकुमारी बहनों को सुधारगृह बनाने का मौका देकर धन्य कर दिया है। परमात्मा के इस अनोखे कार्य को सरल होता देख बहुत खुशी होती है कि अब सुंदर-स्वच्छ समाज बनाने में हमारे साथ अपराधी कहलाने वाले लोग भी शामिल हो चुके हैं।

» बीके शक्ति बहन, नासिक रोड, सेवाकेंद्र प्रभारी

“ जब से जेल की सेवाएं प्रारंभ हुई हैं तब से कैदियों में बहुत सकारात्मक परिवर्तन आया है। ऐसे परिवर्तन से एक दिन अवश्य ही दुनिया बदलेगी। वह भोलेनाथ अपने भोले बच्चों से जेल में अखंड सेवाएं लेता जा रहा है। यह कोई मनुष्य का काम नहीं हो सकता है। हम सब तो सिर्फ निमित्त हैं। खुद को बहुत ही सौभाग्यशाली मानता हूं कि मुझे जेल में ऐसी सेवाएं करने का मौका परमात्मा ने प्रदान किया।

» बीके विकास भाई , नासिक, महाराष्ट्र

कैदियों का अपराध से आध्यात्मिकता में आना आश्चर्यजनक बात

» बीके दिलीप बोरसे
(संपादक) साप्ताहिक नासिक परिसर मराठी

शिव आमंत्रण » नासिक रोड। 2013 में नासिक के मध्यवर्ती कारागृह में जब मुझे ईश्वरीय सेवा का मौका मिला तब से अपने को बड़ा ही खुशकिस्मत मान रहा हूं। जहां जेलों में कड़ी सुरक्षा तथा निगरानी के बीच देश के विभिन्न स्थानों से, विभिन्न संस्कार लेकर आए हुए हजारों बंदियों को उनका सकारात्मक संस्कार परिवर्तन होना, एक अनोखा और आश्चर्यजनक कार्य ही कहा जाए। समाज और सामान्य जन से अलग-थलग, परिवार जनों की याद, दुःख-तकलीफ, नकारात्मक यादों को अपने में संजोये हुए बंदियों को आध्यात्मिक कार्यकलापों से अवगत करना कोई आसान कार्य नहीं था। लेकिन ऐसे कार्यों को सरलता से देश की विभिन्न जेलों में कैद बंदियों की मानसिक और शारीरिक स्थिति में सुधार लाने के उद्देश्य से स्थानीय ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान और जेल अधिकारियों के सहयोग से मुफ्त पाठशाला चला कर सेवा करना बहुत बड़ी उपलब्धि है।

कैदियों का अपराध से आध्यात्मिक दुनिया में कदम रखना कोई आश्चर्य घटना से कम नहीं है। वैसे देखा जाए तो जेल को असल में सुधारगृह ही कहा जाता है। लेकिन इस तरह की शांति और प्रेम से सुधारने की प्रक्रिया परमात्म कृपा ही कहा जा सकता है। जिसे ब्रह्माकुमारीज़ के भाई-बहनों द्वारा परमात्मा करवा रहे हैं जो बेहद ही काबिले तारीफ है। रोज मेडिटेशन का अभ्यास करने वाले बंदियों का पूर्ण विश्वास है कि जेल से छूटते ही अपने घर में ब्रह्माकुमारीज़ की ईश्वरीय पाठशाला खोलेंगे। साथ ही समाज के हितों के लिए भी बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेंगे। हम तो प्रत्यक्ष देख रहे हैं कि रोज ज्ञान योग का अभ्यास करने वाले बंदी सदा के लिए बदले की भावना को त्याग कर समाज बदलने की शक्ति में परिवर्तन कर कलियुग को सतयुग बनाने की राह में हैं। उनका मानना है कि हम लोगों को भी परमात्मा की नई दुनिया में स्थान प्राप्त करना है।

कभी सोचा भी नहीं था कि अपराध की दुनिया से निकल जन्नत की ओर जाने वाली पढ़ाई पढ़ने को मिलेगी। उनके ऐसे वक्तव्य से लगता है कि मुझे भी समाज के लिए एक अनूठा कार्य करने का और अपने लिए पुण्य का खाता जमा करने का अवसर प्राप्त हुआ है। संपादक होने के नाते भगवान ने मुझे लौकिक और अलौकिक दोनों प्रकार की दुनिया को बदलने की जिम्मेवारी सौंप कर धन्य कर दिया है।

जेल में बंदियों को ईश्वरीय सौगात देते हुए बीके दिलीप(नासिक परिसर के संपादक) बाएं।

संपादकीय

नारी शक्ति बेमिसाल

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः। अर्थात् जहां नारी की पूजा होती है वहां देवता रमण करते हैं। यह कहावत भारत में प्रचलित है। अर्थात यूं कहें कि भारत देवी-देवताओं का राज्य था। परन्तु वहीं जहां नारी की पूजा होती है। जब यह बात कही गई होगी तब वाकई में ऐसी स्थिति रही होगी। परन्तु आज पुरुष प्रधान देश में महिलाओं के अधिकारों पर सिर्फ चर्चा करते हैं। यदि घर में एक निष्ठावान, गुणवान महिला होती है तो वह घर स्वर्ग की तरह महसूस होता है। परन्तु कई बार देखने में आता है कि हम सिर्फ नारी से सम्मान की अपेक्षा करते हैं, परन्तु नारी का सम्मान नहीं करते हैं। यदि नारी का सम्मान करते हुए उन्हें उचित स्थान दिया जाए तो निश्चित तौर पर महिला एक शक्ति की भांति समस्त मानव जाति को संस्कारवान, श्रेष्ठ और महान बनाने की क्षमता रखती है। बच्चे की पहली गुरु मां होती है जो बच्चे में संस्कार डालती है। अनेक संबन्धों में उसके कर्म पारिवारिक श्रृंखला को बनाए रखते हैं। इसलिए नारी स्वर्ग की द्वार है बशर्ते वह अपनी शक्ति को पहचाने। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान वर्तमान समय में पूरे विश्व में एक मिसाल है।

बोध कथा जीवन की सीख

अनासक्त रहने के लिए संबंधों के बीच परमात्मा रूपी झील

गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर की सशिर बंगाली में लिखी हुई अंतिम कविता है। एक पुरुष है और एक स्त्री है। दोनों का आपस में बहुत प्यार है। दोनों ही आपस में शादी करना चाहते हैं। स्त्री बहुत सुंदर-अमीर है। पुरुष गरीब है। युवक से स्त्री कहती है मैं तुमसे शादी करूंगी। वह कहता है हां हम दोनों शादी करेंगे और वह कहती है कि शादी के बाद हम दोनों अलग-अलग रहेंगे। युवक कहता है अलग-अलग ये कैसी शादी है। तो फिर शादी ही क्यों कर रहे हो? वह कहती मेरी एक ही शर्त है शादी तो मैं तुमसे ही करुंगी। परंतु शादी के बाद तुम्हारे लिए मैं एक महल बनाऊंगी। महल उधर होगा और मैं इधर रहूंगी। बीच में झील होगी। कभी मिल लिए तो मिल लिए, तुम उधर से आ रहे हो कभी मैं इधर से आ रही हूं। तुम इधर से नौका विहार, मैं उधर से नौका विहार, हाय हेलो। वो कहता है ऐसी कैसी शादी है ये? वो कहती है शादी करनी है तो ऐसी ही करूंगी। हां तुम चाहते हो किसी और से शादी करना तो कर लो। परंतु तुम्हारी याद में संपूर्ण जीवन भर अविवाहित रहूंगी और तुम्हारी याद में रहूंगी। युवक मुश्किल में पड़ जाता है। वो कहता है ये कैसी शादी है? लड़की कहती है हम दो व्यक्ति हमारा जो आपसी प्यार है। वहां अगर हम शादी करके एक जगह नजदीक आ गए तो जो प्रेम है शायद उस प्रेम में वो फ्रेशनैश नहीं रह सकता है। उस प्रेम में घृणा उत्पन्न हो सकती है। झगड़ा हो सकता है इसलिए कि यह प्रेम ऐसा ही कायम रहे। इसलिए तुम उधर हम इधर। हम भी जहां हैं भले साथ में हैं परंतु वह उधर और हम इधर। बीच में नष्टोमोहा रहने के लिए परमात्मा रूपी झील। चाहे कोई कितना भी अच्छा हो परंतु इमोशनल डिटैचमेंट, मेंटल डिटैचमेंट, बौद्धिक डिटैचमेंट होगी तो वह संबंध लंबा समय तक चलेगा। अगर अटैचमेंट आ गई तो पहले तो भगवान वहां से चला जाएगा क्योंकि मोह विकार की श्रेणी है। प्रेम दिव्यगुण है। अपने संबंधों को अनासक्त प्रेमपूर्ण करते चलना है। प्रेम क्या है और मोह क्या है इसके अंतर को जानना है। सेवा की, सबसे मिले और काम पूरा हुआ बाय-बाय। कोई लेना-देना नहीं है। चाहे घर में रहते या सेवाकेंद्र या ऑफिस, चाहे मधुबन में आते हैं, हम सभी के साथ हैं परंतु किसी के भी साथ नहीं है। बगल वाला साथ है परंतु हम अनासक्त हैं। वो इधर हम उधर बीच में झील, उस झील का नाम है बाबा। वो बीच में बाबा रूपी झील होनी चाहिए। तुम उधर हम उधर। तुम आए या हम आए, तुम मुझे आमंत्रित नहीं करोगे, मैं तुझे आमंत्रित नहीं करूंगी। नौका विहार कर रहे मिल लिए बीच में हाय हेलो ओम शांति और टाटा। हम अपने रास्ते तुम अपने रास्ते। नहीं तो यह भी एक चक्रव्यूह है जैसे पिछले बोधकथा अनुसार वह शिष्य जैसे ही उस कन्या को देखा, सोचा थोड़े समय इसके पास रह जाऊं और चक्रव्यूह में फंस गया।

संदेशः हमने जीवन को साधना के मार्ग पर, पवित्र मार्ग पर ले जाने या चलने का निर्णय लिया है तो पूरी सिद्दत, समर्पण भाव, एकाग्रता और परमात्म प्यार में मगन होकर पूरी लगन के साथ उस मार्ग पर चलना चाहिए तभी मंजिल मिलती है। रास्ते में आने वाली बाधाएं तो हमारी परीक्षा के लिए आती हैं कि हम कितने योग्य हैं।

ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़कर जीवन बना खुशहाल

गफलत को छोड़, अपने आप को पहचानें और जीवन सफल करें...

मैं अपने जीवन के अनुभव से यह कह सकता हूं कि यह मानव जीवन अमूल्य है। इसलिए इसके एक-एक मिनट को सद्कार्यों, परोपकार के कार्यों और प्रभु की आराधना, ध्यान में सफल करें। हम जो कर्म करेंगे उसका फल हमें ही भोगना पड़ता है। प्रभु पिता की याद में रहकर जो कर्म करेंगे तो उनका परिणाम भी श्रेष्ठ ही मिलेगा।

मेरी कलम से

सावंत सिंह बरगूजर
(वरिष्ठ अधिवक्ता, जिला कोर्ट)]
मध्यप्रदेश के आष्टा जिले में निवास

गलत संगत के कारण जीवन में कई बुराइयों का प्रवेश हो गया था। हर तरह की बुराई और गलत आदतें मेरे अंदर थीं। शराब का तो जैसे चोली-दामन का साथ हो गया था। बिना शराब के तो एक पल भी नहीं रह सकता था। वहीं मांसाहार को ही भोजन मान लिया था। मेरी भगवान में कोई आस्था नहीं थी। मैं पूजा-पाठ में कभी विश्वास ही नहीं करता था। लेकिन वर्ष 2009 में एक कॉन्फ्रेंस ने मेरे जीवन की दिशा बदल दी। मई-2009 में ब्रह्माकुमारी बहनों के आग्रह पर माउंट आबू में संस्थान की ओर से आयोजित होने वाली ज्यूरिस्ट कॉन्फ्रेंस में भाग लेने पहुंचा। वहां पहुंचते ही मन को असीम शांति की अनुभूति हुई। साथ ही तीन दिन तक कॉन्फ्रेंस में आध्यात्म पर अनेक ब्रह्माकुमार भाई-बहनों के वक्तव्य सुने। साथ ही रोज सुबह मेडिटेशन सेशन में भाग लिया। वहां बिताए वो तीन दिन मेरे जीवन के लिए यादगार बन गए। इस दौरान मैंने न शराब को हाथ लगाया और न किसी तरह का नशा किया। वहां मुझे महसूस हुआ कि अब तक मैं कहां इतने अमूल्य जीवन को यूं ही व्यर्थ बिता रहा था। ब्रह्माकुमारीज़ में जाकर वास्तव में हमें जीवन जीने की नई कला मिलती है। हमारे सोचने का नजरिया बदल जाता है। क्योंकि यहां सिखाया जाता है कि जैसा आप सोचोगे, वैसा बन जाओगे। माउंट आबू से घर आकर मैंने पहले ही दिन से ब्रह्माकुमारी सेवाकेंद्र पर जाकर सात दिन का निःशुल्क राजयोग कोर्स किया। कोर्स के दौरान मुझे कई जीवन रहस्यों को समझने का मौका मिला। राजयोग मेडिटेशन के अभ्यास से देखते ही देखते शराब की लत और सारी गलत आदतें छूट गईं। अब मीट देखकर ही घृणा होने लगी। मुझ में अचानक आए बदलाव को देखकर परिवार वाले और आसपास के लोग आश्चर्यचकित रह गए। साथ ही मेरे अधिवक्ता साथियों को अंचभित लगा।

सुबह 4 बजे से शुरू हो जाती है दिनचर्या

पहले मैं 8-9 बजे सोकर उठता था, लेकिन अब सुबह 4 बजे से दिनचर्या शुरू हो जाती है। उठते ही प्रभु पिता परमात्मा शिव बाबा को याद करता हूं। परमात्मा से रोज मंगल मिलन मनाता हूं। परमात्म शक्ति और राजयोग मेडिटेशन का ही कमाल है तमाम शारीरिक व्याधियों के बाद भी कभी फीलिंग ही नहीं आती है कि मैं बीमार हूं।

'योगी' तू आत्मा मेरा ही स्वरूप हैं: परमात्मा

पिछले अंक में आपने जाना चक्रव्यूह का पहला और दूसरा घेराव के बारे में जो इस प्रकार था...

खुद से बातें करना सीखें, बहुतों की स्थिति अर्जुन-पुत्र अभिमन्यु की तरह, आत्मा ज्ञान सुनते-सुनते सो जाए तो ज्ञान भी अधूरा ही धारण करेगी। कारण नहीं निवारण करो, जितनी विपरीत परिस्थितियां उतनी ही आत्मा शक्तिशाली बनेगी।

आध्यात्म की नई उड़ान...

डॉ. सचिन]
मेडिटेशन एक्सपर्ट

तीसरा चक्रव्यूह...

सी (कम्फर्ट एंड कन्वीनियंश) अर्थात् सुख-सुविधाएं: हमारा जीवन साधना का जीवन है। इसमें यदि कोई आत्मा ब्राह्मण बनने के बाद सुख-सुविधाओं और विलासिता में डूब गई है तो उसमें वह तेज नहीं आएगा। जब तक तप का बल आत्मा में नहीं भरेगा तब तक जीवन में निखार नहीं आएगा। जैसी साधना ब्रह्मा बाबा, मम्मा, दादी और दीदीयों ने की, उस साधना में वैराग्य और त्याग था। जब तक आत्मा सुख-सुविधाओं के शैय्या पर लेटी हुई है, उसे तप क्या है? सुख क्या है? उसे कभी पता नहीं चल पाता। बोधकथा अनुसार वह तीसरा शिष्य राजपुरोहित बनने का प्रस्ताव जैसे ही सुना, सैनिकों के साथ निकल भटक पड़ा। सामने तपस्या का एक जीवन था परंतु उस को राजसिक सुखों ने आकर्षित किया। सांसारिक सुख, लौकिक सुख, दैहिक सुख क्षणभंगुर है। भगवान के हम बने थे महान तपस्वी, महान योगी बनने के लिए, भोगी बनने के लिए नहीं। जो संसार में भोगी हैं उनका जीवन और हमारा जीवन अलग-अलग है। ऐसा न हो जाए कि वह और हम एक जैसे हो जाएं। हमारे संकल्प, बोल, कर्म, सबसे भिन्न हैं। हम संसार से न्यारे हैं। हम वो नहीं देख-सुन सकते हैं जो संसार के लोग सुनते-देखते हैं। हम जो दिनभर सुनते, देखते उसका भी प्रभाव हमारे जीवन पर बहुत पड़ता है। भगवान का महावाक्य है-ज्ञानी तू आत्मा मुझे प्रिय हैं परंतु जो योगी तू आत्मा है वह मेरा ही स्वरूप है। एक परमात्मा की याद का ही ऐसा सुख है जो चिरकाल तक चलता है और आत्मा में बल भरता है। इसलिए ऐसे ही अनावश्यक सुखों और सुविधाओं में जिनकी चेतना डूबी हुई है, उन्हें इस चक्रव्यूह से बाहर निकालना है। एक परमात्मा पिता को देखो और उसकी सुनो।

चौथा चक्रव्यूह...

डी (दैहिक दृष्टि या दैहिक आकर्षण): दैहिक आकर्षण संसार में विकारों, बुराइयों और बीमारियों के लिए सबसे बड़ा गुनहगार है। इतिहास में जितने युद्ध-लड़ाइयां हुईं वो इसी विषय-वासनाओं के कारण हुईं। इससे बचने के लिए ज्ञान के तीसरे नेत्र से तीसरे नेत्र को देखो। यानी आत्मा भाई-भाई को देखो, ऐसा अभ्यास करो तो कर्म इन्द्रियां शीतल हो जाएंगी। सभी आत्माएं हैं यह अभ्यास ही सबसे बड़ा अभ्यास है। जब यह अभ्यास होगा तब देह का आकर्षण नहीं होगा, कोई नहीं खींचेगा। नहीं तो देह की भूख, देह का सुख, देह तृष्णा, देह का सौंदर्य, तमोप्रधान देह जो कि भ्रम उत्पन्न करती है। जहां देह आ गया और देह का आकर्षण आ गया वहां बाकी सारी बुराई, विकार स्वतः आने लगते हैं। स्वयं को आत्म केंद्रित करना है। देह के वास्तविक स्वरूप को देखना है। देह की संभाल भी करो परंतु इसका अर्थ यह नहीं कि इसके संभाल में डूब जाओ और जो सत्य खजाने चाहिए थे उसके लिए साधना छूट जाए। इसलिए दैहिक आकर्षण के चक्रव्यूह से आत्मा को बाहर निकालना है।

पांचवा चक्रव्यूह...

ई (इलेक्ट्रॉनिक्स अर्थात् डिजिटल चक्रव्यूह): आज के साधन आग की तरह हैं जिससे रोटी भी बनाया जा सकता हैं तो घर को जलाकर नष्ट भी किया जा सकता है। विज्ञान के साधन हम सभी के लिए ही हैं। लेकिन इसका प्रयोग ज्ञान, योग, धारणा, सेवा के लिए होना चाहिए। परंतु ऐसा नहीं होता तो इन साधनों का प्रयोग व्यर्थ की बातें, सुनने, देखने के लिए ही हो रहा है। तब इसे फौरन ही बंद कर देना चाहिए। साधनों का प्रयोग केवल सेवार्थ होगा तो उतना ही सबका कल्याण होगा। नहीं तो उससे असंख्य नए-नए संबंध बनेंगे, संबंधों में आकर्षण होगा समय बर्बाद होगा और विकार आएगा। जो भी देखते और सुनते हैं उनका प्रभाव अवचेतन मन पर पड़ेगा। अगर वो निगेटिव हो तो फिर सताएगा, दुःखी करेगा, स्मृति के रूप में आएगा। चाहे टीवी, मोबाइल, व्हाट्सएप, सोशल मीडिया केवल और केवल सेवार्थ प्रयोग किया जाना चाहिए। प्रयोग किया और छोड़ दिया। उसके पीछे इतने पागल नहीं हो जाओ कि साधना ही छूट जाए। आज साधनों का निगेटिव चक्रव्यूह सारे विश्व में और ब्राह्मण परिवार में भी बहुत आत्मा को निगल गया है और निगल रहा है। आज खास करके युवाओं में इंटरनेट की लत अंतर जाल में फंसने जैसा लग चुका है। न ही सोने का समय निर्धारित है न ही उठने का। इसलिए परमात्मा ने हम सब को जल्दी सोने और जल्दी उठने का तरीका बतलाया है। रात दस मतलब बस कर सो जाना और जल्दी सवेरे उठना है। अपनी दिनचर्या बनाकर साधनों को स्विच ऑफ कर श्रेष्ठ कर्मों में व्यस्त रहना है। ब्राह्मण जीवन की यात्रा में साधनों की वजह से हम फंस ना जाएं।

छठा चक्रव्यूह...

एफ (फैमीलियरिटी, दोस्ती, लगाव का चक्रव्यूह: इस ब्राह्मण परिवार में भी लगाव का एक चक्रव्यूह जो घनिष्ठ दोस्ती के रूप में फंसाती है। यह भाई बहुत अच्छा है, यह बहन बहुत अच्छी है। एक ऐसी भी चक्रव्यूह के खतरे की यात्रा यहां से चालू होती है। जहां घनिष्ठता व फैमीलियरिटी धीरे-धीरे बढ़ने लगती है। संबंध-संपर्क बढ़ने लगता है। जो उस आत्मा को कहां से कहां से पहुंचा देती है। दोनों ही ज्ञानी, योगी आत्माएं और दोनों ही योगी आत्माओं में घनिष्ठता मैत्री, फैमीलियरिटी हो जाती है। जिस पल ज्ञान की तलवार बीच से निकल जाएगी वहां पर पतन चालू हो जाता है। इसलिए सारे संबंध से नष्टोमोहा बनना है। कोई देहधारी हमारा आधार नहीं है। इस संसार में एक परमात्मा के अतिरिक्त कोई भी हमारा सगा नहीं है। जब-जब संबंधों में लगाव होता है, वह धीरे-धीरे नीचे गिरने लगता है। इसलिए किसी देहधारी के प्यार में फंसकर सेवा नहीं करनी है।

अगले अंक में आप जानेंगे चक्रव्यूह का सातवा, आठवां, नौवां, दसवां, घेराव और उससे बाहर आने की सहज विधि।

प्रेरक विचार Spiritual THOUGHTS

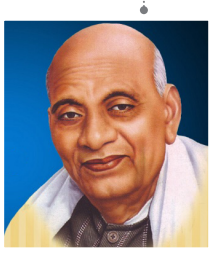

सरदार वल्लभ भाई पटेल, लौह पुरुष

इस मिट्टी में कुछ अनूठा है जो कई बाधाओं के बावजूद हमेशा महान आत्माओं का वास रहा है

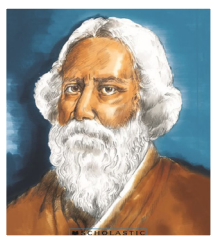

रवीन्द्रनाथ टैगोर, गुरुदेव, राष्ट्रगान के लेखक

यदि आप सभी गलतियों के लिए दरवाजे बंद कर देंगे तो सच बाहर रह जाएगा

जीवन प्रबंधन

बी.के. शिवानी
जीवन प्रबंधन विशेषज्ञ
अंतरराष्ट्रीय मोटिवेशनल स्पीकर और ब्रह्माकुमारीज की टीवी ऑइकॉन, गुरुग्राम, हरियाणा

एक-दूसरे का सम्मान कर स्वीकार करना ही अनेक समस्याओं का समाधान

अगर हम पुराने तौर-तरीके से कड़े संस्कार के वशीभूत सोचते रहें, बोलते रहें, करते रहें तो फिर खुशी, सेहत और सुंदर रिश्ता संभव नहीं हो सकता...पहले खुद को बदलने की जिम्मेदारी लें

शिव आमंत्रण ➤ माउंट आबू। मान लिया घर में दो लोग हैं, एक का संस्कार बहुत साफ-सफाई रखने का है, दूसरे का संस्कार जहां-तहां गंदगी फैलाने का। अब सफाई वाला जो है, वो चाहता है कि दूसरे को भी सफाई वाला बना दें। उस बात पर रोज घर में बहस होती है। दूसरा ऑप्शन यही है न कि अपना भी सफाई वाला संस्कार छोड़ दो, हम भी उनके जैसे हो जाएं, तो क्यों नहीं हो सकते? दो लोग हैं। एक का संस्कार है सच बोलने का, दूसरे का संस्कार झूठ बोलने का। पहला उसको रोज बदलने की कोशिश करता है कि वो सच बोलें। लेकिन पहला भी वैसा झूठा बन जाए क्या फर्क पड़ता है। क्यों नहीं बन सकते? शांति तो चाहिए न घर में? दोनों में से किसी भी ऑप्शन में बदल जाएं तो शांति हो ही जाएगी। क्यों न हम बदल जाएं उनकी ही तरह? हमें तो बड़े प्यार से लगता है कि वो गलत हैं, क्या उनको लगता है कि वो गलत हैं? उनको क्या लगता है? हम सही हैं। हमारे सही की परिभाषा अलग और उनकी अलग।

क्या ऐसा होता है? हमें जो चीजें खाने में पसंद हैं वो किसी और की पसंद अलग हो सकती है? हमें जो पहनना पसंद है, दूसरों का पहनना अलग हो सकता है? इसी तरह हमें जो सोचना पसंद है वो दूसरों का सोचना अलग हो सकता है? हमें जैसा व्यवहार पसंद है, वो दूसरे को अलग पसंद हो सकता है? दोनों में से सही कौन है? दोनों। तो क्या हमें किसी के लिए भी कोई हक है जो दूसरों के लिए कहें कि वो गलत हैं? अब ये बदल जाएं और मेरे जैसे बन जाएं। अपने हिसाब से दूसरों को बदलने का 'ये एक अंत न होने वाला खेल है' जो आत्मा की बैटरी को डिस्चार्ज करने का आसान तरीका है। क्योंकि कोई भी असंभव काम करो तो ताकत क्या होती जाएगी? गाड़ी को हैंड ब्रेक लगा दो और एक्सीलेटर साथ-साथ दबाते रहो तो गाड़ी क्या होती रहेगी? वो आगे नहीं बढ़ सकती। लेकिन दबाते जा रहे हैं तो हम संभव काम कर रहे हैं।

पहले खुद को बदलने की जिम्मेदारी लें...

दूसरों को कंट्रोल करके चेंज करने की कोशिश करना, ये असंभव है। दूसरे को प्रेरणा देना, राय देना और दूसरे को चेंज करना, सभी में बहुत अंतर है। एनर्जी में ही फर्क हो जाता है। क्योंकि दूसरे को चेंज करने में पहले ये विचार क्रियेट करने पड़ते हैं कि दूसरा गलत है। जैसे ही मैंने ये विचार क्रियेट किया कि ये गलत है तो सामने वाला हमारे से निगेटिव होकर दूर होता जाएगा। इसलिए पहले खुद को बदलने की जिम्मेदारी लें। अगर हम पुराने तौर-तरीके से कड़े संस्कार के वशीभूत सोचते, बोलते और करते रहें तो फिर खुशी, सेहत और सुंदर रिश्ता संभव नहीं हो सकता। आज ऐसा कोई घर दिखाई नहीं देता है जहां खुशियां, सेहत और सुंदर रिश्ते सब कुछ सही हों। ये कलियुग की पहचान है। यह स्थिति दिन-प्रतिदिन और बढ़ती चली जाएगी।

लोगों को स्वीकार करते जाओ तो वह आपके हो जाएंगे...

अगर किसी के लिए नकारात्मकता के साथ एक विचार क्रियेट करते हैं कि ये गलत है तो उसे कौन-सी वाइब्रेशन जाएगी? वह स्वत: ही हमारे से नकारात्मक होने लग जाएगा और मुझे भी गलत समझना शुरू कर देगा। यह अपने संबंधों में खटास और दूरी लाने का सबसे आसान तरीका है। जिससे दूर होना या दूर करना है उसे बस अनादर करते जाओ। उसी तरह किसी को अपने नजदीक लाकर उसे बदलने का सबसे आसान तरीका, उसे आदर करते जाओ, स्वीकार करते जाओ वो आपके हो जाएंगे। किसी को प्रभावित करने के लिए वो हमारे आभामंडल एनर्जी के जितने नजदीक होंगे प्रभाव उतना ज्यादा पड़ेगा। इसलिए हम किसी को रिजेक्ट कर, दूर कर, अपमान कर सकारात्मक बदलाव नहीं ला सकते हैं।

आत्मा रूपी सीडी में रिकॉर्डिंग होते अलग-अलग संस्कार...

हर एक अविनाशी आत्मा का अपना पार्ट पक्का है। आत्मा के शरीर रूपी वस्त्र की उम्र चाहे जो भी हो, शरीर के कपड़े की तरह ही उस आत्मिक शरीर रूपी वस्त्र की आयु है। आत्मा जो शरीर पहने है माना कि वो 61 साल पुरानी है और जो शर्ट पहना है वो दो साल पुरानी है। तो आत्मा की उम्र कितनी है? यह मालूम नहीं, क्योंकि आत्मा तो शाश्वत, सनातन और अविनाशी है। आत्मा तो हमेशा थी, हमेशा है और हमेशा रहेगी। 61 साल से मैं आत्मा इस शरीर में हूं। एक पार्टीकुलर देश में, एक पार्टीकूलर शहर में, एक पार्टीकूलर मोहल्ले में, पार्टीकूलर माता-पिता और पार्टीकूलर परिस्थितियां ये सब 61 साल का अनुभव था। हमारा सारा कर्म यहां आत्मा में रिकॉर्ड हो गया। मान लिया कि यहां दो लोग 61 साल के शरीर में बैठें हैं। क्या उन दो आत्माओं पर इन 61 साल के अंदर रिकॉर्डिंग बराबर हुई होगी? मान लिया दोनों दिल्ली में ही थे। एक ही मोहल्ले में थे। असल में एक ही घर में दोनों भाई थे। निश्चत रूप से दोनों आत्माओं में रिकॉर्डिंग बराबर नहीं हुई होगी। आइए अब दोनों के आत्मा रूपी सीडी को देखते हैं। उनकी जीवन यात्रा को देखते हैं ये आत्मा 61 साल पहले कहां थी? एक और शरीर में, उस शरीर में 70-80-100 साल रही होगी। उस सौ साल में जो उसकी रिकॉर्डिंग हुई और जो दूसरी आत्मा की रिकॉर्डिंग थी क्या बराबर हो सकती है? नहीं हो सकती। फिर उस शरीर से पहले-3, ऐसे कितने शरीर लिए होंगे? हर शरीर में माता-पिता अलग, वातावरण अलग, देश भी शायद अलग, माहौल अलग, परिस्थियां तो बिल्कुल अलग तो संस्कार भी अलग। इमेजिन करें कितने रिकॉर्डिंग हुए हैं। इमेजिन करें, आपके जो सबसे नजदीकी रिश्तेदार के तीन-चार सदस्य को सामने देखें। अब हर एक को देखो मेरी इतनी सारी रिकॉर्डिंग और इनकी, उनकी भी हजार साल की रिकॉर्डिंग दूसरे तीसरे चौथे की भी दो-चार, पांच हजार साल की रिकॉर्डिंग। क्या सबकी रिकॉर्डिंग बराबर हो सकती है? नहीं एकदम अलग, फिर भी हमने कहा मेरे जैसे बन जाओ, क्या यह संभव है? लेकिन वो वैसा ही व्यवहार करेंगे, जैसी उनकी जन्म-जन्म की रिकॉर्डिंग है। जैसा कि दो सीडी हैं, दोनों पर गानें अलग-अलग हैं। एक भी गाना बराबर नहीं। सारे गाने अलग और एक सीडी दूसरे को देख कर कहती है, तेरे ऊपर मेरा वाला गान क्यों नहीं? एक दूसरी सीडी को कहती है इसके गाने तो बिल्कुल गलत हैं फिर दूसरी वाली सीडी इसको देखकर कहती है नहीं तुम्हारे वाले गलत हैं। ये दोनों सीडी रूपी आत्मा जीवनभर इकट्ठी रहकर एक-दूसरे को गलत कहते रहते हैं। तुम गलत तो तुम गलत होता रहता है। अब इन दोनों सीडी को अपने जीवन के अंदर चेंज लाना है। मैं आत्मा सीडी जिसमें हजार, दो हजार, तीन हजार, पांच हजार साल की रिकॉर्डिंग है। हमने कहा ये जो मेरे पति हैं, इनको ऐसे होने चाहिए। जिनको हम समझते थे मेरा पति, मेरा बच्चा, मेरा भाई परमात्मा ने कहा वो आत्मा है। वो भी एक लंबी यात्रा करने वाली, अलग जन्म, अलग संस्कार वाली आत्मा है। तो अब वही मेरे पति, मेरे बच्चे को हमें उनकी जो वास्तविक स्वरूप आत्मा देखना होगा।

डॉ. अजय शुक्ला] बिहेवियर साइंटिस्ट
गोल्ड मेडलिस्ट इंटरनेशनल ह्यूमन राइट्स मिलेनियम अवार्ड
डायरेक्टर (स्प्रीचुअल रिसर्च स्टडी एंड ट्रेनिंग सेंटर, बंजारी, देवास, मप्र)

सद्गुणों के स्थायित्व से पुण्य आत्मा की स्थापना

जीवन का मनोविज्ञान- 10

मानव जीवन में पुण्य आत्मा के प्रति नैसर्गिक श्रद्धा का स्वरूप इतना गहरा होता है कि स्वयं को भी व्यक्ति उस ऊंचे स्थान पर उपस्थित कर देने के व्यवहार से विधिवत रूप से गुजरने लगता है। स्वयं के प्रति एक वृहद दृष्टिकोण का निर्माण सद्गुणों का इस प्रकार से दिग्दर्शन कराता है कि मनुष्य को अपने सद्गुणों की पूंजी एक खजाने के रूप में परिलक्षित होते हुए अनुभव में समाहित हो जाती है। पुण्य आत्मा के रूप में स्वयं को स्थापित करने की इच्छाशक्ति जब आत्मा की अनिवार्यता में परिवर्तित हो जाती है तब सद्गुणों के स्थायित्व के लिए कार्य करना आसान हो जाता है। अंतर्रात्मा का आंतरिक पक्ष पुण्य स्वरूप में स्थापित रहते हुए सहजता से गतिशील होता है। उस समय श्रेष्ठ संकल्प एवं श्रेष्ठ विकल्प ही एकमात्र उपाय हैं जो गुण मूलक स्थिति को बनाए रख सकते हैं। व्यक्तिगत जीवन में पुण्य की पराकाष्ठा तक पहुंचने की अवस्था आत्मा को इतना झंकृत कर देती है कि मनुष्य इस ऊंचाई को जीवन की उपलब्धि स्वरूप में स्वीकार कर लेता है।

आत्मिक शक्तियों के द्वारा महान कर्म का आरंभ

आत्म तत्व के संदर्भ में स्वयं की वास्तविक पहचान हो जाने के पश्चात् की क्रियाएं आत्मिक भाव जगत को भरपूर रखने में प्रायः सफल हो जाती हैं। लोक व्यवहार द्वारा सत्य की खोज से आत्म स्वरूप को जानने मानने और उस अनुसार चलने की गतिविधि आम जनमानस के लिए आश्चर्यचकित कर देने वाला स्वभाव माना जाता है। जीवन की संरचना में आत्मिक समृद्धि का मनोविज्ञान सदा से ही कौतूहल का विषय रहा है। जिसमें आत्म उत्थान के लिए किए जाने वाले परिदृश्य को सम्मिलित किया जाता है। स्वयं को कर्ता के भान से मुक्त रखकर कार्य संपन्नता में कारण के साथ संबंधों में तालमेल को केवल संयोग से घटित मान लेना सहयोग को केवल निमित्त का सही रूप में माध्यम स्वीकार करते हुए पुरुषार्थ करना जीवन मुक्ति का साधन है। व्यक्तिगत जीवन के परिवेश में महानता के सानिध्य से कर्म जगत को व्यावहारिक बना देना आत्मिक शक्तियों के पुनर्जागरण का प्रमाण है जो मनुष्य से आत्मा की उच्चता के लिए कार्य कराने में दक्ष होते हैं।

श्रेष्ठ संकल्पों के आभामंडल से धर्मगत आचरण

जीवन का आत्मिक जगत जब अपने स्वमान के वास्तविक स्वभाव में स्थित होकर महान कर्म की ओर अग्रसर हो जाता है तब व्यक्ति श्रेष्ठ संकल्पों एवं श्रेष्ठ विकल्पों का मालिक रहता है। स्वयं को उच्चता के भाव में सदा बनाए रखना आत्मिक गुणों एवं शक्तियों को व्यावहारिक जीवन से अवतरित करने की बेहतरीन विधि होती है। जीवन से जुड़े विभिन्न पहलू आत्मा को सदा श्रेष्ठतम परिवेश के आभामंडल से पूर्णतया सशक्त पाते हैं तो उस समय मन, बुद्धि एवं संस्कार द्वारा सहजता सरलता और विनम्रता ही प्रकट होती है। महान आत्मा द्वारा संपादित धर्मगत आचरण ईश्वरीय सत्ता से संबंध स्थापित करके पूर्ण होते हैं और सर्व आत्माओं के लिए प्रेरणा का कारक बन जाते हैं। स्वयं के मूल आत्मिक धर्म में स्थित रहकर जीवन के व्यवहार को प्रेम से गतिशील बनाना स्थाई सुख-शांति एवं आनंद का कारक होता है।

मानव जीवन की पवित्रता से देवात्मा में रूपांतरण

स्वयं को इसी जन्म में संपूर्ण पवित्र बना लेने का जतन व्यक्ति द्वारा अपने जीवन की अधिकतम ऊर्जा को लगाकर किया जाता है, जिसकी परिणति मन, बुद्धि और संस्कार के परिवर्तन से अनुभूति में आती है। जीवन का उजला पक्ष जब यह स्वीकार कर लेता है कि परमात्म शक्ति के समक्ष समर्पित होकर ही कर्म पुरुषार्थ और भाग्य का परिष्कार करना सुनिश्चित होगा तब अंतर्मन स्वयं के प्रति दया और करुणा से भर उठता है। स्वयं को ऊंचा उठाने की प्रक्रिया में चेतना के साथ चिंतन का उर्ध्वगामी बन जाना तय हो जाता है जो मनुष्य के पुण्य का निर्माण करने का श्रेष्ठ आधार होता है। जीवन में अंततः आत्मा पुण्य कर्म के रहस्य को स्वयं के व्यवहार द्वारा उद्घाटित करने लग जाती है तो उसकी महानता से धर्म क्षेत्र समृद्ध हो जाता है। स्वयं को ईमानदारी एवं पवित्रता की बड़ी पूंजी के साथ सदा रखकर ही आत्मा मनुष्य जीवन को देवात्मा में रूपांतरित कर सकती है।

रियल लाइफ

कोर्ट में ओम राधे का जवाब सुन जज ने बदला फैसला

प्रजापिता ब्रह्मा बाबा

संस्थापक
प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय

रियल लाइफ कॉलम में हम आपको प्रत्येक अंक में बताएंगे इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के मार्ग में क्या बाधाएं आईं और उनका सामना ब्रह्मा बाबा ने कितनी सरलता से किया.... जीवन को पलटने वाली अद्भुत जीवन कहानी पुस्तक से क्रमश...

"पिछले अंक में आपने जाना कि कोर्ट में जहां सारा शहर इकट्ठा हो गया था। वहीं पांच ईश्वरीय बहनों के साथ ओम राधे का जबाव जज सहित सभी लोग सुनकर चकित हो गए थे।"

ओम राधे- ('शक्ति' के रूप में निर्भय होकर बोलीं)-"जैसे आप इस कोर्ट की हतक नहीं कराना चाहते, वैसे ही मैं ईश्वर जो कि आपका और हम सबका परमपिता है, उसका अपमान अथवा उसकी हतक कैसे कर सकती हूं? गीता में भी भगवान के महावाक्य हैं कि जब धर्म की ग्लानि होती है, तब मैं आता हूं, तो फिर भगवान इस संसार में हाजिर कैसे हुए? परमात्मा तो ज्ञान स्वरूप, आनंद स्वरूप, प्रेम स्वरूप और निर्विकार हैं। परंतु आज हर एक के मन में काम, क्रोधादि विकार हैं और अशान्ति भी है। तब भला परम पवित्र परमात्मा सबमें हाजिर-नाजिर कैसे हुए?" उस समय 'ओम राधे' जी की आयु लगभग 21 वर्ष थी। निर्भीक अवस्था में उनके मुख से ऐसे विवेक-संगत उत्तर सुनकर लोग दांतों-तले अंगुलियां दबाने लगे। एंटी ओम मंडली के जो लोग वहां उपस्थित थे, स्वयं उनके मन को भी यह सच्ची बातें स्पर्श करती मालूम होती थीं। यह किसी ने नहीं सोचा था कि आज ऐसा कौतुक होगा। कानून से बंधे हुए जज साहब को तो अपनी ड्यूटी ही निभानी थी। अतः यद्यपि उनके मन्तव्य को ओम राधे के उत्तर झकझोरते हुए से मालूम होते थे। तो भी वे कमजोर सी आवाज में बोले- कुछ भी हो, कोर्ट के कायदे नियम का तो पालन करना ही होगा। तब शक्ति रूपा ओम राधे बोलीं- जज साहब मैं किसी भी हालत में झूठी कसम नहीं उठा सकती।

जज साहब ने एक बार फिर कहा- अभी भी अवसर देता हूं, सोच लीजिए। अभी भी कसम उठा लीजिए,तभी मैं गवाही के लिए प्रश्न पूछूंगा।

ओम राधे ने फिर कहा- जज साहब ,मैंने अच्छी तरह सोच लिया है। जज साहब इस सोच में पड़ गए कि अब क्या किया जाए? ओम राधे को डराने के विचार से उन्होंने पुलिस अफसर को आज्ञा दी कि वह उनके हाथों में हथकड़ी डाल दे। पुलिस कर्मचारी हथकड़ी लेकर आगे बढ़ने लगे परंतु ओम राधे निर्भय अवस्था में खड़ी रहीं।

सभी लोग बहुत ही उत्सुकता से देख रहे थे कि अब क्या होगा। अब तो शायद हथकड़ी लग जाएगी। इतने में जज साहब ने पुलिस कर्मचारियों को आज्ञा दी- ठहरो, ठहरो! पुलिस कर्मचारी जंजीर लेकर पीछे हट गए। उपस्थित जनता में से कई लोगों ने फिर ताली बजाई। आखिर जज साहब ने इस तरह की कसम उठाने का आग्रह छोड़ दिया। परमपिता परमात्मा ने कौरवों की सभा में द्रौपदी की लाज बचा ली। अब जज साहब ने दूसरे प्रश्न पूछने शुरू किए...

जज- अब यह बताइए कि आप सभी इतना रोकने पर भी घर-बार छोड़कर दादा के पास क्यों चली गईं।

ओम राधे- जज साहब क्या आपने कभी श्रीमद् भागवत पढ़ा है। जब भगवान मुरली बजाते थे तो गोपियां उस मुरली के पीछे क्यों भाग जाती थीं? तब उन पर मुकदमा क्यों नहीं चला? वह यही ज्ञान मुरली तो थी। अब भी हम उसी ज्ञान मुरली की सदा अभिलाषी रहती हैं। जज साहब जब कई पुरुष संन्यास ले लेते हैं और घर-बार छोड़ जाते हैं तो उन पर मुकदमा क्यों नहीं होता? उनसे यह प्रश्न क्यों नहीं पूछा जाता? भगवान के लिए तो नर और नारी एक-समान हैं। अब उसने हम माताओं को ज्ञान-कलश दिया है। अतः अब जब हम माताओं को पवित्रता और ईश्वरीय ज्ञान का चान्स मिला है, जब हम ज्ञान पवित्रता का जीवन प्राप्त करने के लिए ईश्वरीय सत्संग में जाती हैं तो हमसे यह प्रश्न क्यों पूछा जाता है? जज साहब, ज्ञानामृत पीने के कार्य में संबन्धियों की ओर से जो हमारे मार्ग में रूकावटें पड़ती हैं तथा वे माताओं पर जो अत्याचार करते हैं उसी के परिणामस्वरूप ही ऐसा हुआ है। इस प्रकार जज ने और भी कई प्रश्न किए। उदाहरण के तौर पर एक प्रश्न यह था...

जजः भला, दादा आप सबकी आंखों में डालने के लिए कौन-सा सुरमा या अंजन देते हैं?

ओम राधेः जज साहब क्या आपने शास्त्र पढ़े हैं?

जज- जी हां, कुछ पढ़े तो हैं।

ओम राधेः तो आपने पढ़ा होगा कि ईश्वरीय ज्ञान को अंजन भी कहा गया है। एक पद भी है- ज्ञान अंजन सद्गुरु दिया, अज्ञान-अंधेर विनाश। अब सद्गुरु परमपिता परमात्मा ज्ञान देते हैं तो आत्माओं का अज्ञान-अंधेर मिट जाता है। तो वही ज्ञान-अंजन अब हमें परमपिता परमात्मा देते हैं जो कि हम औरों को भी देते हैं।

कोर्ट में आगे क्या हुआ
अगले अंक में क्रमशः....

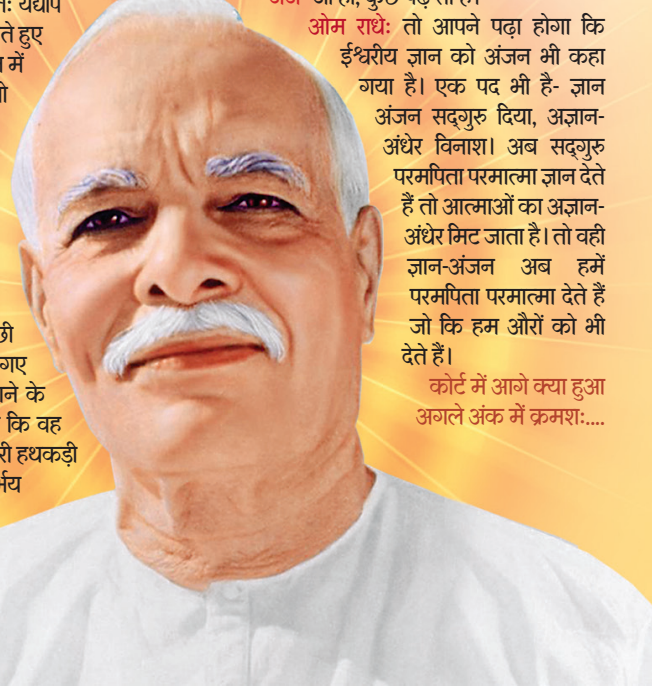

वंडर्स ऑफ BRAHMAKUMARIS

इस कॉलम में हम आपको हर बार ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान एवं भाई-बहनों को मिले पुरस्कार या सम्मान से रुबरु कराएंगे। इस बार आप जानेंगे महा नगर पालिका द्वारा बीके सुरेखा को समाज रत्न पुरस्कार एवं डॉ. सुधा को लोकमत सखी अवार्ड से नवाजा गया...

चिंचवड महानगरपालिका ने बीके सुरेखा को 'समाज रत्न पुरस्कार' से नवाजा

शिव आमंत्रण » पिपरी/चिंचवड। चिंचवड महानगरपालिका के स्थापना दिवस पर ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की पिंपरी-पुणे सेवाकेन्द्र संचालिका बीके सुरेखा को समाज रत्न पुरस्कार से विभूषित किया। यह सम्मान उन्हें क्षेत्र में सामाजिक सेवाओं के लिए प्रदान किया गया। इस मौके पर अतिथियों ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान पिछले 24 वर्षों से अपना निःस्वार्थ योगदान समाज सेवा में दे रही है। संस्थान की तरफ से महिला सशक्तिकरण, नशा उन्मूलन तथा युवा सशक्तिकरण के अनेक कार्यक्रम करती आ रही है। हम संस्थान के बहुत आभारी हैं। इस अवसर पर महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री अजीत पवार, महापौर शकुंतला धराड़े, उपमहापौर प्रभाकर वाघेरे, अंजली भागवत, चेयरमैन हीरानंद आसवानी, संजोग वाघेरे सहित अनेक गणमान्य उपस्थित थे।

लोकमत समूह ने बीके डॉ. सुधा को 'लोकमत सखी अवार्ड' से नवाजा

शिव आमंत्रण » पुणे/महाराष्ट्र। अहमदनगर की बीके डॉ. सुधा कांकरिया को राज्यस्तरीय लोकमत सखी अवॉर्ड से नवाजा गया। समारोह पुणे के वेस्टिन होटल में संपन्न हुआ। अवॉर्ड डॉ. सुधा को मेयर मुक्ता टिळक ने प्रदान किया। इस दौरान बिहार के सामाजिक कार्यकर्ता पद्मश्री सुधा वर्गीस, लोकमत एडिटोरिअल बोर्ड के चेयरमैन विजय दर्डा, अभिनेत्री रानी मुखर्जी, राष्ट्रीय महिला आयोग की अध्यक्षा रेखा शर्मा उपस्थित रहीं। यूनाइटेड नेशन्स सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स और यूनिसेफ के साथ मिलकर लोकमत समूह द्वारा नेशनल वुमंस समिट-2018 का आयोजन किया था। डॉ. सुधा ने 34 साल पहले देश में पहली बार 'बेटी बचाओ' मिशन शुरू किया। डॉ. सुधा स्वच्छ भारत अभियान की ब्रांड एंबेसेडर भी हैं। साथ ही नेत्रदान, अंधत्व निवारण आदि कार्यों के साथ समाज को सशक्त और निरोगी बनाने के लिए राजयोगा मेडिटेशन के माध्यम से कार्य कर रही है। तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम ने उन्हें 'निर्मलग्राम पुरस्कार' और तत्कालीन राष्ट्रपति प्रतिभाताई पाटील ने पुणे यूनिवर्सिटी का लाइफ टाइम अचीवमेंट अवॉर्ड प्रदान किया।

अगले अंक में आप जानेंगे संस्था की अन्य उपलब्धियों के बारे में... पढ़ते रहिए शिव आमंत्रण।

माइंड पॉवर ऑफ YOUTH

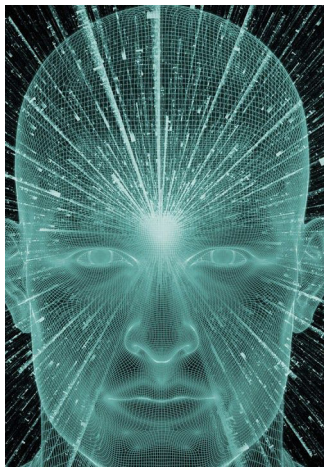

राजयोग के अभ्यास से जीवन बन गया खुशनुमा

प्रेम प्रधान
ए(एनसीटीए), सीतामढ़ी, बिहार

बचपन से आध्यात्म के प्रति रूझान होने के कारण देवी-देवताओं के मूर्ति को देखकर मन में कई प्रश्न उठते रहते थे कि मेरी तरह ही मुंह-कान दिखने वाला इसे किसने बनाया होगा। क्या मैं ऐसा कभी बन पाऊंगा? ऐसे सवालों के वजह से सत्य की खोज में कई धार्मिक संस्थानों से जुड़ा। वहां के सिद्धांतों को जानने की कोशिश की लेकिन आत्म संतुष्टि नहीं मिली। जीवन से हताश-निराश हो चुका था। हमेशा तनाव बना रहता था। नकारात्मकता की वजह से जीवन बिल्कुल अशांत हो गया था। इस दौरान ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के संपर्क में आया। यहां सात दिन के राजयोग मेडिटेशन कोर्स में मुझे जीवन से जुड़े सभी सवालों के जवाब मिल गए। राजयोग मेडिटेशन के नियमित अभ्यास से जीवन खुशनुमा बन गया। मैं युवाओं से यही अपील है कि वे एक बार अपने जीवन में राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास जरूर करें।

राजयोग का प्रयोग हर एक समस्या के लिए अचूक औषधि

दीक्षा शर्मा
ईदगाह, आगरा
उत्तरप्रदेश

स्नातक की पढ़ाई के दौरान हमारे मन में अनेक तरह के सवाल उत्पन्न होने लगे। जो मन को काफी विचलित करता रहता था। क्योंकि मेरा स्वास्थ्य ठीक नहीं होने के वजह से मन काफी दुःखी-परेशान रहता था कि मेरे साथ ही ऐसा क्यों होता है। अनावश्यक तनाव जो नकारात्मकता की ओर धकेलता जा रहा था। कुछ महीने पहले मेरी मुलाकात ब्रह्माकुमारी बहनों से हुई जो मेरे लिए परमात्म कृपा से कम नहीं था। उनकी प्रेरणा से लगातार राजयोगा अभ्यास करने लगी। फिर मेरे जीवन में एक आश्चर्यजनक परिवर्तन हुआ। अब मेरा जीवन अपार खुशियों और संतुष्टता से संपन्न हो गया है। मेरा मानना है कि राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास हर एक समस्या के लिए अचूक औषधि है।

यशवंतराव चौहान विश्वविद्यालय तथा ब्रह्माकुमारीज के शिक्षा प्रभाग का आयोजन, विद्यार्थियों को बांटी डिग्रियां...

युवाओं में मूल्यों की पढ़ाई के प्रति बढ़ रही ललक, डिग्री पाकर खिले चेहरे, बोले- अब समाज में मूल्य शिक्षा देंगे

शिव आमंत्रण ➤ आबू रोड। वर्तमान समय में भले ही युवाओं में भौतिकता के प्रति रूझान बढ़ रहा है तथा मूल्यों के प्रति उदासीनता हो रही है परन्तु समाज में बहुत से ऐसे युवा हैं जो मूल्यों के प्रति गंभीरता के साथ पढ़ाई कर डिग्रियां ले रहे हैं। ताकि वे जीवन में मूल्यों को खुद आत्मसात करें तो दूसरों को भी मूल्यों का पाठ पढ़ा सके। इसकी बानगी दिख रही है ब्रह्माकुमारीज संस्था के शिक्षा प्रभाग द्वारा कई विश्वविद्यालयों में चलाए जा रहे मूल्यों के प्रति डिग्री और डिप्लोमा पाठयक्रम में। इसमें बड़ी संख्या में युवा बढ़चढ़कर हिस्सेदारी ले रहे हैं।

दीक्षांत समारोह के अवसर पर रैली निकालते विद्यार्थी।

इसी कड़ी में ब्रह्माकुमारीज संस्था के शिक्षा प्रभाग तथा यशवन्तराव चौहान खुला विश्वविद्यालय महाराष्ट्र में चल रहे मूल्यों के लिए एमएससी की पढ़ाई में उत्तीर्ण विद्यार्थियों के लिए दीक्षांत समारोह का आयोजन किया गया। इसमें बड़ी संख्या में विद्यार्थियों ने भाग लिया। दीक्षांत के वेशभूषा में सजे युवा विद्यार्थियों ने पूरे कैम्पस में रैली निकाली। कान्फ्रेस हॉल में आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्रह्माकुमारीज संस्था के महासचिव बीके निर्वैर ने कहा कि शिक्षा वही उत्तम है जिससे जीवन में अच्छे संस्कार आएं। आजकल युवाओं में संस्कारों की कमी से कई तरह की परिस्थितियां उत्पन्न हो रही हैं। अन्नामलाई विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार डॉ. एम. रविचन्द्रन ने कहा कि हमें यह यकीन नहीं था कि मूल्यों की डिग्री में भी इतना युवाओं का उत्साह होगा। परन्तु जब से ब्रह्माकुमारीज संस्थान के शिक्षा प्रभाग से एमओयू हुआ और प्रारम्भ हुई तब से बड़ी संख्या में विद्यार्थियों ने इस विषय को चुना है। यशवन्तराव चौहान खुला विश्वविद्यालय के सामाजिक एवं मानवीय स्कूल शिक्षा के निदेशक डॉ. उमेश राजदेरकर ने कहा कि अब यह सिद्ध हो गया है कि युवाओं में भी मूल्यों की पढ़ाई के प्रति आज भी ललक बढ़ रही है। उन्होंने इसके लिए ब्रह्माकुमारीज संस्थान के प्रयासों को सराहा। कार्यक्रम में प्रभाग के अध्यक्ष बीके मृत्युंजय, कार्यक्रम के निदेशक डॉ. पांडयामणि ने भी अपने विचार व्यक्त किए और युवाओं का उत्साहवर्धन किया। समारोह में ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की कार्यक्रम प्रबंधक बीके मुन्नी, शिक्षा प्रभाग की उपाध्यक्ष बीके शीलू, डॉ. आरपी गुप्ता समेत कई लोगों ने अपने विचार व्यक्त किए। संचालन बीके सुमन ने किया।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में चलाएंगे थॉट लैब प्रोजेक्ट

शिव आमंत्रण ➤ वाराणसी। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में ब्रह्माकुमारीज़ के शिक्षा प्रभाग द्वारा थॉट लैब प्रोजेक्ट चलाया जाएगा। इसे लेकर आयुर्वेद विभाग के डीन एवं प्रोफेसर्स सहित सभी विद्यार्थियों ने खास रुचि दिखाई। इस मौके पर ब्रह्माकुमारीज़ की ओर से शिक्षा विभाग के फैकल्टी प्रो. बीके मुकेश, बीके सुप्रिया, स्थानीय सेवाकेन्द्र से बीके तापोशी, बीके विपिन तथा भारतीय थल सेना के लेफ्टिनेंट जनरल बीके विकास कुमार चौहान की मुख्य रूप से मौजूद रहे। परिचर्चा में आयुर्वेद विभाग की डीन प्रो. यामिनी भूषण त्रिपाठी ने संस्था द्वारा मानव समाज के उत्थान एवं नैतिक जागृति के लिए की जा रही निःस्वार्थ सेवाओं की प्रशंसा करते हुए कहा कि थॉट लैब से न केवल विद्यार्थी अपितु शैक्षिक जगत से संबद्ध लोगों के जीवन में अभूतपूर्व परिवर्तन आएगा। आयुर्वेद विभाग की वरिष्ठ प्रोफेसर रानी सिंह भी उपस्थित रहीं। गौरतलब है कि केंद्रीय मानव संसाधन मंत्रालय के आह्वान पर काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के आयुर्वेद विभाग द्वारा ब्रह्माकुमारी संस्था के सदस्यों को थॉट लैब प्रोजेक्ट के सन्दर्भ में विस्तार से जानकारी देने हेतु आमन्त्रित किया गया था।

थॉट लैब प्रोजेक्ट पर चर्चा के बाद काशी विश्वविद्यालय के प्रोफेसर एवं बीके भाई-बहनें।

सीख

यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विद्यापीठ में मूल्य और आध्यात्मिक शिक्षा कार्यक्रम का शुभारंभ

मूल्य-आध्यात्मिकता ही विश्व शांति की जननी, मूल्य शिक्षा से लोगों में आया सकारात्मक बदलाव: बीके मृत्युंजय

शिव आमंत्रण ➤ नाशिक। मूल्य और आध्यात्मिकता ही विश्व शांति की जननी है। विश्व में न्यूक्लीयर पॉवर के साथ एक नए और स्पष्ट परिप्रेक्ष्य की आवश्यकता है। उक्त उद्गार राजयोग शिक्षा एवं शोध प्रतिष्ठान के शिक्षा प्रभाग के अध्यक्ष बीके मृत्युंजय ने व्यक्त किए। वे यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विद्यापीठ और ब्रह्माकुमारी शिक्षा प्रभाग द्वारा दो दिवसीय अध्यापक विकास कार्यक्रम के शुभारंभ अवसर पर संबोधित कर रहे थे। उन्होंने मूल्य शिक्षा से लोगों में आए सकारात्मक बदलाव के कुछ उदाहरण भी पेश किए।

कार्यक्रम का आयोजन विश्वविद्यालय के अध्यक्ष भवन के हॉल में किया गया। विद्यापीठ से कुलसचिव डॉ. दिनेश भोंडे, विद्यार्थी सेवा विभाग के संचालक डॉ. प्रकाश अक्तरे, मानव्य विद्या शाखा के संचालक डॉ. उमेश राजदेकर, ब्रह्माकुमारीज़ मूल्य और दूरस्थ शिक्षा के संचालक बीके डॉ. पांडियामणी, शिक्षा विभाग की राष्ट्रीय समन्वयक बीके सुमन, नाशिक सेवाकेन्द्र प्रमुख बीके वासंती, बीके पूनम, नोडल सेंटर प्रमुख बीके विकास साळुंखे मुख्य रूप से उपस्थित रहे।

मानव्य विद्या शाखा के संचालक डॉ. उमेश राजदेकर ने स्वागत किया। उन्होंने कहा आज हर कार्यक्रम की सफलता को मानवीय प्रबंधन माना जाता है। अगर आध्यात्मिकता का हर पहलू हाथ में है तो यह खुशी और संतुष्टि का स्रोत होगा। यदि समाज के सभी घटक इस पाठ्यक्रम का लाभ उठाते हैं तो वे वास्तविक अर्थों में अपने उद्देश्य को प्राप्त करेंगे। डॉ. दिनेश भोंडे, रजिस्ट्रार और निगरानी नियंत्रक, बीके डॉ. पाण्डियामणी, शिक्षा विभाग की राष्ट्रीय समन्वयक बीके सुमन, डॉ. प्रकाश अक्तरे तथा नाशिक सेवाकेंद्र की संचालिका बीके वासंती ने भी अपने अपने विचार व्यक्त किए।

दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ करते अतिथि।

अलबिदा डायबिटीज

बीमारी एक, रूप अनेक

बीके डॉ. श्रीमंत साहू
ग्लोबल हॉस्पिटल, माउंट आबू

डायबिटीज (मधुमेह) के विभिन्न प्रकार:

डायबिटीज का निवारण (प्रीवेंशन), उपचार (ट्रीटमेंट) तथा इसके दुष्प्रभावों (कॉम्प्लिकेशन) से बचने के लिए हमें इस बीमारी के विभिन्न रूपों को पहचानना होगा। तो आइए हम चर्चा करते हैं कि यह बीमारी कितने प्रकार की होती है...

डायबिटीज मुख्यतः चार प्रकार की होती है।

1) टाइप वन डायबिटीज
2) टाइप टू डायबिटीज
3) गर्भा अवस्था में डायबिटीज (जेस्टेशनल) डायबिटीज
4) अन्य विशिष्ट प्रकार (अदर स्पेसिफिक टाइप अथवा सेकेंडरी/ डायबिटीज)

टाइप वन डाइबिटीज

इसे इंसुलिन डिपेंडेन्ट डायबिटीज भी कहा जाता है क्योंकि इस प्रकार की डायबिटीज से ग्रसित व्यक्ति के शरीर में इंसुलिन न के बराबर क्षरित नहीं होती है। अतः जिस किसी को भी इस प्रकार की डायबिटीज होती है, उन्हें इंसुलिन का इंजेक्शन नियमित रूप से लगाना पड़ता है। अन्यथा जीवित रहना असंभव है। आज से एक शताब्दी पहले, जब इंसुलिन प्रचलित नहीं था, जिस किसी को भी टाइप वन की डायबिटीज होती थी वह मृत्यु को प्राप्त होता ही था। परन्तु इंसुलिन के कारण आज करोड़ों मनुष्य एक सुंदर जीवन जी रहे हैं।

कुछ ज्ञानतव्य बातें

- टाइप वन की डायबिटीज मुख्यतः 5 से 6 साल की आयु से लेकर 18 से 20 साल की उम्र तक बच्चों में ही दिखाई देती है।
- आजकल बड़ी उम्र की वयस्क व्यक्तियों में भी यह दिखाई देने लगा है। वयस्क व्यक्ति में जब इस प्रकार डायबिटीज दिखाई देती है तो उसे लाडा कहा जाता है।
- इस प्रकार के डायबिटीज के मुख्य कारण को जानना संभव नहीं हुआ है। परंतु कुछ प्रतिशत मरीजों के शरीर में एक प्रतिक्रिया के कारण पैंक्रियाज ग्रंथी के बीटा सेल्स बिल्कुल ही नष्ट हो जाते हैं और शरीर से इंसुलिन का स्त्राव प्रायः नष्ट हो जाता है।

टाइप वन डायबिटिज के लक्षण

इस प्रकार की डायबिटिज अचानक ही शुरू होती है और कुछ दिनों में ही इस तरह के लक्षण दिखाई देते हैं...

- बार-बार पेशाब आना, रात में पेशाब के कारण बार-बार उठना।
- बहुत भूख लगना, छोटे बच्चे बड़ों की तरह भोजन खाने लग जाते हैं।
- बहुत प्यास लगना गला सूख जाना।
- एक-दो महीने के अंदर ही 5- 10 किलो वजन घट जाना।
- बहुत ही कमजोरी महसूस होना।

विशेष ध्यान देने योग्य बातें

- अगर किसी बच्चे के जन्म से ही या एक साल आयु के अंदर ही डायबिटीज होती है तो यह टाइप वन नहीं होती है। लेकिन यह किसी न किसी अन्तः स्त्रावी ग्रंथियों के खराबी के कारण होती है। इसलिए इन बच्चों की पूरी तरह जांच और उपचार करने के लिए एंडोक्राइनोलेजिस्ट से तुरंत परामर्श कर लेना चाहिए।
- टाइप वन डायबिटीज में किसी प्रकार की गोली, कैप्सूल वा चूर्ण आदि बिल्कुल ही काम नहीं करता है। परंतु नुकसानकारक भी है। इसलिए अन्य किसी भी प्रकार का उपचार करने की कोशिश करने के बजाय शीघ्र ही किसी विशेषज्ञ के परामर्श से इंसुलिन का प्रारंभ करना चाहिए।
- बच्चों में शुगर की मात्रा नियंत्रित न रहने से बहुत ही कम उम्र में अनेक प्रकार के दुष्प्रभाव होते हैं। जैसे-अंधा हो जाना, किडनी फेल हो जाना, आदि लक्षण दिखाई देते हैं और फिर अकाले मृत्यु हो जाती है। इसलिए संतुलित आहार, नियमित व्यायाम तथा इंसुलिन द्वारा रक्त सर्करा को कंट्रोल में रखना बहुत ही आवश्यक है।
- इस प्रकार के ग्रसित रोगियों में बार-बार हाइपोग्लाइसिमिया अर्थात कम ब्लड शुगर होना भी दिखाई देता है। रक्त में चीनी की मात्रा कम हो जाना अत्यंत दुःखद है और जानलेवा भी हो सकता है। इसका विस्तृत वर्णन हम आगे करेंगे।

क्रमशः...

यहां करें संपर्क
बीके जगजीत मो. 9413464808, डॉ. सविता सोनर मो. 9461604139
पेशेंट रिलेशन ऑफिस, ग्लोबल हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर, माउंट आबू, जिला- सिरोही, राजस्थान,

पुलिस बैंड की धुन पर दादीजी ने शिव ध्वजारोहण कर सुख-शांति भवन लोकसेवा को किया समर्पित

सुख-शांति-प्रेम मेरे तीन बच्चे, दिलवाला पतिः दादी जानकी

- योग से कराई शांति की अनुभूति, भोपाल की स्वच्छता की सराहना की और सुंदर शहर बताया
- सांसद आलोक संजर बोले- ये भावों से भरा केंद्र

शिव आमंत्रण ➤ भोपाल। पुलिस बैंड की धुन और पुष्पवर्षा के बीच शिव ध्वजारोहण कर दादी जानकी ने ब्रह्माकुमारीज संस्थान के नीलबड़ स्थित सुख-शांति भवन को लोकसेवा, जनकल्याण और जनहित के लिए समर्पित किया। इस दौरान माउंट आबू से पधारे गायकों की मधुर स्वर लहरियों ने गृह प्रवेश समारोह में चार चांद लगा दिए।

तीन दिवसीय आध्यात्मिक सत्संग महोत्सव में 103 वर्षीय दादी जानकी ने ओम शांति के महामंत्र के साथ संबोधन की शुरुआत की। दादी ने कहा कि यदि हम कारोबार करते हुए ट्रस्टी होकर रहेंगे और कर्म करेंगे तो टेंशन नहीं होगा। हर आत्मा में पांच गुण हैं- पवित्रता, सत्यता, नम्रता, मधुरता और शांति। इन गुणों को जानकर जीवन चरित्र में उतारना होगा। मन-वचन-कर्म की पवित्रता ब्रह्माकुमारीज का पहला धर्म है। कारोबार में सत्यता और व्यवहार में नम्रता-मधुरता हो। जीवन में शांति सबसे महत्वपूर्ण है। हम सभी आत्माएं पहले शांतिधाम फिर सुखधाम में जाती हैं। कर्म करते हुए हमारी अवस्था विदेही (आत्मा को देह से अलग होने की अनुभूति) और न्यारेपन की हो।

योग से कराई शांति की अनुभूति..

दादी जानकी ने लंदन का अनुभव सुनाते हुए कहा कि जब मैं पहली बार लंदन पहुंची तो वहां के लोगों ने पूछा कि आपके बच्चे नहीं हैं? तो मैंने कहा कि मेरे दो बच्चे हैं- सुख और शांति। मेरा पति दिलवाला (परमपिता शिव परमात्मा) है। अब मेरा तीसरा बच्चा है प्रेम। जीवन का आधार सुख-शांति और प्रेम है। दिलाराम के साथ अच्छे से जीवन जीने का वरदान मिला है। इस भवन से भोपालवासियों की सुख-शांति की तलाश पूरी हो सकेगी। दादी ने सभी को योग से शांति की अनुभूति कराई।

ये भावों से भरा केंद्र हैः सांसद

सांसद आलोक संजर ने कहा ये भावों से भरा केंद्र है। ये भवन प्रेम की ईंटें और श्रद्धा की रेत-सीमेंट से बना है और इसे सुख-शांति के पावन जल से सींचा गया है। चारों दिशाओं में सुख-शांति हो यही मेरी कामना। डीजी पुलिस मैथिलीशरण गुप्ता ने कहा कि आज चारों ओर नकारात्मकता का माहौल है। धन की अंधी दौड़ चल रही है। ऐसे में ब्रह्माकुमारीज संस्थान समाज में सकारात्मक वातावरण का निर्माण कर रही है। ऐसे प्रयासों से ही धरती पर स्वर्ग आएगा।

सभी को कराई प्रतिज्ञा...

भोपाल जोन की जोनल निदेशिका बीके अवधेश ने सभी को प्रतिज्ञा कराई कि दादी के बताए मार्गपर सदा चलते रहेंगे। नीलबड़ सुख-शांति भवन की निदेशिका बीके नीता ने कहा कि परमात्मा का ही कमाल है जो इतना विशाल भवन तैयार हो गया और जरा सी भी चिंता नहीं हुई। माउंट आबू से पधारे शांतिवन के प्रबंधक बीके भूपाल ने भी सभा को संबोधित किया। संचालन चंडीगढ़ से पधारीं बीके अनीता ने किया। माउंट आबू से पधारे सौ से अधिक बालब्रह्मचारी साधकों का साफा और चुनरी से सम्मान किया गया। छतरपुर से पधारीं छोटी बालिकाओं ने बहुत ही सुंदर मयूर नृत्य की प्रस्तुति दी। महोत्सव में प्रदेशभर से भाई-बहन शामिल हुए।

स्वच्छ भारत मिशन की ब्रांड एंबेसेडर ने भोपाल की स्वच्छता को सराहा....

महोत्सव के बाद शहर भ्रमण पर निकलीं स्वच्छ भारत मिशन की ब्रांड एंबेसेडर दादी जानकी ने भोपाल में साफ-सफाई देखकर यहां की स्वच्छता की जमकर सराहना की। दादी ने कहा कि भोपाल बहुत ही सुंदर शहर है। यहां के प्रशासन ने स्वच्छता पर विशेष काम किया है। इसके साथ ही दादी ने बड़े तालाब में बोटिंग भी की।

ब्रह्माकुमारी बहनों ने 'एंजिल वॉक' से दिया शांति व पवित्रता का पैगाम

शिव आमंत्रण ➤ बोरीवली/मुंबई। वीर सावरकर गार्डन में एंजिल वॉक का आयोजन हुआ। इस दौरान सांसद गोपाल चिन्नया शेट्टी, बोरीवली सबजोन प्रभारी बीके दिव्यप्रभा ने शिव ध्वज दिखाकर एंजिल वॉक का शुभारम्भ किया। इस वॉक की विशेषता यह थी कि इसमें ब्रह्माकुमारी बहनें एंजिल की वेश-भूषा में सड़कों पर चलीं। इसके माध्यम से बहनों ने लोगों को जीवन में शांति और पवित्रता अपनाने का संदेश दिया। वॉक में 12 बालब्रह्मचारी बहनें स्लोगन बोर्ड लेकर शामिल हुईं। ये कार्यक्रम प्रत्येक मास के तीसरे रविवार को इंटरनेशनल मेडिटेशन डे पर आयोजित था। इसके पूर्व प्रातःकाल 1200 राजयोगियों ने राजयोग का अभ्यास कर वायुमण्डल में शांति व पवित्रता के प्रकम्पन फैलाए। इसमें बोरीवली, कांदिवली, मलाड समेत मुंबई की कई वरिष्ठ बहनें शामिल हुईं। कार्यक्रम की सराहना करते हुए सांसद से इसे बेहतर कदम बताया।

दादी जानकी ने ग्लोबल पीस विलेज का भूमिपूजन कर त्याग का फल बताया

शिव आमंत्रण ➤ बीदर/कर्नाटक। ब्रह्माकुमारी संस्थान की मुख्य प्रशासिका 103 वर्षीय दादी जानकी उम्र के इस पड़ाव पर भी निरंतर विश्वभर में भ्रमण कर लोगों में आध्यात्म की अलख जगा रही हैं। इसी क्रम में कर्नाटक के बीदर जिले के यदलापुर ग्राम के पास रामपुरे कॉलोनी में ग्लोबल पीस विलेज की नींव रखी। दादी ने भूमिपूजन के साथ अपनी शुभकामनाएं व्यक्त कीं। इस मौके पर सहकार एवं जिला प्रभारी मंत्री बंडेप्पा खाशंपुर, खेल मंत्री रहीम खान, महाराष्ट्र जोन की निदेशिका बीके संतोष सहित प्रदेशभर से पधारे बीके भाई-बहनें मौजूद रहे। कार्यक्रम में संबोधित करते हुए दादी जानकी ने बनने जा रहे ग्लोबल पीस विलेज को त्याग का फल बताया। महाराष्ट्र से आई नन्हीं बालिका की प्रस्तुति ने सभी का दिल जीत लिया। श्रीश्री 108 शिवानंद शिवाचार्य स्वामी तथा श्री ज्योतिर्मयानंद स्वामी, हैदराबाद से आई शांति सरोवर की निदेशिका बीके कुलदीप, महाराष्ट्र के सोलापुर सेवाकेन्द्र की प्रभारी बीके सोमप्रभा ने भी विचार व्यक्त किए। शिलान्यास पर कर्नाटक के मुख्यमंत्री एचडी कुमार स्वामी ने शुभकामना संदेश भेजा, जिसे गुलबर्गा की वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके विजया ने पढ़कर सुनाया। कार्यक्रम में सेवाकेन्द्र प्रभारी बीके सुमंगला सहित कई बीके सदस्य एवं प्रतिष्ठित लोग विराजमान थे।

कटक में राष्ट्रीय न्यायविद सम्मेलन का आयोजन, सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश बोले...

आत्म-ज्ञान होने से आदमी खुद को गलतियों से बचा सकता है: रॉय

शिव आमंत्रण » कटक/ओडिशा। प्रभु समर्पण भवन में नाऊ दे सेल्फ फॉर हैप्पी लिविंग विषय पर राष्ट्रीय न्यायविद सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसमें बतौर मुख्य अतिथि के रूप में आए सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश अमिताभ रॉय ने कहा कि अपने आपको जानने से आत्म-ज्ञान का बोध होगा और स्वयं का सम्पूर्ण ज्ञान होने से व्यक्ति कई गलतियों से अपने आपको बचा सकता है।

न्यायाधीश रॉय ने कहा सॉक्रेटीस के अनुसार आप अपने को नहीं पहचान पाएंगे तो आपका जीवन तर्कविहीन है। बुद्धि दो भाग में विभाजित है। उसमें कॉन्शस और अनकॉन्शस शामिल है। फिर बुद्धि में दो कम्पार्टमेंट्स हैं। वह है रेशनल और इमोशनल बहुत ही कम होता है। इमोशनल ज्यादा होने के कारण अहंकार या घमंड हमें खा

जाता है। इस पर काबू पाने के लिए सत्संग, साधना और सदाचार यह तीन रास्ते हैं। सर्वोच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति एके पटनायक ने कहा स्प्रीचुअल ट्रेनिंग आपको नहीं है तो आपके जीवन की उलझन कभी भी समाप्त नहीं हो पाएगी। इस दौरान सम्मेलन में आए हुए अतिथियों ने अपने विचार रखें।

बीके पुष्पा ने आत्मा के सत्य स्वरूप से लेकर आत्मा के कर्तव्यों का पूरा यथार्थ ज्ञान सभी को दिया। बीके रश्मि ने संबंधित विषय पर अपने विचार रखे। सम्मेलन में न्यायमूर्ति डॉ. डीपी चौधरी, ओड़िशा हाईकोर्ट बार एसोसिएशन के अध्यक्ष एवं वरिष्ठ अधिवक्ता श्रीकांत कुमार, प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका बीके लता, बीके अस्मिता सहित शहरभर से आए बड़ी संख्या में न्याय क्षेत्र से जुड़े अधिकारी-कर्मचारी व अधिवक्तागण मौजूद रहे।

नेहरू स्टेडियम सभागार में आयोजित कार्यक्रम में दिल्ली विस अध्यक्ष गोयल बोले...

ब्रह्माकुमारीज़ के केंद्र शांति के स्तंभ हैं

शिव आमंत्रण » नई दिल्ली। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा नेहरू स्टेडियम सभागार में सर्व धर्म स्नेह मिलन समारोह संस्था के साकार संस्थापक प्रजापिता ब्रह्मा के 50वीं पुण्यतिथि पर आयोजित किया गया। विश्व शांति, सद्भावना एवं भाईचारा विषय पर आयोजित इस समारोह में ब्रह्मा बाबा द्वारा वैश्विक शांति, अमन और एकता हेतु किए गए त्याग, तप और सेवाओं को याद किया गया।

दिल्ली विधानसभा अध्यक्ष राम निवास गोयल ने कहा लोग शरीर पर तो ध्यान देते हैं लेकिन इस शरीर को चलाने वाली आत्मा को बलिष्ठ और विकसित करने पर ध्यान नहीं देते। आत्मा को शक्तिशाली करने का उपाय राजयोग ध्यान ही है। लोगों को आज शांति की बहुत जरूरत है। ब्रह्माकुमारी संस्था के सभी केंद्र शांति के स्तंभ हैं, जहां राजयोग द्वारा परमात्मा से शांति प्राप्त की जा सकती है। ब्रह्माकुमारी संस्था के

मुख्य प्रवक्ता बीके बृजमोहन ने कहा निराकार परमात्मा ब्रह्मा तन में अवतरित होकर सत्य ज्ञान एवं राजयोग द्वारा नई दुनिया की स्थापना कर रहे हैं। मुख्य संयोजिका बीके आशा ने कहा ब्रह्माकुमारी एकमात्र ऐसी संस्था है जिससे जुड़े लाखों भाई-बहन व्यसन मुक्त हैं। संस्था से जुड़े लोग बड़ी संख्या में ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं। यहां श्रेष्ठ चरित्र और सत्य कर्मों के द्वारा अपने जीवन तथा समाज को बेहतर बनाने की शिक्षा प्रदान की जाती है। जीबी पंत अस्पताल के कार्डियोलॉजिस्ट डॉ. मोहित गुप्ता ने कहा कि परमपिता परमात्मा के ज्ञान की बूंद से जीवन मोती जैसा बन जाता है। राजयोग से अपनी विनाशकारी प्रवृतियों का परिवर्तन कर विश्व नव निर्माण के कार्य में लगे हुए हैं। महिला प्रभाग की अध्यक्षा बीके चक्रधारी, बहाई धर्म के प्रतिनिधि डॉ. एके मर्चेंट, यहूदी धर्म के प्रतिनिधि ईआई मालेकर, सीबीआई के पूर्व निदेशक पद्मश्री डीआर कार्तिकेयन ने भी अपने विचार व्यक्त किए। करोल बाग सेवाकेन्द्र की निदेशिका बीके पुष्पा ने राजयोग का अभ्यास कराया।

शुभारंभ

वैश्विक ज्ञानोदय द्वारा स्वर्णिम युग कार्यक्रम आयोजित

यहां सत्य ज्ञान से मानवता की सेवा की जा रही है, जो प्रशंसनीय है: राज्यपाल

शिव आमंत्रण » देहरादून। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की मुख्य शाखा सुभाष नगर में वैश्विक ज्ञानोदय द्वारा स्वर्णिम युग' कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें मुख्य अतिथि उत्तराखंड की राज्यपाल बेबी रानी मौर्य ने कहा कि विश्व बंधुत्व और सद्भाव बढ़ाने के लिए बहनों और भाइयों का संबोधन बहुत ही सराहनीय है। गीता ज्ञान भी मानवता का पाठ पढ़ाता है। ईश्वर एक है। जीवन जीने का तरीका है धर्म। ब्रह्माकुमारी संस्थान की वैश्विक उपस्थिति इस सत्य ज्ञान के द्वारा मानवता और सत्धर्म की जो सेवा कर रहा है, वह प्रशंसनीय है।

उत्तराखण्ड की राज्यपाल बेबी रानी मौर्य को ईश्वरीय सौगात प्रदान करते हुए बीके बहनें।

संस्कृत विद्वान डॉ. बुद्धदेव शर्मा ने कहा ज्ञान वह जो चरित्र का निर्माण करे, जो शाश्वत और सार्वभौमिक हो, जो आत्मा को सुख दे। तन रथ है, बुद्धि सारथी है। इन्द्रियों के सुख में सच्चा सुख नहीं है। सिद्धांत के साथ वैसा आचरण भी चाहिए। ऐसे ज्ञान, अभ्यास और वैराग्य से स्वर्णिम संसार आ सकता है।

बीके मंजू ने कहा कि यदि हम ये सोच रखें कि हम जैसे कर्म करेंगे, वैसा फल हमें अवश्य मिलेगा तो भी हमारे कर्म श्रेष्ठ बनेंगे। जीवन में परिवर्तन आ जाएगा और यह संसार स्वर्णिम बन जाएगा।

बीके मीना ने कहा अपनी सच्ची पहचान है आत्म स्वरूप। आत्मा के सत्य ज्ञान, गुण, शक्तियों को जानकर ही हम स्व परिवर्तन कर सकते हैं। राजयोग अभ्यास से हमारे अंदर स्व परिवर्तन की दृढ़ता और शक्ति आती है। बीके आरती ने राजयोग अभ्यास से गहन शांति की अनुभूति कराई। ईश्वर के सत्यम्-शिवम्-सुंदरम् की महिमा याद दिलाते हुये कहा कि सत्य ज्ञान, सत्य ईश्वर से ही मिलता है जो आत्मा, परमात्मा और सृष्टि की सही पहचान देते हैं। जिससे ही विश्व में स्वर्णिम युग आता है। मंच संचालन बीके सुशील ने किया। सभा में बड़ी संख्या में भाई-बहन मौजूद थे। बाद में अतिथियों का सम्मान किया गया।

संसाधन और सुविधाओं से विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास संभव नहीं : शिक्षा मंत्री

- जीवन में खुशी बढ़ाने पर दिल्ली में हुआ सम्मेलन

शिव आमंत्रण » नई दिल्ली। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के स्थानीय हरीनगर राजयोग केंद्र पर मूल्य शिक्षा और आध्यात्म द्वारा खुशी बढ़ाने विषय पर शिक्षकों के लिए सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसमें दिल्ली के शिक्षा मंत्री मनीष सिसौदिया ने कहा सिर्फ बाहरी संसाधन और सुविधाओं के आधार से विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास संभव नहीं है। शिक्षा का मूल उद्देश्य है, बच्चों को सिर्फ नौकरी नहीं, बल्कि उन्हें इमोशनल और प्रोफेशनल आत्म निर्भर शीलता प्रदान करना। जिससे वे सुख से जीएं और दूसरों को सुख से जीने की विद्या, विवेक, कला और क्षमता हासिल करें।

उन्होंने कहा आज राजनीति में भी ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जो देश में शांति, सद्भावना, एकता, अखंडता और विकास को कायम रखने के लिए राजनेताओं को प्रेरित करे। मूल्य शिक्षा एक अलग विषय के रूप में न पढ़ाकर, स्कूल और कॉलेजों के सारे पाठ्यक्रम में समावेश किया जाए और इस दिशा में ब्रह्माकुमारीज़ जैसे आध्यात्मिक संगठनों की सेवा अवश्य लेंगे। मुख्य वक्ता एआईसीटीई अध्यक्ष प्रो. अनिल सहस्त्रबुद्धे ने कहा स्टूडेंट्स को सभी सब्जेक्ट को मजबूरी से नहीं बल्कि खुशी-खुशी से और रुचि से पढ़ने की परिवारिक और एकेडेमिक माहौल निर्माण करने की जरूरत है। ये तभी संभव होगा जब आध्यात्म और मूल्यों को सभी विद्यार्थियों के जीवन में जोड़ दिया जाए। क्योंकि खुशी अंदर से उभरती है, बाह्य वातावरण से नहीं।

दिल्ली व रूस के राजयोग केंद्रों की निदेशिका राजयोगिनी बीके चक्रधारी ने कहा कि आज मनुष्य में सेवा भाव समाप्त होकर संकीर्ण स्वार्थ भाव हावी हो गया है। इसका कारण भोगवादी और भौतिकवादी अपसंस्कृति का प्रहार है। जिसको हम भारतीय आध्यात्मिक ज्ञान, सनातन मूल्यों, राजयोग ध्यान, सकारात्मक, स्वस्थ एवं सादा जीवन शैली से फिर से जीवित कर सकते हैं और मूल्य शिक्षा द्वारा बच्चों का भविष्य उज्जवल बना सकते हैं।

केंद्रीय मानव संसाधन मंत्रालय के उच्च शिक्षा विभाग के अधिकारी डॉ. शकीला शमशु ने कहा आज की शिक्षा प्रणाली हमें सच्चा इंसान बनाने के लिए समर्थ और सम्पूर्ण नहीं है। मानवीय मूल्यों को शिक्षा क्षेत्र और जीवन में जोड़ने की आवश्यकता है। मूल्यों को केवल चिंतन या बोलने तक न सीमित रख कर दैनिक जीवन आचरण और व्यवहार में नेता, शिक्षक, अभिभावक, बच्चों और नागरिकों सभी को उतारना चाहिए।

शिक्षा प्रभाग के अध्यक्ष बीके मृत्युंजय ने कहा कि शिक्षा का उद्देश्य केवल सूचना, रोजगार अथवा मनोरंजन नहीं है, इसके साथ एम्पावरमेंट और एनलाइटनमेंट भी है, जिससे मानव जीवन और समाज स्वस्थ, समृद्ध और प्रगतिशील हो। आध्यात्मिक शिक्षा से आत्म विश्वास, आत्म बल, आत्म सम्मान और आत्म निर्भरशीलता बच्चों से लेकर बूढ़ों तक सबमें आती है और गरीबी, भ्रष्टाचार, अपराध और अन्य सभी समस्याओं से निपटने के लिए हर एक को बुद्धि, विवेक और समर्थी प्राप्त होती है। जामिया मिलिया इस्लामिया यूनिवर्सिटी के रजिस्ट्रार एपी सिद्दीकी ने कहा आज के माहौल में अड़ोस-पड़ोस, अभिभावक, शिक्षक आदि कहीं से भी बच्चों को मानवीय मूल्यों की प्राप्ति नहीं हो रही है। इसका कारण यही के हम मूल्यों को जीवन में धारण नहीं किये है। आचरण से शिक्षा देना ज्यादा कारगर है। कार्यक्रम की मुख्य संजोजिका बीके शुक्ला ने कहा सही शिक्षा जीवन के विपरीत परिस्थितियों में संतुलनता सिखाती है। सत्यता, प्रेम, दया, करुणा और सन्तुष्टता रूपी जीवन उपयोगी मूल्यों का समावेश कराता है।

नीमच में विशाल आध्यात्मिक सत्संग आयोजित, राजयोग मेडिटेशन के बताए टिप्स...

जैसी सोच, वैसा स्वभाव और कर्म होता है: बीके सूरज

शिव आमंत्रण ➤ नीमच/मप्र। सेवाकेंद्र पर विशाल आध्यात्मिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें नीमच, जावद, मनासा, रामपुर, जीरन, मल्हारगढ़ एवं पिपलिया मण्डी आदि स्थानों से 2 हजार से अधिक बीके सदस्यों ने भाग लिया।

इसमें माउंट आबू से पधारे वरिष्ठ राजयोग शिक्षक बीके सूरज ने कहा कि हमारी सोच चाहे वो नकारात्मक हो या सकारात्मक वही हमारा स्वरूप बन जाता है। यदि हम प्रभु प्रार्थना में सर्वशक्तिवान या परमात्मा के आगे भी अपने जीवन की दुखद घटनाएं या नसीब का रोना रोते हैं तो अपना स्वरूप अधिक विकृत होता जाता है। इसलिए राजयोग ध्यान पद्धति यह सिखाती है कि मेडिटेशन आत्मा परमात्मा के सुखद मिलन का स्वरूप है।

नगर के विशिष्ट एवं मध्यम वर्ग के आमंत्रित लोगों के लिए सर्वसमस्याओं के समाधान की टिप्स बताने के लिए समाधान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें मुख्य वक्ता बीके

सूरज ने वर्तमान समय को परिवर्तन का युग बताते हुए जीवन में श्रेष्ठ बदलाव लाने की अपील की। विधायक दिलीप सिंह परिहार, सीआरपीएफ के आईजी बीएस चौहान ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

इस अवसर पर स्पेशल जिला जज आरपी शर्मा, इण्डियन मेडिकल एसोसिएशन के अध्यक्ष डॉ. अशोक जैन, नीमच में संस्था के एरिया निदेशक बीके सुरेन्द्र, सबजोन प्रभारी बीके सविता, जिला एवं सत्र न्यायाधीश अखिलेश कुमार, चीफ ज्यूडिशियल मजिस्ट्रेट दिनेश देवड़ा, मनासा के नवनिर्वाचित विधायक अनिरुद्ध माधव मारु, नगर पंचायत के अध्यक्ष यशवन्त सोनी समेत कई विशिष्ट लोगों ने शिरकत की।

ब्रह्माकुमारी केंद्र आने पर परिवार की भासना आती है: मंत्री जयसिंह

शिव आमंत्रण ➤ कोरबा/छग। विश्व सद्भावना भवन में सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इसमें छत्तीसगढ़ के राजस्व एवं आपदा प्रबंधन कैबिनेट मंत्री जयसिंह अग्रवाल ने कहा कि प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के परिसर में आने से परिवार और अपनेपन की भासना आती है। मेरा अनुभव है कि जब जब मैं यहां आया हूं, मुझे विशेष शक्ति और मनोबल की प्राप्ति हुई है। कोरबा के बिल्डर महेश भावनानी ने कहा कि जयसिंह अग्रवाल नामक ऊर्जावान व्यक्तित्व को जनता ने तीसरी बार चुनकर लाया है। इसका कारण वह जनता के बारे में अपने कर्तव्यों के

प्रति सदा ही सजग हैं।

डॉ. केसी देवनाथ ने कहा कि आपदा प्रबंधन का उत्तरदायित्व जो आपको मिला है इस पर समय-समय पर आम जनता को सजग और जाग्रत करना पड़ेगा। इसके लिए प्रशिक्षण और परिचर्चा की आवश्यकता है।

बीके रुक्मिणी ने शाल और पगड़ी पहनाकर तथा श्रीफल भेंट कर उनका सम्मान किया। उन्होने कहा कि जयसिंह अग्रवाल का हमेशा ही सहयोग मिलता रहता है। जब आप साड़ा अध्यक्ष थे तो आपने इस मार्ग को ब्रह्माकुमारी मार्ग से नामांकन किया था और इसके पश्चात् अनेक प्रकार से संस्था के कार्य के प्रति आप सहयोगी बने हैं।

वर्कशॉप

'एग्जाम को बनाएं एंजॉयमेंट' विषय पर मोटिवेशनल वर्कशॉप आयोजित

किताबों को बनाएं अपना दोस्त: बीके जानकी

खिमलासा के पांच स्कूलों में सात वर्कशॉप लेकर 2200 बच्चों को किया मोटिवेट, परीक्षा में अच्छे नंबर लाने के बताए गुर

शिव आमंत्रण ➤ खिमलासा/बीना (मप्र)। परीक्षा के डर को दूर कर विद्यार्थियों को मोटिवेट करने के लिए ब्रह्माकुमारीज़ के खिमलासा सेवाकेंद्र द्वारा नगर के अलग-अलग पांच स्कूलों में सात वर्कशॉप आयोजित की गईं। इनके माध्यम से करीब 2200 बच्चों को परीक्षा के भय से मुक्ति, स्मरण शक्ति बढ़ाने, आत्म विश्वास जागृत करने के गुर सिखाए गए। साथ ही विद्यार्थियों को एग्जॉम को एंजॉयमेंट बनाने की विधि भी बताई। इस दौरान 8वीं से 12वीं के छात्र-छात्राओं को मोटिवेट किया गया।

वर्कशॉप में सेवाकेंद्र संचालिका बीके जानकी ने कहा कि किताबें हमें जीवन में सदा आगे बढ़ातीं हैं। आज आप जिस कक्षा में हो और अगले वर्ष जिस कक्षा में होंगे उसमें किताबों का सबसे बड़ा योगदान है। किताबें ही हमारे सुनहरे भविष्य का निर्माण करतीं हैं और हर पल हमारा मार्गदर्शन करती हैं इसलिए किताबों को आज से ही अपना दोस्त बना लें। क्योंकि हम दोस्त की बातों को कभी भूलते नहीं हैं और सदा उनकी बातों को याद रखते हैं। पढ़ाई शुरू करने के पहले संकल्प करें कि मैं जो विषय पढ़ने जा रहा हूं वह बहुत सरल है। यदि आप इंगलिश पढ़ रहे हैं तो मन में यह भाव रखते हुए पढ़ें कि मुझे एक नई भाषा सीखने-जानने और समझने का अवसर मिला है। बहुत ही खुशी और आत्म विश्वास के साथ

परीक्षा देने जाएं। पेपर शुरू करने के पहले सोचें कि मैंने सालभर पढ़ाई की है, मैंने पूरे विषय को अच्छे से पढ़ा है, मुझे सबकुछ याद है।

सदा मन रखें शांत....

उन्होंने कहा कि सदा अपना मन शांत रखें। शांत मन से हम जो भी कार्य करते हैं उसमें सफलता निश्चित है। इसलिए शांति को शक्ति कहा जाता है। जब हम शांत मन से पेपर शुरू करते हैं तो एक-एक करके हमारे माइंड में सभी प्रश्नों को जवाब आते जाते हैं। पेपर के एक घंटा पहले पढ़ाई बंद कर दें और स्वयं को रिलेक्स फील करें। साथ ही दो मिनट परमात्मा का ध्यान करने के बाद पेपर की शुरुआत करें।

कोई भी कार्य वर्तमान में रहकर करें...

भारतीय सेवा के सेवानिवृत्त नायब सूबेदार बीके नारायण भाई ने कहा कि जो भी कार्य करें, मन-बुद्धि को वर्तमान में स्थिर रखकर ही करें। उन्होंने एक बंदर के नाच की कहानी सुनाते हुए कहा कि जहां आपकी मन-बुद्धि रहती है वहीं आप हैं। होमवर्क को भोजन से आवश्यक कार्य समझें। इस विशेषता को जिस विद्यार्थी ने धारण कर लिया तो बहुत सारी मेहनत से बच सकता है और सदा सफलता मिलती रहेगी।

सफलता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है....

शिव आमंत्रण के संयुक्त संपादक बीके पुष्पेन्द्र ने सभी को संकल्प शक्ति का महत्व बताते हुए कहा कि आज से सुबह उठते और रात को सोते समय ये संकल्प करें कि सफलता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है, मैं बहुत खुश हूं, मेरे माता-पिता एवं गुरुजन मुझे बहुत स्नेह करते हैं, मैं बहुत भाग्यशाली हूं, मेरा जन्म महान कार्यों के लिए हुआ है। बीके मधु बहन ने प्रेरक गीत सुनाया। इस मौके पर शिक्षण संस्थानों के शिक्षक-शिक्षिकाएं भी मौजूद रहे।

समस्या समाधान

ब्र.कु. सूरज भाई
वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षक

दुआएं हमारी मुसीबत के समय रक्षा करती हैं

सुंदर संकल्प से सुंदर भविष्य का निर्माण...

हमारे संकल्प ऊर्जा का निर्माण करते हैं। जो हम सोचते हैं उसी प्रकार की ऊर्जा का निर्माण होता है। अतः हमें सुंदर और सकारात्मक संकल्पों की रचना करनी चाहिए। सुंदर विचार ही जीवन को सुंदर बनाएंगे। इस प्रकार सोच को बदलने से जीवन में परिवर्तन आने लगता है। अतः खुशी देने वाले संकल्पों को रचने से जीवन खुशनुमा हो जाता है। सुबह उठते ही पहले 10 मिनट तक इन संकल्पों को रिवाइज करो कि मैं बहुत भाग्यवान आत्मा हूं। मैं बहुत सुखी हूं, मेरा भविष्य बहुत सुंदर है। सुबह-सुबह इन संकल्पों को दोहराने से दिन अच्छा व्यतीत होगा। भाग्य साथ देने लगेगा और जीवन खुशनुमा हो जाएगा। राजयोग के प्रयोग की विधि से समस्याओं का हल निकालना और बीमारियों को ठीक करने का अभ्यास करना है। हम कलयुग के अंत में पहुंच गए हैं। इस समय नकारात्मकता की सुनामी चल रही है। इससे बचने के लिए हमेशा स्वमान में रहें। ऐसा करने से निराशा अवसाद से बचा जा सकता है और जीवन में खुशी भी रहेगी। हमें प्रतिदिन पुण्य का काम कर दुआएं लेनी चाहिए। पाप कर्म शांति को छीन लेते हैं। पुण्यों से आत्मा हल्की हो जाती है। हमें लोगों को सुख देकर उनसे दुआएं लेनी चाहिए जो दुआएं मुसीबत के समय में हमारी रक्षा करती हैं।

ब्रेन में छुपे हुए पापकर्म एक्टिव होकर सोने नहीं देते

कार्य व्यवहार में छोटी-छोटी बातों के कारण लोग अपनी शांति को भंग कर लेते हैं। तनाव-ग्रसित होकर दूसरों को भी तनाव के घेरे में बांध ले रहे हैं। खुद से पूछो कि अपनी शांति, खुशी की कीमत ज्यादा या उन बातों की। उत्तर तो स्पष्ट है। मुझे लोग बताते हैं- साढ़े दस बजे नींद आ रही थी चले सोने के लिए। जब बिस्तर पर गए बिल्कुल फ्रेश। चार बज गए नींद ही नहीं आ रही अभी तक। क्या हुआ, नींद तो आ रही थी तब? मनुष्य के ब्रेन की जो नेचुरल गति है वो सोने के समय सुलाना चाहती है लेकिन बेड पर जाते ही ब्रेन में छुपे हुए पापकर्म एक्टिव हो फ्रेश होकर सोने नहीं दे रहे हैं। फिर दिन भर आलस्य-सुस्ती बनी रहती है। कोई भी कार्य सही तरीके से नहीं हो पाता है। इससे फिर तनाव, डिप्रेशन बना रहता है।

जैसा विचार दूसरों को देंगे, वैसा ही लौटकर आएगा...

जो हम दूसरों को देंगे, वो डबल होकर हमारे पास आ जाएगा। यह कर्म सिद्धांत है, इसको भूलना नहीं चाहिए। इसलिए जो श्रेष्ठ विचार आपको चाहिए, वही औरों को देते चलें। भक्ति में इसका स्थूल रूप कर लिया। बर्तन दान कर दो, बर्तन आएंगे। अनाज दान कर दो, अन्न आएगा। धन दान करो, धन आएगा। लेकिन हमें क्या करना है अब। सुख दो तो सुख डबल होकर आपके पास आएगा। दूसरों को प्यार दो तो आपके ऊपर प्यार कि बरसात होने लगेगी। जरूरतमंदों की मदद करो तो हजारों कदम आपकी ओर बढ़ चलेंगे। संसार में कोई कितना भी धन इक्कठा कर सोचे-मैं अकेला जीऊंगा नहीं जी सकता। इसलिए एक-दूसरे का मददगार बनो तो मदद मिलती रहेगी।

धैर्यता और सकारात्मकता के हथियार से विजय सुनिश्चित

वर्तमान में प्रत्येक घर-परिवार में दिन-प्रतिदिन समस्याएं बढ़ती जा रहीं हैं। हर एक व्यक्ति किसी न किसी समस्या में घिरा हुआ है। ऐसे में मानसिक रूप से दृढ़ होना बहुत ही आवश्यक है। कठिन से कठिन परिस्थितियों को राजयोग का अभ्यास आसान कर देता है। चाहे युद्ध जैसी स्थिति हो धैर्यता और सकारात्मकता के हथियार से विजय सुनिश्चित आपकी ही होगी। राजयोग के अभ्यास से हमारे जीवन में सद्गुणों का प्रादुर्भाव होता है। भय एवं तनाव दूर रहते हैं। इससे निर्णय शक्ति बढ़ती है। मनुष्य का चिंतन सकारात्मक हो तो बीमारियां भी दूर भाग जाती हैं। राजयोग के अभ्यास से आत्मा में व्याप्त दुःख और अशांति के मूल कारण काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि दूर होते हैं और मनुष्य के कर्मों में दिव्यता एवं कुशलता आती है।

छोटी आयु के बच्चों में भी दिखते भयानक रोग

आजकल डिप्रेशन छोटी आयु के बच्चों, युवकों मे भी दिख रहा है। जन्म लिया बच्चा डायबिटिक पेसेंट है। पांच साल की लड़की को कैंसर डिटैक्ट हुआ। सारे डॉक्टर्स की टीम भी हैरानी से सोच रही है कि इतने छोटे आयु में कैंसर क्यों? मुझसे पूछा गया। मैंने कहा आप लोग इसका उत्तर नहीं जान सकते क्योंकि मेडिकल साइंस यहां तक नहीं पहुंचती है। इसका उत्तर सिर्फ स्प्रीचुअल सांइस के पास है।

नवनिर्वाचित मंत्रियों और विधायकों का शान्ति सरोवर में सम्मान समारोह आयोजित

आध्यात्मिक मूल्यों की स्थापना में संस्था का कार्य सराहनीयः सीएम

शिव आमंत्रण » रायपुर। छत्तीसगढ़ सरकार के सीएम, विधानसभा अध्यक्ष, नेता प्रतिपक्ष समेत सभी मंत्री और विधायकों के लिए ब्रह्माकुमारीज़ संस्था शांति सरोवर रायपुर में सम्मान समारोह आयोजित किया गया। इसमें मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने कहा कि ब्रह्माकुमारी संगठन नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों की स्थापना की दिशा में सराहनीय कार्य कर रही है। हम सभी इससे भलीभांति परिचित हैं। इसलिए इस संगठन की सेवाओं को दोहराने की जरूरत नहीं है। प्रथम विधानसभा के समय से तत्कालीन विधानसभा अध्यक्ष राजेन्द्र प्रसाद शुक्ल के समय से यह परंपरा बनी हुई है कि बजट सत्र के अवसर पर हम सभी ब्रह्मा भोजन के लिए यहां एकत्रित होते हैं। उसी परम्परा के निर्वहन के लिए हम यहां उपस्थित हैं। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के कार्यकारी सचिव बीके मृत्युजंय ने कहा छत्तीसगढ़ आध्यात्मिक और सांस्कृतिक परम्पराओं से अत्यन्त भरपूर राज्य है। इसका विकास विज्ञान के बल पर नहीं अपितु नैतिक और आध्यात्मिकता के आधार पर करने की जरूरत है ताकि यह राज्य सारे देश के लिए रोल मॉडल बन सके। उन्होंने सभी विधायकों को पुनः माउंट आबू आने का निमंत्रण दिया ताकि वहां से नवीन प्रेरणाएं प्राप्त कर सकें। संस्थान की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी की ओर से सभी को शुभकामना देते हुए कहा कि उनकी शुभ इच्छा है कि छत्तीसगढ़ राज्य नैतिक और आध्यात्मिक शक्तियों के बल पर खूब विकास करे। नम्बर वन बने और सारे देश के लिए यह राज्य रोल माडल बने।

बीके मृत्युंजय ने सीएम भूपेश बघेल, विधानसभा अध्यक्ष डॉ. चरणदास महंत, नेता प्रतिपक्ष धरमलाल कौशिक और पूर्व मंत्री बृजमोहन अग्रवाल सहित समस्त मंत्रियों और विधायकों का शॉल और स्मृति चिंह्न प्रदान कर सम्मान किया। प्रारम्भ में क्षेत्रीय निदेशिका ब्रह्माकुमारी कमला दीदी ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम में क्षेत्रीय समन्वयक ब्रह्माकुमारी हेमलता दीदी और भिलाई सेवाकेन्द्र की इन्चार्ज ब्रह्माकुमारी आशा दीदी भी उपस्थित थीं।

नेशनल गौरव अवार्ड से डॉ. बीके बिन्नी सम्मानित

शिव आमंत्रण » दिल्ली। दिल्ली के विज्ञान भवन में आयोजित कार्यक्रम में इंडियन ब्रेव हार्टस ने बीके बिन्नी को नेशनल गौरव अवार्ड से सम्मानित किया। इसमें केंद्रीय वाणिज्य, उद्योग एवं विमानन मंत्री सुरेश प्रभु, न्यायमूर्ति अनिल कुमार यादव, नागालैंड के प्रिंसिपल कमिश्नर आईएएस ज्योति कलश, बालयोगी उमेश नाथ और मीडिया से संदीप मारवाह उपस्थित रहे। इस मौके पर बीके बिन्नी द्वारा कार्यक्रम के मुख्य आयोजक देवेंद्र पंवार और ट्रस्टी मोनिशा भाटिया को ईश्वरीय सौगात भेंट की गई।

राष्ट्र ज्योति पुरस्कार से बीके मृत्युंजय सम्मानित

शिव आमंत्रण » डोम्बीवली। 50 से भी अधिक वर्षों से अथक आध्यात्मिक, शैक्षणिक और सामाजिक सेवाओं के लिए समर्पित ब्रह्माकुमारी संस्थान के कार्यकारी सचिव बीके मृत्युंजय को जानविज मल्टी फाउंडेशन द्वारा राष्ट्र ज्योति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। मुंबई के डोम्बीवली में आयोजित इस समारोह में जेएमएफ एज्युकेशनल ट्रस्ट के सीईओ राजकुमार एम. कोल्हे ने ये पुरस्कार प्रदान किया।

ओड़िसा अभियान का शुभारंभ...

दुनिया में कोई भी दिव्यांग नहीं

शिव आमंत्रण » भुवनेश्वर। दृष्टि बाधित लोगों के जीवन में प्रकाश फैलाने वाली ब्रेल लिपि से ईजाद कर लुई ब्रेल नेत्रहीन बच्चों के लिए मसीहा बन गए। उनकी याद में भुवनेश्वर के यूनिट 8 सेवाकेंद्र पर एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें संस्थान ने सरकार के साथ मिलकर दृष्टि-बाधित लोगों की समानता सुनिश्चित करने के लिए एक अखिल ओडिशा अभियान का शुभारम्भ किया। संस्थान के दिव्यांग योजना के राष्ट्रीय संयोजक बीके सूर्यमणि, भुवनेश्वर सबजोन इंचार्ज बीके लीना, एसएसईपीडी विभाग के प्रमुख सचिव आईएएस नितेन चंद्रा, ओड़िशा प्रशासनिक सेवा से सन्यासी बेहेरा समेत कई गणमान्य अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। आश्रय संस्था के दिव्यांग छात्रों ने सुंदर ओडिसी नृत्य प्रस्तुत किया। बीके लीना ने समाज के लिए ब्रह्माकुमारी द्वारा की जा रही सेवाओं की जानकारी दी। उन्होंने कहा इस दुनिया में कोई भी दिव्यांग नहीं है। जैसे एक छोटा पंछी भी जंगल को लगी आग बुझाने के लिए तत्पर रहता है वैसे हर व्यक्ति अपनी जिम्मेदारी निभाने के लिए काबिल है। बीके सूर्यमणि ने दिव्यांग छात्रों को राजयोग मेडिटेशन के साप्ताहिक कोर्स की जानकारी दी। अंत में अतिथियों ने शिवध्वज दिखाकर अभियान को आगे के लिए रवानगी दी। सभा में करीब पांच सौ लोग थे और इसमें सौ दिव्यांग छात्र थे। समाजसेविका दीप्ति दास और गीताश्री ने संचालन किया। कार्यक्रम का सांकेतिक भाषा में भाषांतर प्रसन्ना ने किया। इस अवसर पर सभी दिव्यांगों को कंबल बांटे गए।

नेपाली टीवी में गॉडलीवुड के कार्यक्रम को सम्मान

शिव आमंत्रण » काठमांडू। ब्रह्माकुमारी संस्थान के मुख्यालय स्थित गॉडलीवुड स्टूडियो में निर्मित नेपाली टॉक शो नया दिग्दर्शन को नेपाल के राष्ट्रीय चैनल 'नेपाल टेलीविजन में लंबे समय से प्रसारित किया जा रहा है। इस टॉक शो के माध्यम से नेपाल के दर्शकों के लिए की गई सराहनीय सेवा के लिए नेपाल टेलीविजन की ओर से ब्रह्माकुमारीज़ को सम्मान दिया गया। इस अवसर पर नेपाल टेलीविजन के कार्यकारी अध्यक्ष डॉ. महेन्द्र बिस्ता, कार्यक्रम निदेशिका आरती चटौत, महाप्रबंधक गोविंद रोका ने गॉडलीवुड स्टूडियो के बंगाली डिपार्टमेंट के विभागाध्यक्ष बीके चितरंजन, बीके चैताली एवं काठमांडू सेवाकेन्द्र के वरिष्ठ राजयोग शिक्षक बीके रामसिंह को सर्टिफिकेट देकर सम्मान दिया।

बीके योगिनी को मानवाधिकार पुरस्कार से नवाजा

शिव आमंत्रण » नई दिल्ली। मुंबई के विलेपार्ले सेवाकेंद्र की प्रभारी बीके योगिनी को ऑल इंडिया काउंसिल ऑफ ह्यूमन राइट्स, लिबर्टीज एंड सोशल जस्टिस द्वारा आयोजित कार्यक्रम में 'भारतीय मानव अधिकार सम्मान-2018 से नवाजा गया। यह समारोह दिल्ली के इंडिया इस्लामिक सेंटर ऑडिटोरियम में आयोजित किया गया। जिसमें मानव अधिकारों की रक्षा, बढ़ावा देने तथा मानवता की सेवा के लिए सदा तत्पर रहने के लिए बीके योगिनी को इस पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस मौके पर मुख्यालय माउंट आबू से राजयोग शिक्षिका बीके बिन्नी भी मौजूद रहीं।

अभियान भोपाल से खजुराहो तक निकाला गया मेरा देश, मेरी शान अभियान, सागर पहुंचने पर किया स्वागत

स्मार्टफोन की तरह अपने मन को भी बनाएं स्मार्ट

एसबीएन यूनिवर्सिटी में स्प्रीचुअल ब्यूटी विषय पर सेमीनार आयोजित

शिव आमंत्रण » सागर/मप्र। सबसे बड़ी सुंदरता मन को स्वच्छ बनाना है। अपने मन को सुंदर विचारों से श्रेष्ठ, महान और स्वच्छ बनाएं। यदि हमारा मन सशक्त, मजबूत और शक्तिशाली है तो हम जीवन की प्रत्येक परिस्थिति का सामना आसानी से कर सकते हैं। जैसे हम अपने शरीर को सौंदर्य प्रसाधनों से सजाते हैं उसी तरह अपने मन और विचारों को भी मेडिटेशन, आध्यात्म, सुविचार, महान विचार, सकारात्मक विचार, दूसरों को सुख देने वाले विचार, सहयोग के विचार, शुभ भावना-शुभ कामना के विचारों से श्रृंगारित करें। उक्त विचार मुंबई से पधारीं शिपिंग एवं एवीएशन विंग की एक्जीक्यूटिव मेंबर व मोटिवेशनल ट्रेनर बीके प्रशांति दीदी ने व्यक्त किए। ब्रह्माकुमारीज संस्थान के सागर सेवाकेंद्र की ओर से स्वामी विवेकानंद यूनिवर्सिटी में मेरा देश मेरी शान अभियान के पहुंचने पर स्प्रीचुअल ब्यूटी विषय पर सेमीनार आयोजित किया गया। शुभारंभ 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस पर पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने भोपाल में किया। समापन 2 फरवरी को खजुराहो में किया गया।

सागर सेवाकेंद्र की निदेशिका बीके छाया बहन ने बताया कि अभियान का उद्देश्य लोगों में देशप्रेम और देशभक्ति की भावना जागृत करना है। हमारा भारत देश सबसे महान है। हमारी संस्कृति और सभ्यता पुरातनु है। विद्यार्थियों और युवाओं में देशभक्ति की भावना का विकास करने के लिए ही इसे निकाला जा रहा है। ग्वालियर से पधारीं मैनेजमेंट स्पीकर बीके ज्योति दीदी ने कहा कि स्मार्ट फोन की तरह अपना व्यक्तित्व, सोच और कर्मों को भी स्मार्ट बनाएं। हम बदलेंगे जग। आंतरिक सुंदरता को रोजाना बढ़ाते जाएं तो एक दिन हमारा मन स्वर्ग समान बन जाएगा। राहतगढ़ सेवाकेंद्र प्रभारी बीके नीलम ने युवाओं से आह्वान किया कि अपनी ऊर्जा देश व स्वयं के विकास में लगाएं। आध्यात्म से जुड़े। बीके खुशबू ने भी संबोधित किया।

बैडमिंटन खिलाड़ी पीवी सिन्धु का सम्मान

शिव आमंत्रण » पुणे। ओलंपिक स्पर्धा में बैडमिंटन में सिल्वर मैडल विजेता भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ी पीवी सिन्धु का महाराष्ट्र के पुणे में बैडमिंटन लीग स्पर्धा में आने पर सोनई सेवाकेंद्र प्रभारी बीके उषा और बीके डॉ. दीपक हरके ने मुलाकात कर ईश्वरीय सौगात भेंट की। साथ ही बीब्लूएफ वर्ल्ड टूर्नामेंट में विजेता प्रथम भारतीय महिला होने के उपलक्ष्य में उन्हें बधाई दी।

सार समाचार

मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने किया नए सेवाकेंद्र भवन का उद्घाटन

शिव आमंत्रण » पाटन। छत्तीसगढ़ के नवनिर्वाचित मुख्यमंत्री भूपेश बघेल अपने गृहग्राम बेलोदि (पाटन क्षेत्र) के प्रवास पर थे। इस दौरान रूजामगांव में ब्रह्माकुमारी सेवाकेंद्र के नए भवन का उद्घाटन किया। भिलाई सेवाकेंद्र की निदेशिका बीके आशा बहन ने सीएम का तिलक लगाकर स्वागत किया। इसके पश्चात भिलाई सेवाकेन्द्रों की निदेशिका बीके आशा एवं पाटन सेवाकेंद्र प्रभारी बीके शिवकुमारी ने फीता काटकर नए सेवाकेन्द्र का उद्घाटन किया। इस दौरान बड़ी संख्या में ब्रह्मावत्स और गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

रेल मंत्री व स्वास्थ्य मंत्री से मुलाकात

शिव आमंत्रण » नई दिल्ली। संस्था के कार्यकारी सचिव बीके मृत्युंजय ने दिल्ली में रेल राज्यमंत्री पीयूष गोयल से मुलाकात कर उन्हें संस्था का सोविनियर भेंट किया। साथ ही मुख्यालय पधारने का निमंत्रण दिया। मुलाकात के दौरान उन्हें चंडीगढ़ बांद्रा ट्रेन नियमित करवाने हेतु प्रार्थना पत्र भी दिया। अवसर पर बीके शिविका भी मौजूद रहीं। वहीं केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जेपी नड्डा को संस्थान के मुख्यालय माउंट आबू से वरिष्ठ राजयोग शिक्षक बीके प्रकाश ने मुलाकात कर संस्था का सोविनियर भेंट किया।

उपमुख्यमंत्री को प्रदान की सौगात

शिव आमंत्रण » जयपुर। राजस्थान के उपमुख्यमंत्री सचिन पायलट से जयपुर में ब्रह्माकुमारीज़ संस्था के सदस्यों ने मुलाकात कर शुभकामनाएं दीं। साथ ही एक चित्र भेंट किया। इस मौके पर जयपुर से बीके हेमा और बीके कविता, तमिलनाडू से बीके इन्दरकुमार, मुख्यालय माउंट आबू से बीके रमेश उपस्थित रहे।

सिक्योरिटी फोर्स में बताए तनाव के गुर

शिव आमंत्रण » मैसूर। सेल्फ एम्पॉवरमेंट एंड एन्हान्सिंग इनर स्ट्रेंथ विषय के तहत कर्नाटक के मैसूर स्थित ज्ञान मान सरोवर में विशेष सिक्योरिटी फोर्स के लिए तनाव मुक्त शिविर का आयोजन किया गया। सेवाकेंद्र प्रभारी बीके शुक्ल के निर्देशन में हुए इस सेमिनार में मुंबई से राजयोग शिक्षिका बीके दीपा, कॉर्पोरेट ट्रेनर प्रो. बीके ईवी स्वामीनाथन और अन्य बीके सदस्यों द्वारा क्रिएटिव सेशन्स कराए गए। सेमिनार में डिवीजन के रेलवे सुरक्षा बल के डिवीजनल सिक्योरिटी कमिश्नर केएस कब्बुर, सीआईएसएफ और आरबीआई के डिप्टी कमांडेंट मंजीत कुमार समेत सिटी पुलिस, सिटी आर्म्ड रिजर्व, कर्नाटक स्टेट रिजर्व पुलिस, रेलवे प्रोटेक्शन फोर्स और सीआईएसएफ के प्रतिनिधि शामिल हुए।

दादी बृजइन्द्रा के नाम से जाना जाएगा मुंबई के सायन सर्किल का ओवरब्रिज

शिव आमंत्रण » मुंबई। सायन किंग सर्किल स्टेशन से सायन हॉस्पिटल को जोड़ने वाला ओवरब्रिज राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी बृजइन्द्रा दादीजी के नाम से जाना जाएगा। इसका अधिकारिक कार्यक्रम का उद्घाटन कर दिया गया। यह ओवरब्रिज सायन सर्किल स्टेशन से सायन हॉस्पिटल को जोड़ता है। इस ब्रिज के बन जाने से सायन हॉस्पिटल एरिया में लगने वाले जाम से लोगों को मुक्ति मिली है। ब्रह्माकुमारीज संस्थान के इतिहास में यह पहली बार है जब ब्रह्माकुमारीज संस्थान के फाउंडिंग सदस्यों में एक राजयोगिनी बृजइन्द्रा दादी द्वारा 60 के दशक में की गई ईश्वरीय सेवाओं के उपलब्धि को मुंबई पालिका ने सम्मानित किया है। इस अवसर पर एक समारोह का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में भाजपा के मुम्बई अध्यक्ष एडवोकेट आशीष शेलार ने कहा यह महिला सशक्तिकरण की बड़ी मिसाल है। क्योंकि दादी बृजइन्द्रा ने सन् 1960 में यहां आकर लोगों के जीवन में मूल्यों को पोषित करने तथा श्रेष्ठ जीवन बनाने के लिए ईश्वरीय सेवाएं कीं। इसके लिए हम उनके आभारी रहेंगे। अब इस बृज का नाम उनके सम्मान के लिए नामकरण किया गया है। महाराष्ट्र, आन्ध्र प्रदेश तथा तेलंगाना की जोन प्रभारी बीके संतोष ने कहा कि दादी बृजइन्द्रा का जीवन लोगों के लिए हमेशा प्रेरणास्रोत रहेगा। इस पुल पर आने वाले प्रत्येक व्यक्ति को प्रेरणा मिलेगी ऐसी उम्मीद करती हूं। विधायक कैप्टन तमिल सेलवन, बीजेपी के एक्जीक्यूटीव बॉडी के आयोजक सचिव सुनिल कर्जात्कर, महाराष्ट्र के उपाध्यक्ष प्रसाद लाड, गॉडलीवुड स्टूडियो के कार्यकारी निदेशक बीके हरीलाल ने अपनी शुभकामनाएं देते हुए कहा यह ब्रिज मुम्बई ग्लैमर की दुनिया में आध्यात्म का बीज बोएगा। मुम्बई की म्यनीसिपल कार्पोरेटर की राजश्री राजेश सिरवाडकर समेत बड़ी संख्या में लोग उपस्थित थे।

मुलताई में आयोजित स्नेह मिलन समारोह में कैबिनेट मंत्री भरता सुखदेव पांसे हुए शामिल

ब्रह्माकुमारीज़ संस्था का बहुत ही पुनीत कार्य: मंत्री पांसे

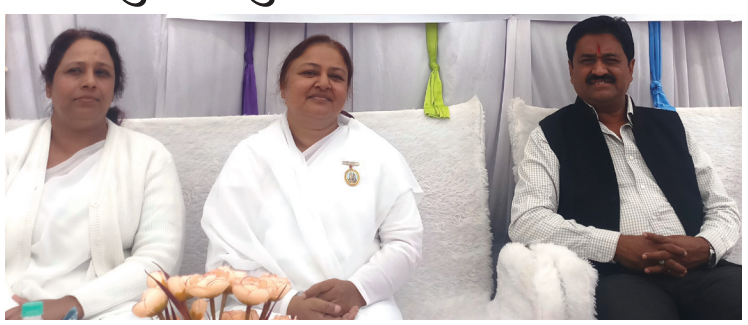

शिव आमंत्रण » मुलताई/उप्र। सेवाकेंद्र पर आयोजित स्नेहमिलन कार्यक्रम में मध्यप्रदेश के कैबिनेट मंत्री बनने पर भरता सुखदेव पांसे का स्वागत किया गया। इसमें मंत्री पांसे ने ब्रह्माकुमारी संस्था के साथ के अपने अनुभवों को सांझा किया। साथ ही उन्होंने संस्थान के कार्यों की प्रशंसा करते हुए कहा यह बहुत ही श्रेष्ठ कार्य है। इस पुनीत कार्य में तन-मन-धन जिस भी प्रकार से मेरे सहयोग की आवश्यकता होगी मैं हर प्रकार से तत्पर रहूंगा।

बैतूल से पधारीं बीके मंजू ने तनाव प्रबंधन के बारे में बताया कि कैसे राजयोग का अभ्यास कर हम तनाव मुक्त रह सकते हैं। कार्यक्रम में नगर पालिका अध्यक्ष हेमंत शर्मा, नगर सेठ संतोष अग्रवाल, सारणी सेवाकेन्द्र प्रभारी बीके सुनीता, स्थानीय सेवाकेन्द्र प्रभारी बीके मालती समेत शहर के कई गणमान्य व्यक्ति मौजूद थे।

13 राज्यों में युवाओं को जन जागृति का संदेश देते हुए पीस मैसेंजर बस पहुंची कोलकाता

शिव आमंत्रण » कोलकाता। संस्था के युवा प्रभाग द्वारा चलाए जा रहे अखिल भारतीय अभियान की 'मेरा भारत, स्वर्णिम भारत आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी बस 13 राज्यों की सफल यात्रा करते हुए पश्चिम बंगाल के कोलकाता जा पहुंची। जहां बांगुर एवेन्यू सेवाकेन्द्र पर विशेष युवाओं के लिए एक्सेप्टिंग चैलेन्जस विषय पर कार्यक्रम हुआ। इसमें अतिथि के रूप में स्कूल शिक्षा के आयुक्त डॉ. सौमित्र मोहन, लेखक कृष्ण बासु, बगनान के पार्षद श्रीधर मोंडल, सेवाकेन्द्र प्रभारी बीके मधु तथा यात्रा के प्रभारी बीके अवनीश विशेष रूप से उपस्थित हुए।

कार्यक्रम के दौरान प्रश्नोत्तर सत्र में युवाओं के द्वारा अतिथियों से कई सवाल पूछे गए, जिनका उन्होंने अपने अनुभवों के माध्यम से जवाब दिया। कोलकाता में अभियान की सफलता के लिए युवा मामले के राज्यमंत्री लक्ष्मी रतन शुक्ला ने वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके अस्मिता को शुभकामनाएं दीं। अभियान में 15 युवा सदस्यों की टीम ने विभिन्न स्कूल-कॉलेजों एवं स्थानों में कार्यक्रमों का आयोजन कर युवा वर्ग में सकारात्मक विचार और राजयोग के अभ्यास द्वारा अन्दर व बाहर की स्वच्छता को जीवन में धारण करने की जागृति दिलाई। अन्त में शहर में रैली भी निकाली गई, जिसको बांगुर एवेन्यू सांसद के अध्यक्ष विनोद रुंगटा ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। यात्रा में स्थानीय सदस्यों समेत अभियान यात्रियों ने भी सहभागिता की। उपभोक्ता मामलों, स्व-सहायता समूह और स्व-रोजगार मंत्री साधन पांडे, बृजवासी कम्पनी, पंजाब नेशनल बैंक के ज़ोनल ट्रेनिंग सेन्टर द्वारा विशेष रूप से सम्मान किया गया।

तिरंगा फहराकर मनाया आध्यात्मिक अनुसंधान अध्ययन एंव शैक्षणिक प्रशिक्षण केंद्र का वार्षिकोत्सव

ईमानदारी और पवित्रता धारण करने का लिया संकल्प

शिव आमंत्रण › सन्नौड़/बंजारी (देवास)। जीवन पथ पर सदा ईमानदारी और पवित्रता के साथ आगे बढ़ेंगे और दूसरों को भी प्रेरित करेंगे। इसी संकल्प के साथ आध्यात्मिक अनुसंधान अध्ययन एंव शैक्षणिक प्रशिक्षण केंद्र बंजारी का वार्षिकोत्सव 26 जनवरी को देशभक्ति की भावना के साथ मनाया गया। सबसे पहले तिरंगा झंडा फहराया गया। इसके बाद शिव ध्वज फहराकर आध्यात्मिक सत्संग हुआ। इसमें सभी ने जीवन को मूल्यनिष्ठ बनाने पर मंथन किया। बीना से पधारीं ब्रह्माकुमारी सरोज ने कहा जीवन में जब हम ईश्वरीय कार्य के लिए त्याग करते हैं तो परमात्मा सौ गुणा मदद करते है। आध्यात्मिक मार्ग में बिना त्याग-तपस्या के पुरुषार्थ की महानता पर नहीं पहुंचा जा सकता है।

आध्यात्मिक अनुसंधान अध्ययन एंव शैक्षणिक प्रशिक्षण केंद्र के निदेशक अंतरराष्ट्रीय मोटिवेशनल स्पीकर व बिहेवियर साइंटिस्ट डॉ. अजय शुक्ला ने कहा कि हम सभी ने जीवन में कभी गुड से आगे बढ़ने पर मंथन ही नहीं किया है। कुछ लोग बेस्ट और बेटर तक पहुंचते हैं और चंद लोग एक्सीलेंट की सीमा पर पहुंच पाते हैं। आज सभी संकल्प करें कि अब हम इसके आगे जीवन के एक लक्ष्य गुडनैस तक पहुंचनेमें अपनी ऊर्जा लगाएंगे। अपने जीवन में एक महान लक्ष्य पर पहुंचकर मंगलकारी अवस्था को पाना जीवन लक्ष्य हो। सन्नौड़ सेवाकेंद्र प्रभारी ब्रह्माकुमारी संगीता ने कहा आज सभी यहां से संकल्प लेकर जाएं कि जो बातें बताई गईं हैं उन्हें जीवन में धारण करेंगे। श्योपुर से पधारीं ब्रह्माकुमारी तारा ने कहा जीवन में सबकुछ चला जाए लेकिन कभी भी सच्चाई-सफाई के साथ ईमानदारी का दामन नहीं छोड़ेंगे। माउंट आबू से पधारे बीके पानमल भाई ने कहा कि ओम शांति वह महामंत्र है जिसके उच्चारण से सभी मन के विकार दूर हो जाते हैं। ईश्वर के दर पर रोजाना एक घंटे का समय जरूर दें। ग्वालियर से पधारीं ब्रह्माकुमारी राधा ने कहा पवित्रता जीवन का श्रृंगार है। यदि तन-मन-समय-संकल्पों की पवित्रता हमारे जीवन में है तो ऐसा जीवन सबस महान है। मुरैना से पधारीं ब्रह्माकुमारी कृष्णा दीदी ने कहा कि बच्चे मन के सच्चे होते हैं। इसलिए बालमन में अच्छे विचारों और संस्कारों का बीजारोपण करें।

अपने निजी जीवन का भी बनाएं संविधान

शिव आमंत्रण के संयुक्त संपादक बीके पुष्पेन्द्र ने कहा कि जैसे लोगों को सुख पूर्वक जीने व समाज में व्यवस्था बनाए रखने के लिए संविधान बनाया गया है वैसे ही अपने जीवन का भी संविधान बनाएं। अपने जीवन में भी नियम, मर्यादा और कर्तव्यों को शामिल करें। मन-वचन और कर्मों को सकारात्मक, श्रेष्ठ और राष्ट्रहित में लगाने का संकल्प लें। इस मौके पर रीवा से पधारे वरिष्ठ पत्रकार रामचंद्र, उपमा शुक्ला, ग्वालियर से पधारे बीके अरविंद, मंडीदीप से पधारे शिक्षक बीके दिनेश सहित सन्नौड़, बंजारी, देवास, उज्जैन, इंदौर से पधारे नागरिकगण उपस्थित रहे।

टिटवाला मे 'पीस पैलेस' का उद्घाटन

शिव आमंत्रण › उल्हासनगर/महाराष्ट्र। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा टिटवाला में रिजेंसी सर्वम के प्रांगण में नये केंद्र 'पीस पैलेस' का उद्घाटन समारोह आयोजित किया गया। महाराष्ट्र जोन की निदेशिका बीके संतोष, उल्हासनगर सेवाकेंद्रों की प्रभारी बीके सोम, कल्याण के आयुक्त गोविंद फडके, कल्याण की उपमहापौर अपेक्षा भोईर, उल्हासनगर की विधायक ज्योति कलानी, महापौर पंचम कलानी, रिजेंसी निर्माण के अध्यक्ष महेश अग्रवाल, गॉडलीवुड स्टूडियो के कार्यकारी निदेशक बीके हरीलाल ने भी मुख्य रूप से समारोह में शिरकत की। सांसद कपिल पाटिल ने फोन से अपनी शुभकामनाएं दी। इस भव्य पीस पैलेस का उद्घाटन विशिष्ठ अतिथियों की उपस्थिति में शिव ध्वज फहराकर किया गया। साथ ही इस उपलक्ष में आयोजित कार्यं म का विधिवत दीप प्रज्वलन कर एवं सांस्कृतिक संध्या में गायक बीके श्याम द्वारा मधुर गीतों की प्रस्तुति और नुपुर डान्स एकेडमी के बच्चों ने नृत्य द्वारा सबको मूल्यों का संदेश दिया। जिसके पश्चात बीके सदस्यों ने अपने विचार रखे।

ब्रह्माकुमारी के मुख्यालय में मैंने आंतरिक परम शांति का अनुभव किया

डॉ. शिवस्वरूपानंद के विचार

शिव आमंत्रण › राजिम नवापारा/छग। नवापारा राजयोग सेवाकेंद्र द्वारा त्रिमूर्ति भवन में शहरवासियों व नियमित साधकों के लिए स्नेह मिलन कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें मुख्य अतिथि जोधपुर से पधारे महामंडलेश्वर डॉ. शिवस्वरूपानंद ने कहा वेदों का सार है स्वयं को जान लेना और उस आंतरिक परम शांति का अनुभव करना। वह अनुभव मैंने ब्रह्माकुमारी संस्थान माउंट आबू में किया। जहां 40 हजार भाई-बहन एक साथ बैठकर उस साधना के द्वारा दिव्य शांति व अनुभूति प्राप्त करते हैं। परमात्म ज्ञान मुरली के माध्यम से वेदों की झलक मिलती है जिसे सत्य ज्ञान कहते हैं। वेदों का अध्ययन करना अलग बात है लेकिन उसे जीवन में धारण करना कठिन है। वही वेदों के ज्ञान के अनुसार प्रैक्टिकल जीवन अर्थात् सुख - शांति से संपन्न जीवन की झलक यहां देखने को मिलती है। यहां का अनुशासन, मर्यादा, व्यवस्था में दैवी दर्शन होते हैं। यहां की संस्कृति में अभी भी पाश्चात्य संस्कृति का अभाव है। जबकि अन्य राज्यों में पाश्चात्य संस्कृति हावी होती जा रही है।

हरिहर माध्यमिक विद्यालय की प्रिन्सिपल ललिता अग्रवाल ने कहा मैं हमेशा बच्चों को सत्य की राह पर चलने की शिक्षा देती हूं। सुप्रसिद्ध डॉ. राजेंद्र गदीया ने कहा मेडिटेशन सब बीमारियों की दवा है। इंदौर से पधारे धार्मिक प्रभाग के राष्ट्रीय कार्यकारी सदस्य बीके नारायण ने कहा कि आज सत्य को सारी दुनिया ढूंढ रही है। भारत में इतने धर्मगुरु होने के बाद भी आज मानव व संसार की हालत दिन-प्रतिदिन गिरावट की ओर जा रही है। कार्यक्रम संचालिका बीके पुष्पा, बीके राजकुमारी व बीके शीला ने स्वागत किया।

सृष्टि-चक्र का हर घड़ी शुभ ही शुभ है

स्व प्रबंधन

बीके ऊषा
स्व प्रबंधन विशेषज्ञ, माउंट आबू

सृष्टि-चक्र

स्वास्तिका के रूप में इस काल चक्र को भारतीय संस्कृति में स्वास्तिका-चिंह्न के रूप में दिखाया गया है। हम इस स्वास्तिक चिंह्न को हर शुभ कार्य के आरंभ में उपयोग करते हैं। परन्तु अगर किसी से भी पूछा जाए कि स्वास्तिक का अर्थ क्या है या क्यों इसे ही शुभ की निशानी माना गया है तो यही उत्तर मिलता है कि इसे परंपरा से ही एक शुभ प्रतीक के रूप में स्वीकार किया गया है। किसी के पास उसका कोई अर्थ सहित उत्तर नहीं है।

स्वास्तिका शब्द का अर्थ

'स्वास्तिक' शब्द संस्कृत के 'सु'+'आस्ति' के संयोग से बना है। 'सु' अर्थात 'शुभ', 'आस्ति' यानी 'जो है'। इसका भाव यह है कि इस काल चक्र की हर घड़ी सदैव शुभ है। इसकी कोई घड़ी बुरी है ही नहीं इसीलिए श्रीमद्भगवद् गीता के सार में यह कहा है कि 'हे! अर्जुन, जो हुआ वो अच्छा, जो हो रहा है वो बहुत अच्छा और जो होने वाला है वह भी बहुत अच्छा। तुम व्यर्थ चिंता कर रहे हो'। दूसरे शब्दों में काल-चक्र का भूत, वर्तमान और भविष्य शुभ है। किसी भी घड़ी को अशुभ मानना अज्ञानता है। स्वास्तिका के चिंह्न का हर शुभ कार्य के आरंभ में लगाते हैं ताकि यह संशय न रहे कि पता नहीं यह घड़ी शुभ है या नहीं, लेकिन जिस घड़ी में वह शुभ कार्य आरंभ हो रहा है वह घड़ी भी शुभ है। ब्राह्मण लोग कोई भी शुभ कार्य करने के समय स्वास्तिका पर कलश में नारियल रख कर मंत्रोच्चारण करते हुए कार्य सदा शुभ फल ही प्रदान करता है। नारियल को श्रीफल भी कहते हैं। श्रीफल माना इससे श्रेष्ठ फल ही प्राप्त होता है। कितना ऊंचा भाव है। भारतीय संस्कृति में लेकिन साधारण लोग इस बात को समझ नहीं पाते। जब यह कहते हैं कि इस काल चक्र की हर घड़ी सदा ही शुभ है तो कई लोग इस बात को स्वीकार नहीं कर पाते और कहते हैं कि ऐसे तो कभी किसी के साथ भी न हो या भयानक कष्ट वाली घटनाओं को शुभ कैसे समझा जाए? लेकिन यह प्रश्न तब पैदा होता है जब हम सिर्फ वर्तमान काल को देखते हैं। इसे स्वीकार करने के तीनों कालों को देखने की आवश्यकता है।

इस पर राजा अकबर और बीरबल की कहानी प्रस्तुत है

"एक बार राजा अकबर और उनका मंत्री बीरबल जंगल में शिकार के लिए गए और राजा की अंगुली कट गई और खून बहने लगा। मंत्री बीरबल महा ज्ञानी था उनके मुख से निकल गया कि 'चलो जो हुआ अच्छा हुआ।' यह सुनकर राजा को बहुत गुस्सा आया कि 'मेरी अंगुली कट गई और सहानभूति दर्शाने के बदले में तुम कहते हो कि अच्छा हुआ, इसमें अच्छा क्या है? राजा का गुस्सा सातवें आसमान पर था उसने सैनिकों को आदेश दिया कि बीरबल को कारागृह में बंद कर दो। जाते-जाते भी बीरबल ने कहा कि इसमें भी कोई कल्याण होगा। शिकार करते हुए राजा अकेला आगे बढ़ता गया। जैसे-जैसे जंगल में चलता गया वहां कुछ जंगली लोग अपने त्योहार मनाने लिए देवी को नर बलि चढ़ाने के लिए किसी मनुष्य को ढूँढ़ रहे थे और राजा को देखते ही उन्हें घेर कर बंदी बना दिया और अपने कबीले के मुखिया के पास ले गए। राजा अकबर उन्हें समझाने का प्रयत्न कर रहा था परन्तु वह उनकी कोई बात सुनने के लिए तैयार ही नहीं थे। राजा को बड़ा अफसोस हो रहा था कि बीरबल को उन्होंने भेज कर गलती की क्योंकि उन्हें पता था कि वही कोई उपाय सोच सकता था। लेकिन अब कोई फायदा नहीं था और वह शांत होकर अपने भाग्य को कोस रहे था। देवी को बलि चढ़ाने लिए सारी तैयारी हो गई तो उनके पंडित ने राजा की कटी हुई अंगुली देखी और कहा कि इसे बलि नहीं दिया जा सकता क्योंकि इसकी अंगुली पहले से कटी हुई है। इसे देवी स्वीकार नहीं करेगी। राजा को सकुशल छोड़ दिया गया। आज यही कटी अंगुली के कारण मेरी जान बच गई। वह तुरंत राज महल पहुंचा और बीरबल को रिहा करने का आदेश दिया और बीरबल को बुलाया और सारी बात सुनाई और उनमें क्या अच्छा था? कारागृह में तो तुम्हें कष्ट हुआ।' बीरबल ने कहा कि 'यह भी तो अच्छा था क्योंकि अगर आप मुझे सजा नहीं देते तो मैं आपके साथ जाता और आप तो खंडित बलि होने के कारण बच जाते परन्तु मैं तो संपूर्ण था तो मेरी बलि चढ़ जाती तो आपको गुस्सा आया वह भी अच्छा था और सजा दी वह भी अच्छा था तो दोनों की जान तो बच गई।

क्रमशः.....

कैबिनेट मंत्री ज्ञान सिंह नेगी ने संस्थान के कार्यों की सराहना की

शिव आमंत्रण › ऋषिकेश/उत्तराखंड। स्थानीय सेवाकेंद्र पर स्वीटनेस ऑफ रिलेशन इन पर्सनल लाइफ विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें कैबिनेट मंत्री ज्ञान सिंह नेगी ने भी भाग लिया और संस्थान के कार्यों की सराहना की। इस अवसर पर स्थानीय सेवाकेंद्र प्रभारी बीके आरती ने उन्हें ईश्वरीय सौगात भेंट की।

सूचना

सामाजिक सेवाओं तथा आंतरिक सशक्तिकरण के प्रयास के साथ निकाला गया मासिक **शिव आमंत्रण समाचार पत्र** एक संपूर्ण अखबार है। इसमें आप सभी पाठकों का लगातार सहयोग मिल रहा है, यही हमारी ताकत है।

वार्षिक मूल्य › 110 रुपए
तीन वर्ष › 330
आजीवन › 2500 रुपए

पत्र व्यवहार का पता

संपादक › ब्र.कु. कोमल
ब्रह्माकुमारीज़ शिव आमंत्रण ऑफिस, शांतिवन, आबू रोड, जिला- सिरोही, राजस्थान, पिन कोड- 307510
मो › 9414172596, 9413384884
Email › shivamantran@bkivv.org

प्रयागराज कुंभ में बही ज्ञान की सरिता, शाश्वत यौगिक खेती से स्वर्णिम भारत का संकल्प

30 दिन में ढाई लाख लोगों ने जानी राजयोग की विधि

शिव आमंत्रण ➤ प्रयागराज। कुम्भ मेले में पवित्र गंगा और यमुना नदी में स्नान करने के लिए दुनियाभर से करोड़ों लोग पहुंचे। इसी कड़ी में ज्ञान स्नान से नर से नारायण तथा नारी से लक्ष्मी बनने का भाव लेकर ब्रह्माकुमारीज़ संस्था की ओर से सत्यम शिवम सुन्दरम भव्य मेला लगाया गया।

उद्घाटन कैबिनेट मंत्री सुरेश राणा, प्रशासक प्रभाग की अध्यक्षा बीके आशा, प्रयागराज सेवाकेन्द्र प्रभारी बीके मनोरमा, लखनऊ के गोमतीनगर सेवाकेन्द्र की प्रभारी बीके राधा, कासगंज की बीके सरोज तथा मेले के को-ऑर्डिनेटर बीके अरुण की उपस्थिति में किया गया था। यूपी के गन्ना मंत्री सुरेश राणा ने कहा भाषण तथा भीड़ तो बहुत होती हैं परंतु प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा आयोजित यह मेला पूरे कुंभ में अद्वितीय है। उन्होंने कहा कि वह स्वयं भी समय मिलने पर ईश्वरीय विश्व विद्यालय में स्वयं परमात्मा द्वारा दी जाने वाली शिक्षाओं को प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। यहां आने पर उन्हें दिव्य शांति की अनुभूति होती है।

मेला प्रभारी व आयोजक बीके मनोरमा ने कहा प्रयागराज की भूमि तपस्या की भूमि है। यहां पर आदिकाल से हजारों महात्माओं ने तपस्या की है। उत्तर प्रदेश में संस्था की सेवाओं की शुरुआत भी कुंभ मेले से ही हुई थी। यह सुंदर मेला लोगों के जीवन में सार्थक परिवर्तन लाने में एक महत्वपूर्ण कदम साबित होगा। ओआरसी की निदेशिका बीके आशा ने कहा कि स्वयं परमात्मा ने कहा है कि धर्म ग्लानि के समय मैं स्वयं अवतरित होता हूं और सत्य धर्म की स्थापना करता हूं। इस मेले को हल्के में ना लें, यह मेला आपके जीवन में सार्थक परिवर्तन लाने में सक्षम है। भिलाई के बीके अरुण, बीके सरोज, बीके राधा ने भी संबोधित किया। फिरोजाबाद की बीके सरिता, बरेली से बीके पार्वती, इंदौर से बीके सीमा, मंत्री सुरेश राणा गन्ना की धर्मपत्नी नीता राणा तथा शहर के अन्य विशिष्ट जन कार्यक्रम में मौजूद थे।

50 हजार किसानों ने सीखे शाश्वत यौगिक खेती के गुर

शिव आमंत्रण ➤ प्रयागराज। कुंभ मेला क्षेत्र के सेक्टर 7 में उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा कृषि जागरूकता कार्यक्रम के अंतर्गत विराट कृषि मेला का आयोजन किया गया। इसमें प्रदेश के विभिन्न स्थानों से कृषि वैज्ञानिक शामिल हुए। मेले में खास आकर्षण ब्रह्माकुमारीज संस्था के ग्राम विकास प्रभाग द्वारा लगाई गई शाश्वत यौगिक खेती का पंडाल था। शाश्वत यौगिक खेती कार्यक्रम का उद्घाटन यूपी के कृषि मंत्री सूर्य प्रताप साही, ग्राम विकास प्रभाग की अध्यक्ष बीके सरला समेत कई विशिष्ट लोगों की उपस्थिति में किया गया।

पंडाल का अवलोकन करने आए राज्य कृषि मंत्री रणवेन्द्र प्रताप सिंह उर्फ धुन्नी सिंह कई अधिकारियों के साथ स्टॉल पर पहुंचे। उन्होंने कहा कि मैं खुद जैविक खेती कर रहा हूं। लेकिन यह उसका एडवांस वर्जन है, जिसमें योग को शामिल किया गया है। मुख्य वक्ता के तौर कृषि एवं ग्रामीण विकास प्रभाग की अध्यक्षा बीके सरला ने कहा कि किसान अन्नदाता है। किसान भारतीय संस्कृति का परिचायक है। परंतु आज आधुनिकता की चकाचौंध के कारण वह परेशान है। रासायनिक दवाओं तथा उर्वरकों का अत्यधिक उपयोग, प्रकृति की निष्ठुरता के कारण वह तंग हो चुका है।

इन्होंने भी किया अवलोकनः अतिरिक्त महासचिव बीके बृजमोहन, ओआरसी की निदेशिका बीके आशा, यूपी के कृषि निदेशक सोराज सिंह, उपनिदेशक विनोद कुमार, प्रयागराज की प्रभारी बीके मनोरमा, सहायक कृषि निदेशक बद्री विशाल तिवारी, ग्राम विकास प्रभाग के उपाध्यक्ष बीके राजू, पूर्व प्रबन्ध निदेशक विनय प्रकाश श्रीवास्तव, दारागंज प्रभारी बीके कमल समेत बड़ी संख्या में लोग शामिल हुए। 15 दिनों के अन्दर करीब पचास हजार से ज्यादा किसानों ने शाश्वत यौगिक खेती के गुर सीखे, इसके साथ ही यौगिक खेती करने का संकल्प लिया।

नारी हर कार्य करने में है सक्षम, सभी धर्मों के प्रतिनिधियों ने की महिला शक्ति की वकालत

शिव आमंत्रण ➤ प्रयागराज। कुम्भ मेले में महिला सशक्तिकरण के मुद्दे को लेकर परमार्थ निकेतन द्वारा दो दिवसीय समिट आयोजित की गई। इसका विषय 'शी इज द सॉल्यूशन' था। इस दो दिवसीय सम्मेलन में हज़ारों महिलाओं, पुरुषों एवं बच्चों, फेथ लीडर्स तथा पॉलिटिकल लीडर्स ने भाग लिया। इनमें ब्रह्माकुमारीज़ को भी विशेष तौर पर आमंत्रित किया गया। जहां माउण्ट आबू ग्लोबल हॉस्पिटल की पब्लिक रिलेशन मैनेजर डॉ. बीके बिन्नी, गुरुग्राम के पालम विहार सेवाकेन्द्र की प्रभारी बीके उर्मिल, बीके सुदेश ने संस्थान का प्रतिनिधित्व किया। समिट के उद्घाटन पर लोकसभा स्पीकर सुमित्रा महाजन कहा मै कहां भी जाती हूं तो बताती हूं कि तुम्हारे अंदर भी हनुमान की शक्ति है। वह जानो तो हर कार्य कर सकती हैं। मानव संसाधन विकास राज्यमंत्री सत्यपाल सिंह ने कहा जिस दिन इस देश में नारी सशक्तिकरण होगा उस दिन इस देश की सारी समस्याएं समाप्त हो जाएंगी। इसमें डॉ. बिन्नी तथा गुरुग्राम के पालम विहार की प्रभारी बीके उर्मिल ने कहा कि महिलाएं शक्ति का स्वरूप हैं। जितनी महिलाओं में समाज को बदलने का सामर्थ्य और शक्ति है। उतना पुरूषों में भी नहीं है। बशर्ते महिलाओं को अपनी शक्ति पहचानने की आवश्यकता है। इस कार्यक्रम में बाबा स्वामी रामदेव, परमार्थ निकेतन के अध्यक्ष स्वामी चिदानन्द सरस्वती, डिवाइन शक्ति फाउंडेशन की अध्यक्षा साध्वी भगवती सरस्वती समेत बड़ी संख्या में लोग शामिल हुए।

विदेश मंत्री सुषमा स्वराज ने की संस्था के कार्यों की सराहना...

प्रवासी सम्मेलन में कुवैत की बीके अरुणा ने किया ब्रह्माकुमारीज़ संस्था का प्रतिनिधित्व

शिव आमंत्रण वाराणसी। अब ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान का प्रतिनिधित्व सरकारी व गैर सरकारी सभी संस्थाओं में होने लगा है। चाहे देश हो या विदेश हर जगह संस्थान की उपस्थिति बेहतर समाज बनाने में अपनी उपयोगिता को साबित कर रहा है। बनारस में हुए प्रवासी सम्मेलन में कुवैत की वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका तथा प्रभारी बीके अरुणा लाडवा भाग लेने बनारस पहुंचीं। वे बतौर विशिष्ट अतिथि शामिल हुईं और विदेश मंत्री सुषमा स्वराज से मुलाकात की थी।

इस पर विदेश मंत्री ने संस्थान के प्रयासों की सराहना की। इसके साथ ही अरुणा लाडवा ने यूपी के कई मंत्रियों से भी मुलाकात की। इस दौरान बनारस जोन के मीडिया को-ऑर्डिनेटर बीके विपिन समेत कई लोग उपस्थित थे।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में भारतीय संस्कृति के अनुरूप बदलाव अत्यावश्यक

युवाओं के स्नेह-मिलन कार्यक्रम में डॉ. शार्दुल जाधव के विचार

शिव आमंत्रण पुणे। ब्रह्माकुमारीज संस्था के युवा प्रभाग द्वारा आयोजित युवा उमंग...तरंग...अंतरंग नामक एक दिवसीय स्नेह-मिलन का 200 से अधिक युवाओं ने लाभ लिया। पिसोली में नवनिर्मित जगदंबा भवन में आयोजित इस सम्मेलन का उद्घाटन अतिथि डॉ. सुधाकर जाधव, सोशल ट्रस्ट के अध्यक्ष शार्दुल जाधव और, एवं ने किया।

युवाओं को मार्गदर्शन करते हुए डॉ. जाधव ने बताया वर्तमान शिक्षा प्रणाली में भारतीय संस्कृति के अनुरूप बदलाव लाना अत्यावश्यक है। मिटकॉन के मुख्य प्रबंधक गणेश खामगल ने कौशल शिक्षा पर जोर दिया। जगदंबा भवन की निदेशिका बीके सुनंदा ने युवाओं को जीवन में आध्यात्मिक मूल्यों के महत्त्व को उजागर किया। बीके दशरथ ने खुद के युवा जीवन प्रेरणादायी अनुभव सुनाकर युवाओं को प्रोत्साहित किया। सम्मान दो तो सम्मान मिलेगा इस विषय पर लघु नाटिका भी आयोजित की गई। अंत में प्रश्नोत्तर सत्र हुआ, जिसमें बीके सुनंदा ने युवाओं के सवालों का समाधान किया। सम्मिलित युवाओं को सम्मेलन-सहभाग प्रमाणपत्र दिए गए।

सहानुभूति और प्रेम मानव के महान गुण हैं: जेलर बीके सिंह

अंगूरीबाग सेवाकेन्द्र के ईश्वरीय सेवाओं के हुए 17 वर्ष पूरे

शिव आमंत्रण फर्रुखाबाद/यूपी। जटवारा जदीद अंगूरीबाग सेवाकेन्द्र के ईश्वरीय सेवाओं के 17 वर्ष पूर्ण होने पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें सेन्ट्रल जेल के जेलर बीके सिंह ने कहा कि सहानुभूति और प्रेम मानव का महान गुण है। इसी के आधार पर भारत को स्वच्छ एवं स्वर्णिम बनाने में सभी को अपना सहयोग देना चाहिए। गणमान्य व्यक्तियों ने सेवाकेन्द्र प्रभारी बीके शोभा का सम्मान किया। इटावा से पधारीं बीके ज्योति ने कहा समाज में आज लोगों के विचार विकृत होते जा रहे हैं।

ओम शांति क्लिनिक से लोग जुड़ेंगे तो राजयोग के माध्यम से उन्हें शारीरिक एवं मानसिक रोगों से निजात मिलेगी और जन्मों तक मनुष्य स्वस्थ एवं गुणवान बनेगा। बीके सरोजा ने कहा ज्ञान, योग, धारणा और सेवा यह चार बातें जीवन में अच्छी तरह से धारण की तो जीवनमुक्ति मिलती है। कन्हैयालाल जैन, प्रधानाचार्य वीरेंद्र कुमार, संजय गर्ग आदि लोगों ने भी अपने विचार व्यक्त किए। संचालन बीके मगन ने किया।

शिवाशीष

राजगढ़ सेवाकेंद की 37वीं वर्षगांठ पर बीके हेमलता के विचार...

दूसरों को सम्मान देने से ही खुद को सम्मान मिलता है

शिव आमंत्रण राजगढ़। मध्य प्रदेश के राजगढ़ सेवाकेंद्र द्वारा आध्यात्मिक ज्ञानोदय द्वारा स्वर्णिम संसार थीम के अंतर्गत सेवाकेंद्र की 37वी वर्षगांठ पर विशेष रूप से शिवाशीष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इंदौर जोन की मुख्य क्षेत्रीय समन्वयक बीके हेमलता ने कहा कि हमें सम्मान की इच्छा ना रखते हुए दूसरों को सम्मान देना है। क्योंकि सम्मान देने से ही मिलता है। हमें सब के साथ मीठा बोलना है, सबको सुख देना है। साथ ही पापों से मुक्त होने के लिए देह के सब धर्मों को त्याग एक शिवपिता को याद करना है। यही बात गीता में भी बताई गई है।

ये रहे उपस्थित: उद्घाटन इंदौर जोन की मुख्य क्षेत्रीय समन्वयक बीके हेमलता, ट्रांसपोर्ट विंग की जोनल को-ऑर्डिनेटर बीके अनीता, राजगढ़ सेवाकेंद्र प्रभारी बीके मधु, कांग्रेस कमेटी के महामंत्री राशिद जमील, धाकड़ समाज की राष्ट्रीय अध्यक्ष मोना सुस्तानी, कांग्रेस के पूर्व जिलाध्यक्ष रामचंद्र डांगी, राजेश्वर कान्वेंट स्कूल के प्रिंसिपल जॉर्ज थोप्पिल, जेल अधीक्षक विकास सिंह, कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अधिकारी अखिलेश श्रीवास्तव तथा नगर के वरिष्ठ नागरिकों ने दीप जलाकर किया। कार्यक्रम में कृष्ण-अर्जुन गीता संवाद नृत्य नाटिका प्रस्तुत की गई। बीके अनीता ने राजयोग मेडिटेशन कमेंट्री द्वारा गहन शांति की अनुभूति कराई। बीके मधु ने सभी का स्वागत किया।

नई राहें

होली के सप्त रंगों में छुपा है जीवन का सार

बीके पुष्पेन्द्र

हम हर वर्ष बड़े उत्साह और उल्लास के साथ होलिका दहन करते हैं। फिर होलिका की राख और रंगों से होली उत्सव मनाते हैं। सप्त रंगों के रंग में सराबोर होकर मस्ती में झूमते हैं। आइए... इस बार हम होलिका में दहन के साथ मन के कलुषित विचारों, दूषित और बेकार के व्यर्थ विचारों को भी सदा-सदा के लिए तिलांजली देते हैं।

मन-मस्तिष्क की इन कुंठाओं को होलिका दहन की अग्नि में भेंट चढ़ाते हैं। इस हवन कुंड में अपने लकड़ी जैसे कठोर हो चुके संस्कारों को स्वाहा करते हैं। ताकि जिन कुंठित और कुत्सित विचारों के आभामंडल से मन मयूर वर्षों से कैदखाने में बंद है वह आजाद होकर नव जीवन का आनंद ले सके। नकारात्मक विचारों का बोझा ढोते-ढोते हमारे मन से जो द्वेष-ईर्ष्या के विचारों की सड़ांध आने लगी है उसे इस होली के रंग से धोते हैं।

होली के सात रंग जीवन में सात गुण और सात विशेषताओं को धारण करने का संदेश देते हैं। इन सात रंगों में जीवन का सार समाया हुआ है। इसी कारण सप्त रंगों का विशेष महत्व है। प्रत्येक रंग जीवन को समृद्धशाली बनाने की ओर प्रेरित करता है। इन सात रंगों में ही खुशहाल जीवन की राह छिपी हुई है। बैंगनी रंग जहां हमें जीवन को आनंद के साथ जीना सिखाता है, वहीं गहरा नीला रंग संदेश देता है कि जीवन ज्ञान अर्जन करने की एक पाठशाला और अनंत यात्रा है। जब तक जीवन है कुछ न कुछ सीखते रहें। कुछ न कुछ नया करते रहें। नीला रंग शांति का प्रतीक है। जो सिखाता है कि शांति इस जग का सार है। शांति ही जीवन का आधार है। दुनिया के सभी धर्मों में भी शांति की बात कही गई है। क्योंकि शांति मानव का स्वभाव और आत्मा का मूल गुण है। हम खुद भी शांति के साथ जीवन व्यतीत करें और दूसरों को भी करने दें। हरा रंग प्रेम का संदेश देता है। कहते हैं प्रेम सुदृढ़ समाज और विश्व एकता का आधार है। प्रेम ही परिवार और समाज की आधारशिला है। संबंधों की रीढ़ है। प्रेम करो परमात्मा से, प्रेम ही जग का सार है। इसलिए सदा स्वयं से और अपने परमपिता से प्रेम करें। साथ ही प्रभु प्रेम का आत्मा को ऐसा रंग लग जाए कि फिर कोई भी उसे धो नहीं सके। पीला रंग सुख का प्रतीक है। मनुष्य जीवन का उद्देश्य होता है कि उसका जीवन सुख-शांतिमय हो। जीवन में आनंद हो। सुख तो हर किसी की पहली अभिलाषा होती है। नारंगी रंग पवित्रता का प्रतीक है। पवित्रता हमारे मन और विचारों के साथ कर्मों में भी हो। सदा सभी के प्रति पवित्र और शुद्ध विचार हों। सबके प्रति शुभभावना-शुभकामना हो। बिना पवित्र बने, पवित्र दुनिया का मालिक नहीं बन सकते हैं। लाल रंग शक्ति का प्रतीक है। ये हमें सिखाता है कि जीवन में सुख-शांति के साथ शक्ति का सामंजस्य होना जरूरी है। बिना शक्ति के जीवन अपूण है, अधूरा है। इस तरह होली के ये सात रंग हमें जीवन में आनंद, सुख-शांति, प्रेम और शक्ति के साथ जीना सिखाते हैं। आइए इस होली के उत्सव को यादगार बनाते हैं और इन सात रंगों की तरह अपने जीवन को भी इनसे परिपूर्ण बनाते हैं। इस होली के पावन पर्व पर हर आत्मा को रुहानी प्रेम, ज्ञान और शक्ति के रंगों से रंगकर सुख और समरसता वाला एक नया संसार बनाएं।

होली अर्थात पवित्र...

वहीं होली का आध्यात्मिक रहस्य होली अर्थात् 'हो', 'ली'। मैं आत्मा प्रभु पिता की होली। होली अर्थात् पवित्र। वास्तव में आत्मा का मूल स्वरूप पवित्र है। जन्ममरण के चक्कर में आते-आते आत्मा पर विकारों की इतनी जंग लग गई है कि वह अपना मूल स्वरूप ही खो बैठी है। जो आत्मा पवित्रता का स्वरूप थी आज वह काजल की कोठरी के समान बन गई है। ऐसे में सवाल उठता है कि अब इसे फिर से कौन दूध से नहाएगा? कौन आत्मा की जंक को साफ कर फिर से उसे मूल पावन स्वरूप में लौटाएगा? कैसे उसकी पवित्रता परिलक्षित होगी? इन सभी सवालों का जवाब खुद परमात्मा इस धरा पर आकर देते हैं। वह मनुष्य आत्मा की 8 4 जन्मों की कहानी को बताकर सृष्टि के आदि-मध्य और अंत के राज की गुत्थी सुलझाते हैं। वर्तमान में ये वही स्वर्णिम काल और नई धरा के सृजन की बेला है। परमात्मा मनुष्य आत्माओं को सहज राजयोग की शिक्षा देकर आत्मा की मलीनता को मिटाने की विधि सिखा रहे हैं। परमात्मा आह्वान कर रहे हैं मेरे बच्चों तुम एक जन्म मेरे बताए मार्ग पर चलो तो मैं तुम्हें जन्मो-जनम के लिए दुःखों से छुड़ाकर स्वर्ग की बादशाही दूंगा। याद रखो अभी नहीं तो कभी नहीं। ये वक्त ही दुनिया के बदलाव का संधिकाल संगमयुग है।

लेखक शिव आमंत्रण के संयुक्त संपादक हैं

गयाना के प्रधानमंत्री से मुलाकात करते इंडियन हाई कमीशनर वी. महालिंगम

गयाना के प्रधानमंत्री ने की राजयोग की गहन अनुभूति

शिव आमंत्रण » जॉर्जटाउन/गयाना। गयाना के प्रधानमंत्री मोजेज वीरासामी नागामुतु ने राजधानी जॉर्जटाउन में स्थित ब्रह्माकुमारीज़ के राजयोगा सेन्टर पर अपनी पत्नी सहित शिरकत की और गहन शान्ति व पवित्रता की अनुभूति की। इस मौके पर वरिष्ठ राजयोगा टीचर बीके ऊषा ने उन्हें संस्थान की गतिविधियों के बारे में बताया। वहीं गयाना में की जा रही ईश्वरीय सेवाओं से भी अवगत कराते हुए उन्हें ईश्वरीय सौगात भेंट की। इस अवसर पर कई वीआईपी गणमान्य व्यक्तियों समेत इंडियन हाई कमीशनर वी. महालिंगम भी उपस्थित थे।

सितम्बर 2018 में राखी बांधने के लिए ब्रह्माकुमारी बहने प्रधानमंत्री मोजेज वीरासामी नागामुतु के निवास पर गए थे उस वक्त उन्होंने जॉर्ज टाऊन सेवाकेंद्र पर आने का वादा किया था। वह उन्होंने पूरा किया और राजयोग सेवाकेंद्र पर भोजन भी किया।

गयाना के प्रधानमंत्री को ईश्वरीय सौगात प्रदान करतीं बीके ऊषा।

आदित्य बिड़ला केमिकल्स में ब्रह्माकुमारीज़ की कार्यशाला

शिव आमंत्रण » समरॉन्ग/थाईलैंड। थाईलैंड के समरॉन्ग स्थित आदित्य बिड़ला केमिकल्स लिमिटेड में ''एंगेजिंग हट्र्स एंड माइंड्स'' विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें कनाडा से बीके जुडी जॉनसन ने आध्यात्म पर अपने विचार व्यक्त किए। विशेष सीईओ और अधिकारियों के लिए आयोजित इस कार्यशाला में लेजर, प्रेजेंटेशन, एक्सरसाइज, मेडिटेशन सेशन जैसी कई गतिविधियां भी शामिल थीं। बीके जुडी ने बताया कि कैसे वर्तमान समय कॉर्पोरेशन में आईक्यू और ईक्यू लेवल का स्तर बहुत ज्यादा होने से इसका एसक्यू (आध्यात्मिक भाव) पर गहरा असर हो रहा है। साथ ही ब्रह्माकुमारीज़ का संक्षिप्त परिचय दिया और दुनिया में शांति की महत्ता पर अपने विचार रखे।

मॉस्को स्थित लाइट हाउस में द पॉज ऑफ पीस पर रिट्रीट

शिव आमंत्रण » मॉस्को/रशिया। द लाइट हाउस ऑफ द वर्ल्ड में 'द पॉज ऑफ पीस' विषय पर विशेष रिट्रीट का आयोजन हुआ। इसमें मॉस्को में ब्रह्माकुमारीज़ की डायरेक्टर बीके सुधा ने सेंटर से जुड़े बीके सदस्यों को जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में मौन की शक्ति और शांति के महत्व पर चर्चा करते हुए आत्म-सशक्तिकरण के लिए प्रतिदिन राजयोग अभ्यास करने की अपील की।

बीके अमीरचंद ने विदेश में दिया राजयोग का संदेश

शिव आमंत्रण » कुआलालंपुर/मलेशिया। पंजाब जोन के निदेशक एवं समाज सेवा प्रभाग के उपाध्यक्ष बीके अमीरचंद विदेश दौरे पर मलेशिया पहुंचे। एशिया रिट्रीट सेंटर पर स्थानीय बीके मेम्बर्स ने उनका भव्य स्वागत किया। उनके पहुंचने पर रिट्रीट सेन्टर पर कई कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। जोहोर बाहरु में बिशप बरनार्ड पॉल से उनकी मुलाकात हुई जहां बीके अमीरचंद ने उन्हें ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए विश्वभर में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा की जा रही सेवाओं की जानकारी दी। मुख्यालय माउण्ट आबू में स्थित पांडव भवन में बने चारधाम का प्रतिरूप एशिया रिट्रीट सेन्टर में बहुत ही खूबसूरत अंदाज में बनाया गया था। वहां सभी सदस्यों ने संगठित रूप से राजयोग ध्यान किया। इस अवसर पर बीके अमीरचंद ने बाबा की विशेषताओं का वर्णन करते हुए उनके समान जीवन बनाने की बात कही। इसके पश्चात कुआलालंपुर के बाहरी इलाके में स्थित उपनगर बंगसर में ब्रह्माकुमारीज़ के हारमनी हाउस में 'अ विजनरी लीडरशिप' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में सशक्त लेखक शहरीन कमालुद्दीन ने बतौर मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की। इसमें रावांग में नए भवन 'सुख धाम' का उद्घाटन बीके अमीरचंद और मलेशिया की निदेशिका बीके मीरा द्वारा किया गया।

सार समाचार

हांगकांग में दादी जानकी का भव्य स्वागत

शिव आमंत्रण » हांगकांग। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी के नए वर्ष में हांगकांग पहुंचने पर एयरपोर्ट पर संस्था के विदेशी सदस्यों ने भव्य स्वागत किया। एयरपोर्ट पर मौजूद प्रत्येक सदस्य ने दादी को गुलाब देकर उनका स्वागत किया। इसका बाद सर्विस सेन्टर पहुंचने पर भारतीय संस्कृति के अंदाज में तिलक लगाकर दादीजी का अभिवादन किया गया। इस मौके पर ब्रह्माकुमारीज़ में जापान और फिलिपीन्स की निदेशिका बीके रजनी, चाइना की वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके सपना, मलेशिया की निदेशिका बीके मीरा समेत बड़ी संख्या में स्थानीय रहिवासी मुख्य रूप से शामिल हुए।

बाली में बीके टीचर्स के लिए रिट्रीट आयोजित

शिव आमंत्रण » बाली। कुछ क्षणों के लिए अपने आप को स्थिर कर, अपने जीवन की गतिविधियों का निरीक्षण करने शांत रह, दूसरों के प्रभाव में आए बिना, स्वेच्छा अनुसार कदम बढ़ाने एवं राजयोग द्वारा आंतरिक शक्तियों को उजागर करने के लिए विशेष बीके टीचर्स के लिए इंडोनेशिया के बाली स्थित बेद्गुल में रिट्रीट का आयोजन किया गया। रिट्रीट में इंडोनेशिया में ब्रह्माकुमारीज़ की नेशनल कोऑर्डिनेटर बीके जानकी, मुख्यालय माउंट आबू के ज्ञान सरोवर से आई वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके मंजू, बीके फ्रैंक द्वारा सेशन्स लिए गए।

दुख देने वाली बातों को भुला दें: बीके जानकी

शिव आमंत्रण » बाली। इंडोनेशिया में बाली के देनपसार स्थित सेकेंडरी टेक्निकल स्कूल में हार्मनी इन रिलेशनशिप विषय के तहत विद्यार्थियों को संबोधित करने के लिए विशेष रूप से आमंत्रित किया गया। इंडोनेशिया में ब्रह्माकुमारीज की निदेशिका बीके जानकी ने अपने वक्तव्य में कहा रिश्तों में सामंजस्यता लाने के लिए जो बात हमें दुखी करे, ऐसे किसी भी बात को हमें पकड़ कर नहीं रखना चाहिए उसे भुलाकर सुखदायी माहौल बनाने में ही अपनी शक्ति लगानी चाहिए। इस मौके पर बीके जानकी ने स्कूल के हैडमास्टर आई केतुट अर्का को ईश्वरीय साहित्य भेट कर सेवाकेंद्र पर आने का निमंत्रण भी दिया।

भारतीय दूतावास में कराया योग

शिव आमंत्रण » शंघाई। चीन के शंघाई में भारत के वाणिज्य दूतावास ने हाल ही में वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके सपना को 'रिश्तों में सामंजस्यता' विषय के अंतर्गत आयोजित सेमिनार आमंत्रित किया। बीके सपना ने इंडियन एसोसिएशन के अधिकारियों को संबंधित विषय पर प्रकाश डाला और राजयोग मेडिटेशन के माध्यम से सभी को शांति की गहन अनुभूति कराई।

Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2018-20, Licensed to Post without pre-payment No. RJ/WR/WPP/18/2018
Posted at Shantivan P.O. Dt. 18 to 20 of Each Month

ब्रह्माकुमारीज़

कीनिया में पोज फॉर पीस प्रोजेक्ट शुरू, हजारों ो मिला आध्यात्म का संदेश

47 देशों में चलाएंगे पोज फॉर पीस प्रोजेक्ट

शिव आमंत्रण » नैरोबी/कीनिया। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा पोज फॉर पीस प्रोजेक्ट मुहिम की शुरुआत की गई। जिसकी सफलता के बाद अब पूर्वी अफ्रीका के 47 देशों में इस मुहिम को चलाया जाएगा। इसकी शुरुआत मेडागास्कर में इस वर्ष की जा चुकी है जहां साउथ अफ्रीका में ब्रह्माकुमारीज़ की रीजनल कॉर्डिनेटर बीके वेदांती तथा सीनियर राजयोगा टीचर बीके दीप्ति ने मेडागास्कर में इस अभियान की शुरुआत की। मेडागास्कर में कुल 6 प्रांत हैं जहां इनके 22 मुख्य शहरों में विशेष राजयोगा मेडिटेशन के कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। फिलहाल इस परियोजना को मेडागास्कर की राजधानी अन्टाननरीवो के कई कस्बों और शहरों में चलाया जा चुका है। जहां हजारों लोगों को व्यक्तिगत परिवर्तन की दिशा में एक नई उम्मीद मिली है। कई स्कूलों, कॉलेजों एवं फैक्ट्रियों में इस प्रोजेक्ट को चलाया गया, जहां बच्चों से लेकर फैक्ट्री में काम करने वाले कर्मचारियों को दिनभर की दिनचर्या में राजयोग का प्रयोग करने के फायदे बताए गए। इसके साथ ही मेडागास्कर के तीसरे सबसे बड़े शहर एंटीसिराबे में स्थित ब्रह्माकुमारीज़ के सब सेन्टर में भी बीके दीप्ति ने वहां मौजूद लोगों को परियोजना की जानकारी दी।

● प्रकाशक एवं मुद्रकः ब्र.कु. करुणा द्वारा प्रकाशित एवं डी.बी. सॉल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित ● सलाहकार संपादकः प्रो. कमल दीक्षित ● संपादकः ब्र.कु. कोमल ● संयुक्त संपादकः ब्र.कु. पुष्पेन्द्र ● लेआउटः अमर (नोएडा) ● RNI No.: RJHIN/2013/53539